वैज्ञानिक चिंतन की आवाज़

वर्ष 1, अंक 6

तर्कशील पथ

नवंबर - 2014
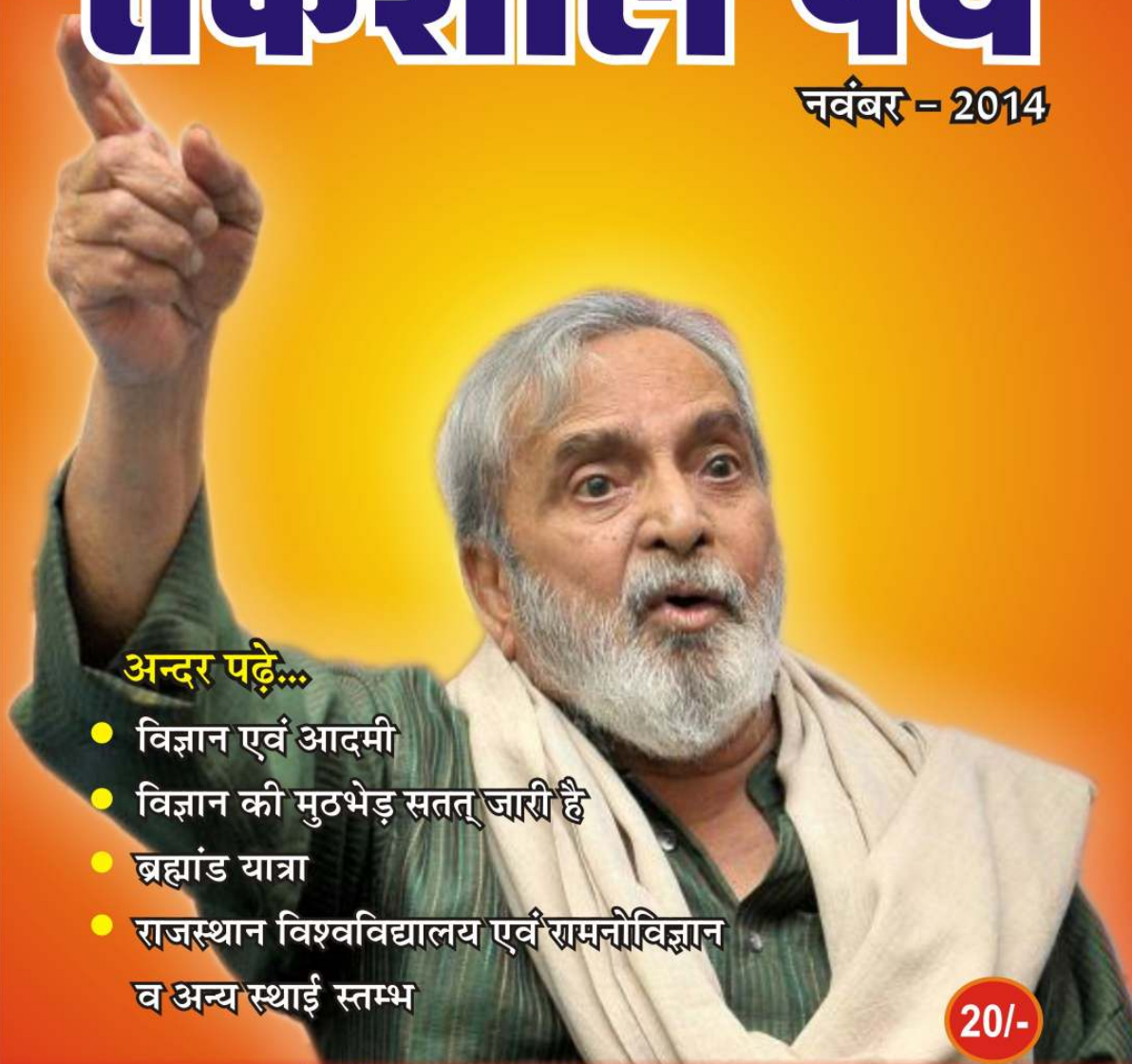
अन्दर पढ़े...

- विज्ञान एवं आदमी
- विज्ञान की मुठभेड़ सतत् जारी है
- ब्रह्मांड यात्रा
- राजस्थान विश्वविद्यालय एवं रामनोविज्ञान

व अन्य स्थाई स्तम्भ

20/-

अज्ञानता पशुवत है और ज्ञान एक विशेष मानवी अधिकार ...लाला हरदयाल

Reg. No. HARHIN05683/07/1/2013-TC

संपादक:

आर.पी.गांधी - 093154-46140

संपादन सहयोग:-

बलवन्त सिंह - 094163-24802

गुरमीत अम्बाला-094160-36203

अनुपम राजपुरा: 094683-89373

बलबीर चन्द लोंगोवाल: 098153-17028

हेम राज स्टेनो: 098769-53561

पत्रिका शुल्क:-

वार्षिक: 200/- रू.

विदेश: वार्षिक: 25 यू.एस.डॉलर

पत्रिका वितरण:

गुरमीत अम्बाला

e-mail:tarksheeleditor@gmail.com

रचनाएं, पत्र व्यवहार व शुल्क भेजने के लिए पता:

बलवन्त सिंह (प्रा.)

म.नं.1062, आदर्श नगर, नज़दीक पूजा सीनियर सैकण्डरी स्कूल, पिपली।

जिला कुरूक्षेत्र-136131 (हरियाणा)

e-mail:tarksheeleditor@gmail.com

तर्कशील सोसायटी की गतिविधियों से जुड़ने के लिए

www.facebook.com/tarksheelindia

पेज को लाईक करें

पत्रिका के प्रमुख लेखों को निम्न ब्लॉग पर भी पढ़ा जा सकता है

http://tarksheelblog.wordpress.com

पत्रिका को पढ़ने के लिए लॉग आन करें

www.tarksheel.org

टाईप सैटिंग और डिज़ाइनिंग :

दोआबा कम्यूनिकेशंस

मोबाईल : 92530 64969

E-mail: doabacommunications@gmail.com

संकेतिका

विशेष लेख

मुख्य पृष्ठ की तस्वीर : यु. आर. आन्नतमुर्ती

कन्नड़ भाषा के प्रमुख लेखक ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त, तर्कशील चिंतक, नैशनल बुक ट्रस्ट आफ इंडिया के चेयरमैन 1993 वर्ष में साहित्य अकादमी के अध्यक्ष जे. एन. यू के विजीटर प्रोफैसर, फिल्म व टैलीविजन इंस्टीटयुट आफ इंडिया के चेयरमैंन और सब से बढ़ कर साम्प्रदायिक ताकतों में खौफ पैदा करने वाले यु. आर. आन्नतमुर्ती इस जहां को अलविदा कर गए। कलम के इस नायक को सलाम।।

तर्कशील पथ पत्रिका हेतु शुल्क स्टेट बैंक ऑफ इडिया, शाखा मॉडल टाऊन, अम्बाला शहर (हरियाणा) में रैशनलिस्ट सोसायटी हरियाणा के नाम से खाता सं. 3191855465 में जमा करा सकते है। शुल्क जमा कराते समय 1000 रूपये तक 50 रूपये अतिरिक्त जमा करवायें। और अपना पता मोबाईल 9416336203 पर एस.एम.एस करें।

हिमाचल प्रदेश हाईकोर्ट का स्वागत योग्य फैसला

1 सितंबर, 2014 को हिमाचल प्रदेश के माननीय उच्च न्यायालय ने पशु-बलि को लेकर एक स्वागत योग्य फैसला सुनाया है। पशु बलि एक सदियों पुरानी परम्परा है और कमोबेश सभी सभ्यताओं में कम या ज्यादा प्रचलित रही है। मानव सभ्यता के विकास के साथ ही इस परम्परा का उदय होना शुरू हो गया था, परन्तु फिर भी विभिन्न धर्मो में धार्मिक कृत्य के नाम पर बे-ज़ुबान पशुओं की बलि देना अभी भी जारी है। कभी ईष्टदेव को प्रसन्न करने हेतु इन्सान की बलि चढ़ाई जाती थी जो कि अब समाप्त है, परन्तु तांत्रिको द्वारा अबोध बच्चों की बलि देने के दुखद समाचार अभी भी आते रहते हैं। महिलाओं को डायन घोषित कर मार देने के दुखद समाचार भी भारत में प्रायः सुनाई देते रहते हैं। सती प्रथा जैसे कुत्सित प्रयास लगभग अब समाप्त हैं परन्तु सार्वजनिक स्थलों पर पशु-बलि के सामूहिक उपक्रम क्रूर तरीके से अभी भी जारी हैं

पुरातन परम्पराओं के नाम पर अभी भी बहुत कुछ व्यर्थ प्रचलन में है। बहुत सारी सभ्यताओं नें नर बलि व पशु बलि के रूप में प्रतीक स्वरूप नारियल चढ़ा देने के अमल शुरू कर रखे हैं । पशु बलि का दुखद पहलू यह है कि बहुत सारे धार्मिक जन भले ही मांसाहार नहीं खाते, परन्तु धार्मिकता के एक छुपे डर से बलि जैसी कुप्रथा करने के लिये विवश हैं। देवी देवताओं व भगवान को खुश करने के लिये बलि देना किसी भी तरीके से उचित नहीं ठहराया जा सकता। जब कोई परम्परा कुरीति बन जाये, उसे छोड़ देना ही बेहतर है।

पशु बलि को शाकाहार व मांसाहार से जोड़कर भी देखना उचित नहीं है, क्योंकि खानपान भौगोलिक परिस्थितियों की देन है। दुनिया के सभी हिस्सों में मांसाहार प्रचलन में है जो कि एक व्यक्तिगत पसंद का विषय है। पूरे विश्व में पशुओं को काटने के कारखाने भी खुले हैं जिसमें लाखों की संख्या में पशुओं को मारा जाता है जिसे छुपाकर रखा जाता है, परन्तु धार्मिक मान्यता के तहत बलि देना व उसे सार्वजनिक रूप से क्रूर तरीके से अंजाम देना खौफ पैदा करता है।

माननीय उच्च न्यायालय का फैसला जमीन स्तर पर कितना कारगर रहेगा इसे देखना होगा। इस संबंध में डाली गई पुनर्विचार याचिका को भी उच्च न्यायालय ने अस्वीकार कर दिया है। इसे आगे सर्वोच्च न्यायालय तक भी ले जाया गया है जहां माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने उच्च न्यायालय के आदेशों पर रोक लगाने से इनकार कर दिया है।

सामाजिक व धार्मिक संगठनों की इस संबंध में अगुआई बेशक कारगर हो सकती है, जैसे कि राजस्थान में ऊँट को राज्य पशु घोषित किए जाने पर 150 वर्ष पुरानी ईद के मौके पर दी जाने वाली कुर्बानी की परम्परा को बंद करने का फैसला किया गया है। इसी प्रकार हिमाचल वक्फ बोर्ड के अध्यक्ष ख्वाजा ख्लीलउल्लाह ने मुस्लिम समाज से माननीय उच्च न्यायालय के आदेशों का सम्मान करने की अपील की है। नवम्बर, 2014 में नेपाल में देवी को प्रसन्न करने के लिए एक साथ लाखों की संख्या में पशुओं की बलि देने की एक परम्परा को निभाने की तैयारी चल रही है, जिसमें भारत से भी लाखों लोग पहुंच कर इस सामूहिक बलि में शामिल होते हैं और निरीह पशुओं को क्रूर तरीके से मारते हैं। धार्मिक व सामाजिक संगठनों को इस संबंध में भी आगे आकर अपील करनी चाहिए और इस खूनी मंजर को वैकल्पिक तरीके से मनाने की योजना बनाई जानी चाहिये।

विज्ञान एवं आम आदमी

-सुरजीत सिंह ढिल्लों
0175-3046541

जीवन को सार्थक बनाने के यत्न करते हुए विज्ञान भांति-भांति की खोजें खोज रहा है। विज्ञान द्वारा खोजे गए ज्ञान का तथा नए विचारों का आम आदमी के मन में समा सकना इतना आसान नहीं, क्योंकि मानव के मन में पहले से गढ़े हुए संस्कार नए विचारों को स्वीकार करने नहीं दे रहे।

मन स्वीकार करे अथवा न करे परन्तु विज्ञान नई से नई खोज करता रहेगा। हकीकत जानने का एकमात्र साधन विज्ञान है। विज्ञान के आविष्कार के बगैर न तो हम हवा में उड़ सकते हैं, न ही अंतरिक्ष की यात्रा करके मंगल ग्रह तक पहुंच सकते थे।

विज्ञान, जो है केवल उसी की हकीकत से पर्दा उठाने का प्रयत्न कर रहा है। विज्ञान जो आविष्कार कर लेता है, उसका बार-बार जायजा लेता रहता है तथा जहां पर भी लगाए गए अनुमान में कोई अतिश्योक्ति दिखाई देती है, उसे दूर करता रहता है।

जो कुछ भी हम ब्रह्मांड के बारे में एवं जीवन के इतिहास के बारे में जानते हैं, उसका आम व्यक्ति के अनुभव करने योग्य सारांश कुछ इस प्रकार से है।

जिस ब्रह्मांड का भाग हमारी पृथ्वी एवं सूर्य है, उसकी आयु 14 अरब वर्ष है और उसका 28 अरब प्रकाश वर्ष के व्यास वाला फैलाव है। ब्रह्मांड की विशालता लगभग 100 प्रकार के एटमों की बनी हुई है, जो कि प्राकृतिक नियमों का पालन करते हुए परस्पर टकराते एवं भिन्न-भिन्न पदार्थों में परिवर्तित होते रहते हैं। इनके टकराने से उत्पन्न हुए तारे टिमटिमाने लगते हैं तथा अपना जीवन भोग कर भस्म होते रहते हैं। इनके मलबे में से नए तारे जन्म लेकर चमकने लगते हैं। हमारा सूर्य भी द्वितीय पीढ़ी का तारा है। तारों के अतिरिक्त भी बहुत कुछ ऐसा है, जो हमारी समझ से परे है। सूर्य ब्रह्मांड के खरबों तारों में से एक तारा है। पृथ्वी से नजदीक होने के कारण यह आकार में बड़ा लगता है। सूर्य से पृथ्वी तक पहुंचने के लिए प्रकाश को 8 मिनट का समय लगता है। सूर्य की आयु पांच अरब वर्ष के लगभग है तथा पृथ्वी की आयु इससे थोड़ा कम है।

पृथ्वी पर आपस में टकराते परमाणुओं के अंदर उत्पन्न हुई विशेष तरतीब में से लगभग साढ़े तीन अरब वर्ष पूर्व जीवन की उत्पत्ति के लिए अति सरल वातावरण निर्मित हुआ था। इस प्रकार कणों के अंदर उपजी तरतीब फिर से बिखर जाने के बजाए अपना प्रतिरूप उत्पन्न करने योग्य होने के कारण स्वयं को बनाए रखती रही, वैसे ही जिस प्रकार आज डीएनए कर रहा है। प्रत्येक जीवन में डीएनए समाया हुआ है तथा जिसके कारण हर प्रकार का जीवन आगे से आगे चलता रहता है। डीएनए स्वयं में तो निर्जीव है, परन्तु इसके बगैर किसी प्रकार का जीवन संभव नहीं है।

जीवन के इतिहास के प्रथम दो अरब वर्षो के दौरान केवल कीटाणु समस्त विश्व पर हावी रहे थे। फिर कीटाणुओं द्वारा उपजाई गई आक्सीजन जब वायुमंडल में प्रवेश करने लग गई, तब और भी उलझी बनावट वाले जीवन विकसित होते रहे, जैसे कृमि, मछलियां, मेंढक, छिपकलियां, पक्षी, पशु एवं अन्य पौधे और वृक्ष। विकसित हुए पशुओं में बंदर भी शामिल थे। इनमें से एक पूंछ रहित बंदर आज से 40 लाख वर्ष पूर्व दो टांगों पर चलने लग पड़ा था। समय के साथ इस वनमानुष के हाथ पत्थर घड़ने लग गए थे। उस समय हाथों की अपनाई कारीगरी का आगे परिणाम रेलों-कारों, वायुयान में

एवं अन्य भिन्न-भिन्न प्रकार की कम्पयूटर पर आधारित मशीनों के रूप में निकला। लाखों वर्षों के उपरांत कारीगरी के शिखर पर पहुंच कर भी मनुष्य बने बनमानुष ने लड़ना-भिड़ना नहीं त्यागा, बल्कि अपनी कारीगरी का उपयोग अब विनाशकारी अस्त्र-शस्त्र बनाने में लग गया है।

मनुष्य बने बनमानुष ने आज से 40 हजार वर्ष पूर्व बातचीत करनी आरंभ कर दी थी तथा 10 हजार वर्ष पूर्व वह काश्तकार बन गया था। यह दोनों प्रचलन इस की संस्कृति के आधार बने, जो कि समझ-बूझ से कहीं अधिक रीतियों, रस्मों-रिवाजों एवं मर्यादाओं पर निर्भर है।

जीवों के विकास द्वारा अस्तित्व में आए होने को डार्विन ने वर्ष 1859 में प्रमाणों के द्वारा सिद्ध किया तथा यह भी स्पष्ट किया कि जीव क्यों परिवर्तित होते रहे हैं। जीवन के विकास के पीछे जीवन गुप्त रहस्य न रहा, यह साधारण प्राकृतिक घटना लगने लग गया। यह भी स्पष्ट हो गया कि हम संसार में क्यों और कैसे आए।

डार्विन के विचारों की प्रौढ़ता 100 वर्षों के उपरांत डी.एन.ए. के प्रति एकत्र हुई जानकारी ने भी की। साढ़े तीन अरब वर्षों के इतिहास के दौरान जीवन के विकास के कौन-कौन से मोड़ कब-कब मुड़े, इसका ज्ञान भी डीएनए द्वारा हुआ। हमारे अंदर का प्रत्येक कण समय के साथ बूढ़ा होता रहता है। हमारे शरीर की प्रत्येक कोशिका के केंद्र में मौजूद डीएनए के सिर पर जीवन चल रहा है। हमारा शरीर डीएनए के नेतृत्व में बना हुआ है तथा इसकी अगुवाई के अधीन हमारी इच्छाएं, मोह, क्रोध एवं बुद्धिमता अंकुरित होते हुए हमारे रहन-सहन को प्रभावित करते हैं। भिन्न-भिन्न प्रकार के डर भी जिन्होंने हमारे जीवन को नर्क बना रखा है, डीएनए की ही देन हैं।

जीवों के शरीर तो बूढ़े होकर खत्म होते रहे हैं, परन्तु डीएनए की ताजगी साढ़े तीन अरब वर्षों से वैसे की वैसी ही बनी आ रही है। एक शरीर के समाप्त होने से पूर्व ही यह नए शरीर को जन्म देकर उसके अंदर विराजमान हो जाता है, परन्तु इसके अंदर की तरतीब में जब किसी भी कारणवश थोड़ा सा परिवर्तन आ जाता है, चाहे कितना भी मामूली परिवर्तन क्यों न हो, इसके साथ नई जीव प्रजाति की नींव रखी जाती है।

विज्ञान ने बहुत कुछ कर दिखाया है, परन्तु इसका लाभ उठा रहे आम व्यक्ति को विज्ञान की देन की समझ नहीं आ रही। साधारण व्यक्ति की सोच आज भी बीते युगों वाली सोच है तथा आज भी वह बनमानुष की भांति घबराया हुआ अस्तित्व रहित शक्तियों से भयभीत रहता है।

विज्ञान द्वारा दिए सुखों का भोग करते हुए भी आम व्यक्ति विज्ञान को समझने में ढील दिखा रहा है। इसमें इसका अपना दोष तो है ही, परन्तु यहां एक बात यह भी आती है कि कोई भी इन्सान सभी कुछ स्वयं नहीं समझ सकता। कुछ बातें समझने के लिए उसे दूसरों की सहायता की आवश्यकता पड़ती है। वैज्ञानिकों का अधिकतर समय अपने आविष्कारों में ही लग जाता है। यदि एक वैज्ञानिक लोगों को अपने आविष्कारों की जानकारी देने में अपना समय व्यतीत करने लग जाए तो वह भविष्य में और आविष्कार नहीं कर सकता तथा लोगों को जानकारी देना उसका कार्य भी नहीं है। लोगों को जागृत करना प्रशासन तथा मीडिया का कार्य है, परन्तु आज प्रशासन भ्रष्टाचार एवं मीडिया विज्ञापनों में उलझा हुआ है। प्रशासनिक अधिकारियों का अधिकत ध्यान अपनी कुर्सी, मिली हुई सुख-सुविधाएं एवं अधिकारों के प्रयोग द्वारा राजनीति की खुशामद की ओर है। मीडिया का अधिकतर जोर अपनी टीआरपी एवं सर्कुलेशन बढ़ाने वाले कार्यक्रमों एवं लेखों पर है।

विज्ञान ने हमारी पृथ्वी का चेहरा-मोहरा बदल दिया है। मानव जीवन को बनमानुष से एक सामाजिक जीव तक का सफर करवाने वाला विज्ञान ही है।

-हिन्दी अनुवाद

बलवंत सिंह लैक्चरार

आस्था मूलक दर्शनों से विज्ञान की मुठभेड़ सतत् जारी है।

-सन्नी

विज्ञान क्या है? आज जो इसका स्वरूप है। वह इसने कैसे अख्तियार किया? मानव अपने भौतिक उत्पादन के लिए किए गए सामाजिक व्यवहार से इंद्रियानुगत ज्ञान प्राप्त करता है। इस इंद्रियानुगत ज्ञान की अगिनत पुनरावृतियों के बाद वह उसे सामान्यीकृत करता है और बुद्धिसंगत ज्ञान के विराट निकाय को वह विशेषीकृत करता है और ज्ञान को अलग-अलग शाखाओं में विभाजित करता है। यह विज्ञान की ओर उसका दूसरा कदम होता है। इसके बाद अलग-अलग शाखाओं में ज्ञान अपनी विषय-वस्तु के अध्ययन को व्यवहार और सिद्धांत के अंतहीन सिलसिले से आगे विकसित करता जाता है और इसी प्रक्रिया में मनुष्य का सामाजिक व्यवहार बेहद अहम् भूमिका निभाता है। सभ्यता के उन्नत शिखरों पर वह अपने मूल, यानि उत्पादक व्यवहार से कटा हुआ नजर आता है, लेकिन करीब से विश्लेषण करने पर हम पाते हैं कि आज भी ज्ञान की समस्त शाखाओं का, जिन्हें हम वाकई विज्ञान कह सकते हैं, मूल उत्पादक और सामाजिक व्यवहार ही है। यह सामाजिक व्यवहार सतत् चलता रहता है तथा विज्ञान के अग्रतर विकास की जमीन इसके आधार पर तैयार होती रहती है। वैज्ञानिक सिद्धांत और व्यवहार के सम्मिलन के जरिए नई और बेहतर तकनीकें पैदा होती है जोकि वापस आकर व्यवस्थित सामाजिक व्यवहार के जरिए और उन्नत ज्ञान पैदा करती हैं, जो शुरूआती मंजिल पर आंकड़ों और डेटा के रूप में होता है। विज्ञान लगातार विकासमान रहता है। विज्ञान का लगातार संचय होता है। विज्ञान धरती से लेकर ब्रह्मांड तक की उत्पत्ति, पत्तों के पीले होने से लेकर बिजली कौंधने तक और भी तमाम अनुभूत, प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष, प्राकृतिक घटनाओं के कारणों की तलाश करता है और इनका बखूबी जवाब भी देता है। यह सूक्ष्म से सूक्ष्म गति से लेकर विराटतम ब्रह्मांड के नियमों का सूत्रीकरण करता है। विज्ञान आज जिस रूप में है, यह तार्किक रूप इसने इतिहास के लंबे संघर्षों के बाद ही हासिल किया है।

जब से विज्ञान ने पालने से बाहर निकल कर पैरों पर चलना सीखा है, उसने भौतिकवाद को एक सही, सम्पूर्ण और तार्किक विश्वदर्शन के रूप में स्थापित किया है। प्राकृतिक विज्ञान की हर नई खोज, हर नए सिद्धांत ने विश्व की भौतिकवादी व्याख्या को और अधिक पुष्ट किया। जैसे-जैसे विज्ञान की दृष्टि अधिक से अधिक सूक्ष्तम धरातलों पर उतरती गई, वैसे-वैसे इहलोक का क्षेत्रफल बढ़ता गया और परलोक का क्षेत्रफल घटता गया। यही कारण था कि विज्ञान की हर अग्रवर्ती छलांग ने धार्मिक और रहस्यवादी दर्शनों में असुविधा की लहर का संचार किया। यही कारण था कि हर जगह धार्मिक संस्थाओं और दार्शनिकों ने विज्ञान और वैज्ञानिकों के दमन का प्रयास किया। खासतौर पर यह प्रक्रिया पुनर्जागरण काल के बाद शुरू हुई, जब विज्ञान ने अपना

आज का आधुनिक रूप ग्रहण करना शुरू किया था। यूरोप में, जहां विज्ञान ने अपनी आधुनिक संरचना पाई, इसका पुनर्जागरण काल से ही खासा विरोध हुआ। चलिए एक नजर इस पर दौड़ा लेते हैं कि आखिर ये दार्शनिक किस तरह विज्ञान का विरोध करते थे, जोकि आज भी जारी है। उसके लिए पहले हमें यह जानना होगा कि ये आस्थावादी विचारक कैसे इस विश्व तथा उसमें रहने वाले लोगों के जीवन की परिस्थितियों की व्याख्या करते हैं। इसके बाद ही हम यह समझ सकते हैं कि आखिर क्यों यह विज्ञान का विरोध करते हैं। हिन्दू धर्म के अनुसार इस सृष्टि का रचयिता ईश्वर है, ब्रह्मा है। उसने ही इस जगत की रचना की है। उसी की इच्छा के चलते स्वर्ग-नरक, ग्रह नक्षत्र और तमाम जीव-जंतु, पेड़-पौधे अस्तित्व में आएं। इनकी भाषा में कहें तो सब प्रभु की माया हैं चांद को राहू और केतू निगल लेते हैं। नाना प्रकार के देवी-देवताओं की अराधना से सुख-समृद्धि का विस्तार होता है। आज कल आम घरों में धार्मिक अनुष्ठानों में अधिकांशतः लक्ष्मी और गणेश की पूजा होती है। इस धरती पर हमारे कर्म ही हमारे भाग्य को सुनिश्चित करते है। किसी को अच्छे कर्मों के लिए स्वर्ग मिलता है, तो किसी को बुरे कर्मो के लिए नरक, तो कोई 84 लाख योनियों के फेर में फंस जाता है। दूसरी तरफ एकेशवरवादी ईसाई, यहूदी और मुस्लिम, तीनों धर्म सृष्टि-रचना-सिद्धांत को मानते हैं। इसके अनुसार ईश्वर ने ही मनुष्य को बनाया। पहले उसने आदम को बनाया, फिर हव्वा को आदम की हड्डी से बनाया। तमाम जीव-जंतुओं की रचना उस ईश्वर ने मनुष्य के लिए की। यहां दी गई ये व्याख्याएं अधूरी हो सकती हैं या किसी व्यक्ति को गलत भी लग सकती है। दरअसल ये व्याख्याएं समाज की प्रगति के साथ बदलती रही हैं और जब भी इन पर सवाल खड़े होते हैं तो इनका रूप बदल जाता है। यूरोप में तो खास कर हर बड़ी वैज्ञानिक खोज के साथ इनकी साख दांव पर लगी रहती है और ये अपने को बचाए रखने के लिए या तो नया रूप हासिल करती है या उस खोज को अपने में समाहित करने का प्रयास करती है। पर जब यह नामुमकिन हो जाता है, तो ये सारी खोजें इनके लिए बचकानी हो जाती हैं और फिर सवाल तर्क का नहीं पवित्रता और आस्था का बन जाता है और आस्था के सामने विज्ञान की क्या बिसात।

आस्था की जड़ें मुख्यतः अज्ञानता में समायी होती हैं। गहराई से विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि अज्ञानता की जड़ें शोषण में होती हैं और शोषण के कारण सामाजिक-आर्थिक व्यवस्था से जुड़े होते हैं। यही कारण है कि व्यवस्था पोषित होती है तमाम उन दर्शनों को जोमौजूदा निजाम को पवित्र मानते हैं। हर प्रगतिशील विचार को पुराने पड़ चुके दर्शन या तो अपने अनुसार समायोजित कर लेते हैं या नकार देते हैं यह संघर्ष हमारे पूरे मानव इतिहास में प्रवाहमान रहा है। विज्ञान के क्षेत्र में भी यही इतिहास रहा है। जब कॉपरनिकस ने मौजूदा खगोलीय आंकड़ों के तार्किक अध्ययन से ब्रह्मांड के केंद्र को सूर्य से हटाकर यह बताया कि सूर्य ब्रह्मांड के अनेक सितारों में से एक है तथा चर्च की खिलाफत की तो उन्हें इसके लिए जिंदा जला दिया गया। गैलिलियो, सेर्वियूतस और इनके जैसे तमाम लोगों ने अपनी जान गंवा कर या यातनाएं झेल कर विज्ञान को जिंदा रखा और ईश्वरपरक सिद्धांत को विज्ञान से अलग किया। विज्ञान के क्षेत्र में हो रहे दर्शनों के टकराव का पूरा इतिहास तो विराट है और उसकी यहां विवेचना संभव नहीं है। हमारा मकसद यहां उन महत्वपूर्ण अग्रवर्ती

छलांगों को देखना है जिसने विज्ञान की अतार्किक आस्था पर वरीयता को स्थापित करने का काम किया और विश्व की भौतिकवादी व्याख्या की प्रमाण-सिद्धि को सशक्त और सुदृढ़ बनाया।

न्यूटन का पहला आवेग :

पुनर्जागरण के उथल-पुथल भरे दौर सन् 1543 में मौजूदा खगौलीय आंकड़ों का तार्किक विश्लेषण करके कॉपरनिक्स ने यह बताया कि दरअसल धरती सूर्य का चक्कर काटती है न कि धरती का सूरज। यही समय था आधुनिक विज्ञान की उत्पत्ति का। भौतिकवादी दर्शन के उद्भव का। विज्ञान को यहां से आगे तथा उच्च स्तर पर ले जाने का काम न्यूटन ने किया। न्यूटन विज्ञान के महान शिक्षकों में से एक हैं। उन्होंने ही सार्वत्रिक गुरुत्व का सिद्धांत दिया तथा गति के तीन नियम दिए। उस समय के मौजूदा भौतिक आंकड़ों का विश्लेषण कर उन्हें नियमबद्ध किया। उन्होंने संसार में भौतिक तत्वों की गति के नियम दिए। न्यूटन ब्रह्मांड को ऐसी घड़ी के मानिन्द मानते थे जो एक बार शुरू करने पर हमेशा अपनी गति से चलती रहती है और इस गति के नियमों का ही प्रतिपादन आवेग की जरूरत थी। न्यूटन के इस सिद्धांत से धरती की परिधि को नियमबद्ध किया। न्यूटन के सिद्धांत यह समझाते थे कि धरती सूर्य के चारों ओर चक्कर किस प्रकार काटती है तथा उसकी गति की परिधि का विश्लेषण कैसे किया जाए, लेकिन न्यूटन के पहले नियम के अनुसार धरती को उस गति को हासिल करने के लिए पहले आवेग को न्यूटन ने भगवान द्वारा दिए गए पहले आवेग में ढूंढा। इस समय भौतिकवादी दर्शन यांत्रिक था। न्यूटन का भौतिकवाद भी एक यांत्रिक भौतिकवाद था। न्यूटन द्वारा रखी गई ईश्वरपरक व्याख्या का खंडन उस समय नहीं किया जा सका। इसका खंडन काण्ट ने किया। काण्ट ने बताया कि पूरा सौर मंडल एक नेब्यूला से बना था, जोकि अपने आंतरिक विकर्षण के चलते ग्रहों में विभाजित हुआ। इस प्रकार धरती, सूर्य और अन्य ग्रहों की उत्पत्ति हुई। भगवान के आवेग की कोई जरूरत नहीं थी। काण्ट की इस व्याख्या को लाप्लास ने 1796 में सिद्ध किया। काण्ट ने यह भी बताया कि प्रकृति कोई क्लोजड सिस्टम नहीं है जैसा कि न्यूटन ने सोचा था। यह सतत् अस्तित्व में आने और नष्ट होने की प्रक्रिया है।

लेकिन अभी भी विज्ञान के क्षेत्र में चल रहे संघर्ष में भौतिकवाद एक सुसंगत रूप में प्रकट नहीं हो पाया था। यह प्रक्रिया उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में जाकर एक मुकाम पर पहुंची, जब मार्क्स और एंगेल्स ने हेगेल के भाववादी द्वंद्ववाद और फायरबाख के यांत्रिक भौतिकवाद के वैज्ञानिक खोजों ने हर बार इन सिद्धांतों की पुष्टि की। बीसवीं सदी में हुए वैज्ञानिक विकास ने, विशेष रूप से सापेक्षिकता सिद्धांत और कवाण्टम यांत्रिकी ने, द्वंद्वात्मक भौतिकवाद के सिद्धांतों को न सिर्फ पुष्ट किया, बल्कि उनके अग्रवर्ती विकास की संभावनाओं की ओर भी इशारा किया है, लेकिन इन पर चर्चा कर पाना यहां संभव नहीं है और आगे के अंकों में हम इन पर भी लिखेंगे। फिलहाल, विज्ञान और आस्था के संघर्ष में हम अगले मील के पत्थर पर आते हैं।

हेल्महोल्ट्ज का 'उष्मीय-अन्त' :

सन् 1852 में एक लैक्चर में हेल्महोल्टज नामक वैज्ञानिक ने ऊर्जा के संरक्षण के नियम तथा कारनोट के इंजन की व्याख्या द्वारा बढ़ती एण्ट्रोपी के नियम को समावेशित करके यह निष्कर्ष निकाला कि यह ब्रह्मांड धीरे-धीरे उष्मीय अन्त (थर्मल डेथ) की तरफ बढ़ रहा है। (ये दोनों नियम बाद में उष्मागति के पहले और दूसरे

नियम के नाम से जाने गए)। एण्ट्रोपी एक परिणामात्मक मात्रक हैं जो रैंण्डमनेस या अस्त-व्यस्तता को मापती है। यह ब्रह्मांड में ऊर्जा के रूपांतरों से हमेशा बढ़ती रहती है। ऊष्मागतिकी में यह ताप और ऊष्मा पर निर्भर करती है। ब्रह्मांड के किसी भी पृथक हिस्से में बढ़ती एण्ट्रोपी का मतलब यह कि वह ऊर्जा के बराबर वितरण की तरफ बढ़ता है। जब ऊर्जा का वितरण बराबर हो जाएगा, वह ऊष्मीय संतुलन पर आ जाएगा। ऐसे हिस्से में अब कोई ऊर्जा का रूपान्तरण नहीं होगा। वह गतिहीन हो जाएगा। यह अनुरूपता जब हम पूरे ब्रह्मांड को पृथक मानकर लागू करते हैं तो ब्रह्मांड के गतिहीन होने के परिणाम तक पहुंचते हैं। यानि उसका ऊष्मीय-अन्त हो जाएगा। इस सिद्धांत को धार्मिक संस्थाओं ने तुरंत यह कहकर प्रचारित किया कि चूंकि इस दुनिया का अंत होगा तो उसकी उत्पति भी की गई है। तथैव उस महान रचयिता के द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को पूरा करने के लिए यह सब हो रहा है। इस गैर भौतिकवादी सोच के बीज भी गैर भौतिकवादी दर्शन की जमीन से पोषित होकर अभिव्यक्ति पाते हैं। आज विज्ञान के जरिए हमें पता है कि हर संतुलन अस्थाई तथा सापेक्षिक होता है। पूरा ब्रह्मांड गतिमान है और सतत् विकास कर रहा है। हर गति में संतुलन होता है और हर संतुलन में सापेक्षिक गति। एंगेल्स के शब्दों में कहें तो किसी वस्तु में सापेक्षिक गतिहीनता की संभावना और अस्थायी संतुलन की संभावना ही पदार्थ और जीवनके अस्तित्व की अनिवार्य स्थिति है। (प्रकृति का द्वंद्ववाद) हमारा सम्पूर्ण जीवन भी खुद रूकाव और गति के अन्तविरोधों में गुंथा हुआ है। किसी भी प्रक्रिया को उसके दिक और काल से काट कर देखना अधिभौतिकवादी दर्शन है। हेल्महोल्टज की इस व्याख्या को आज नकारा जा चुका है। प्रीगोझीन के असंतुलन के सिद्धांत ने उपरोक्त व्याख्या को वैज्ञानिक धरातल पर नकार दिया है। जैसे ही हम हेल्महोल्टज के यांत्रिक संसार के अलग-अलग हिस्सों में गुरुत्व और अन्य बलों को लाते हैं तथा इन पृथक हिस्सों को जोड़ते हैं तो ऊष्मीय-अन्त का अंत हो जाता है। आज यह साबित हो चुका है कि एण्ट्रोपी एक सांख्यिकी मात्रक है जो इस तरह परिभाषित ही होती है कि वह ब्रह्मांड के आंतरिक बदलावों के साथ बढ़ती रहती है। यह किसी प्रक्रिया में बदलाव के सारे मापदंडों पर विमर्श नहीं करती। ब्रह्मांड में कभी भी पूरी तरह संतुलन नहीं आ सकता। यह खुद लगातार बदल रहा है और इसमें संतुलन व असंतुलन की शक्तियों में सतत् द्वंद्व जारी है।

कितना इण्टेलिजेण्ट है इण्टेलिजेण्ट डिजाईन?

1859 में डार्विन द्वारा दिए गए विकासवाद के सिद्धांत ने यह साबित कर दिया कि मानव की उत्पति हजारों सालों के उद्भव और विकास से हुई है। जीवन की शुरूआत जटिल प्रोटीन द्वारा संचालित उन जटिल संरचनाओं से हुई, जिन्हें हम जीवाणु कहते हैं। ये लाखों सालों पहले धरती पर पड़ने वाली सूर्य की पराबैंगनी किरणों की ऊर्जा का भंडारण कर सकते थे। इन जीवाणुओं के उद्भव और विकास की प्रक्रिया प्राकृतिक चयन द्वारा वातावरण के अनियमित और सशर्त विकास के अनुरूप ही जीन का चुनाव करती है। डार्विन ने इस सिद्धांत के कारण ही विज्ञान की एक अलग शाखा 'जेनेटिक्स'का उद्भव और विकास हुआ जिसने मानवी उद्भव और विकास का पूर्ण विरूपण किया। इस सिद्धांत काने चर्च और दूसरे धर्मो के 'सृष्टि

रचना सिद्धांत' का पूर्ण रूप से खण्डन किया। ईश्वर ने न तो इंसान को बनाया है, न जानवरों और पेड़-पौधों को। ये तो लम्बी उद्भव और विकास की प्रक्रिया से अस्तित्व में आये। मानव ने अपने विकासक्रम के बारे में अपूर्ण तथ्यों के चलते परिकल्पना के संयोजन से भगवान की रचना की। इस सिद्धांत का उल्लेख मार्क्स-एंगेल्स ने अपने लेखों में अक्सर किया है। खुद 2009 में इंग्लैंण्ड के चर्च ने अपने पूर्वजों द्वारा किये गये व्यवहार के लिए डार्विन से माफी मांगी थी। पर इस सबके बावजूद एक नयी ईश्वरपरक धारणा 'इण्टेलिजेंट डिजाइन' के सिद्धांत को नकारती है। इसके प्रचारक जिसमें वैज्ञानिक भी शामिल हैं, तर्क देते हैं कि कुछ प्राकृतिक संरचानाएं इतनी जटिल हैं कि उन्हें कोई उच्चतम प्राणी ही बता सकता है। यह तर्क डार्विन के समकालीन प्रतिद्वंद्वी विलियम पाली का ही है, जो कहते थे कि इतना जटिल डिजाइन सिर्फ भगवान के द्वारा ही बनाया जा सकता है। ऐसे लोगों की जगह वापिस प्राथमिक पाठशाला है जहां उन्हें यह समझाया जाये कि नर्सरी क्लास के बच्चे उच्चतर गणित के समाकलन को नहीं समझा सकते। इण्टेलिजेंट डिजाइन के समर्थकों द्वारा दिये गये 'तर्क' पूरी तरह से खोखले साबित हुए हैं और खारिज हो चुके हैं। ऐसे तमाम विचार आज भी पनप रहे हैं। जिन्हें पालने-पोसने का काम तमाम संस्थाएं कर रही हैं। बताने की जरूरत नहीं कि ये सारी संस्थाएं धार्मिक हैं, व्यवस्था-पोषित हैं। ऐसे में एक जरूरी सवाल दिमाग में उठना लाजिमी है- जब विज्ञान ने भैतिकवादी दर्शन को इतना पुष्ट किया है, गहरा किया है, विस्तार किया है तो फिर तमाम तर्कहीन व्याख्याएं विज्ञान से लेकर हर ज्ञान-क्षेत्र में आज भी मौजूद क्यों हैं। आखिर इसके पीछे कारण क्या है? कैसे तमाम दर्शन मानव मस्तिष्क पर अपना असर छोड़ते हैं। क्या तमाम सोच और इच्छाएं सिर्फ व्यक्तिगत होती हैं? इस सवाल को अगर अपने समाज से जोड़कर देखा जाये तो यह सवाल और भी साफ हो जाता है। क्यों तमाम इंसानों द्वारा आजादी बराबरी और न्याय की इच्छा प्रकट करने के बावजूद समाज में ध्रुवीकरण मौजूद है? अन्याय, झूठ और अंधेरगर्दी हर तरफ फैली हुई है?

इसका कारण सामाजिक और ऐतिहासिक है। एक वर्ग जनसंख्या का एक छोटा-सा हिस्सा होने और किसी भी प्रकार की उत्पादक गतिविधि का अंक न होने के बावजूद अधिकांश संसाधनों पर नियन्त्रण रखता है और शासन-सूत्र भी उसके प्रतिनिधियों के हाथ में होता है, जबकि दूसरा वर्ग जनसंख्या का बहुसंख्यक होने और जीवन के लिए जरूरी सभी शर्तों को पैदा करने के बावजूद अपनी ही नियति के नियन्त्रण से वंचित होता है और पूरी तरह सम्पतिधारी वर्गों के वर्चस्व के अधीन होता है। शासक वर्ग इस स्थिति को बनाये रखने के लिए अगर महज अपनी राज्यसत्ता द्वारा बल-प्रयोग का रास्ता अपनायेंगे तो निश्चित रूप से यह बहुत लम्बे समय तक नही चल सकेगा। यही कारण है कि शासक वर्ग अपनी शिक्षा, संस्कृति मीडिया और संस्थाओं द्वारा शासित वर्ग के मस्तिष्क में यथास्थितिवाद, भाग्यवाद, अतार्किकता, कूपमण्डूकता, निराशा और निर्भरता पैदा करता है। धर्म ऐसी ही एक संस्था के रूप में शोषित-उत्पीड़ित आबादी को नियतिवादी बनाता है,उसके दुखों-तकलीफों के लिए उसे जिम्मेदार ठहराता है, समाधान के लिए आसमान की ओर देखना सिखाता है और

शेष पृष्ठ 36 पर

किस्त नं-6

ब्रह्मांड यात्रा

(मंगल से मंगलीक तक.....)

-डा. अवतार सिंह ढींढसा
094634-89789

यात्रा का द्वितीय पड़ाव :-

साथियो, अब हम (सूर्य से दूरी के अनुसार) हमारी पृथ्वी से बाहर की ओर के ग्रहों की ओर अपनी यात्रा आरंभ करेंगे। अर्थात अब हम चलेंगे सूर्य से विपरीत दिशा की ओर। अतः पृथ्वी से बाहर हमारा प्रथम पड़ोसी है-मंगल ग्रह। सूर्य से स्थिति के अनुसार यह चौथे स्थान पर सूर्य की परिक्रमा कर रहा है।

साथियो, यदि हम पृथ्वी पर बने सर्वाधिक तीव्र गति वाले राकेट में बैठें, जोकि एक सैकेंड में 12 किलोमीटर की गति से चलता हो, तो भी हमें मंगल ग्रह पर पहुंचने के लिए लगभग 6-7 महीने लग जाएंगे। हमारे देश का मंगलयान मंगल ग्रह की यात्रा के लिए 5 नवम्बर 2013 को 'इसरो' अंतरिक्ष केंद्र से उड़ान भर चुका है। दिसम्बर 1, 2013 को यह पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण से बाहर होकर सीधा सूर्य एवं इसके इंजनों की शक्ति के प्रभाव के कारण सितम्बर 2014 में लगभग 10 महीनों के पश्चात् मंगल के गुरुत्वाकर्षण में पहुंच चुका है, परन्तु हम तो अपने कल्पना रूपी यान में सवार हैं। आओ दोस्तो, सूर्य से चलकर...बुध, शुक्र एवं अपनी पृथ्वी को पीछे छोड़ते हुए वो सामने लाल रंग की बिंदिया के आकार का तारा जो हमें दृष्टिगोचर होता है, उसकी ओर आगे बढ़ें...वही है हमारा मंगल ग्रह। अंग्रेजी में इसका नाम मार्स रोमन सभ्यता में युद्ध के देवता के तौर पर माने जाने वाले 'मार्स' पर रखा गया है, क्योंकि इसके लाल रंग से रोमनों ने अनुमान लगाया था कि इसका लाल रंग, युद्ध में बहे रक्त के कारण ही है, परन्तु यह केवल एक अटकल ही प्रमाणित हुई है।

आओ, इसके और निकट पहुंचें और इसके आकार के बारे में चर्चा करें। मंगल ग्रह आकार में पृथ्वी से छोटा है। इसका व्यास लगभग 6794 किलोमीटर है, परन्तु ध्रुवों की ओर इसका व्यास लगभग 6752 किलोमीटर है। अर्थात मंगल भी पूरा गोल नहीं है, बल्कि संतरे की भांति थोड़ा सा चपटा है। यह सूर्य से 22 करोड़ 79 लाख 40 हजार 500 किलोमीटर दूर है। कभी-कभी यह पृथ्वी के निकट अर्थात 5 करोड़ 50 लाख किलोमीटर की दूरी पर भी आ जाता है, परन्तु कभी-कभी इतना दूर कि 40 करोड़ किलोमीटर की दूरी पर भी चला जाता है। आओ, तनिक ज्योतिषियों से भी 'पूछा' ले लें। ज्योतिष में मंगल के प्रभाव के अनुमान, केवल इसकी राशियों के मध्य की स्थिति के आधार पर ही लगाए हुए हैं, जबकि प्रभाव के लिए 'दूरी' एक अहम् पहलू है। यदि ग्रह निकट है तो प्रभाव अधिक और यदि दूर है तो प्रभाव कम होना चाहिए, परन्तु जंत्रियों में दूरी वाला पहलू है ही नहीं। अतः स्पष्ट है कि ज्योतिष स्वयं में ही विज्ञान नहीं है।

आओ, तनिक मंगल के और निकट चलें। इसकी गति एक सैकेंड में लगभग 25 किलोमीटर है, मतलब यह हुआ कि जब तक ज्योतिषी महाराज अपनी पत्री खोलते हैं, उसे बांचते हैं... दो मिनट तो लगा ही देते होंगे तथा मंगल उन दो मिनटों में 3 हजार किलोमीटर आगे पथ तय कर लेता है।

ज्योतिषी के पास कौनसा ऐसा कैल्कूलेटर है जो एक सैकेंड में 25 किलोमीटर की गति से घूम रहे मंगल के प्रभाव को ज्ञात कर सके तथा इसकी गणना भी बता सके... फैसला आप स्वयं कर लें। मंगल सूर्य के गिर्द 687 दिनों में चक्कर पूर्ण करता है। मंगल का दिन हमारी पृथ्वी के दिन के लगभग सामान है अर्थात 24 घंटे 37 मिनट 22 सैकेंड (पृथ्वी की भांति यहां पर भी मौसम है) यह अपनी धुरी पर 25.19 दर्जा कोण पर झुका हुआ है। हमारी पृथ्वी अपनी धुरी पर 23.5 दर्जे पर झुकी हुई है। दिन एवं मौसम में समानता होने के बावजूद भी इस ग्रह पर जीवन संभव नहीं है।

अब आप अवश्य यह पूछेंगे कि मंगल पर जीवन क्यों नहीं? दोस्तो यह ग्रह हमारी पृथ्वी के मुकाबले में ठंडा है अर्थात यहां पर तापमान ऋणात्मक (-) 40 डिग्री सेल्सियस तक गिर जाता है, परन्तु गर्मी के मौसम में इसका तापमान 20 डिग्री सेल्सियस तक ही रहता है। अतः तापमान अनुकूल न होने के कारण मंगल भी उजाड़, बंजर, पथरीली सतह वाला ग्रह है।

साथियो, जल्दी में कहीं हम मंगल के वायुमंडल के बारे में चर्चा करना न भूल जाएं। किसी भी ग्रह पर वायुमंडल का होना उसके अपने गुरुत्वाकषर्ण पर निर्भर करता है, क्योंकि यह ग्रह हमारी पृथ्वी से छोटा है, इसलिए इसका गुरुत्वाकर्षण हमारी पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण का तीसरा भाग ही है। अतः मंगल का कम गुरुत्वाकर्षण हमारी पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण में रह रहे लोगों को कैसे प्रभावित कर सकता है? उत्तर नहीं में ही है, परन्तु ज्योतिष की जंत्रियां इसके विपरीत बेतुकी भविष्यवाणियों के साथ भरी पड़ी हैं। गुरुत्वाकर्षण कम होने का दूसरा प्रभाव यह भी हुआ कि मंगल अधिकतर गैसों को अपने पास नहीं रख सका। अर्थात् इसका वायुमंडल अत्यंत विरल है, पृथ्वी के वायुमंडल का 100वां भाग। यहां केवल कुछ भारी गैसें जैसे कि कार्बनडाईक्साईड ही समस्त गैसों से अधिक है, लगभग 95 प्रतिश्, नाईट्रोजन केवल तीन प्रतिशत, एवं आरगन गैस केवल 1.5 प्रतिशत तथा कुछ अन्य नाममात्र गैसे भी हैं, परन्तु आक्सीन के न होने के कारण यहां पर श्वास क्रिया एवं ज्वलन क्रियाएं संभव नहीं हैं। जल वाष्प भी 0.33 प्रतिशत हैं। अतः न तो अनुकूल तापमान, न ही आक्सीन और न ही पानी, फिर कैसे संभव है मंगल पर जीवन? यदि ऑक्सीजन नहीं है तो ओजोन गैस भी नहीं है। अर्थात् सूर्य की घातक पराबैंगनी किरणों से भी मंगल पर कोई सुरक्षा नहीं है। अतः दोस्तो टीवी चैनलों पर मंगल ग्रह से आक्रमण करने वाले एलियन्स के बारे में हो रहे झूठे एवं दुष्प्रचार से सावधान रहो।

आओ दोस्तो, कुछ समय मंगल की सतह पर उतरें। आप मंगल की सतह पर पृथ्वी की भांति ही चल-फिर सकते हैं। यह कठोर एवं पथरीला ग्रह है। यहां पर हमारा वजन पृथ्वी वाले वजन से तीन गुणा कम है, परन्तु इसकी सतह अत्यंत ऊंची-नीची है। कहीं पर गहरी खाईयां हैं। मंगल ग्रह पर मैदान भी हैं, जहां पर पत्थर के टुकड़े बिखरे पड़े हैं। कहीं पर ऊंची पर्वत चोटियां हैं। वो देखो जरा सबसे ऊंचे शिखर की ओर... पहले इस पर्वत का नाम रखा गया था 'निक्स ओलम्पिका', परन्तु अब इसे 'ओलम्पिका मोनस' कहा जाता है। यह ज्वालामुखी से बना हुआ है... इसकी ऊंचाई के बारे में पूछते हो ...नोट करो, यह हमारी पृथ्वी की ऐवरेस्ट चोटी से लगभग तीन गुना ऊंचा है। इसकी ऊंचाई 24 किलोमीटर है, जबकि ऐवरेस्ट तो केवल 8 किलोमीटर 848 मीटर ही ऊंची है।

गहरी खाईयों के बारे में पूछते तो? हमारी

पृथ्वी की भूमध्य रेखा की भांति...मंगल ग्रह की भूमध्य रेखा पर एक खाई है, जोकि 6 किलोमीटर 600 मीटर गहरी है। इसकी लम्बाई लगभग 3680 किलोमीटर तथा यह खाई 120 किलोमीटर से 240 किलोमीटर तक चौड़ी भी है। ऐसी खाईयां यद्यपि पृथ्वी पर नहीं मिलती, परन्तु दोस्तो समुद्रों में, पानी के नीचे ऐसी खाईयां अवश्य हैं, जो कि समुद्र तल से 11 किलोमीटर तक गहरी भी हैं!! परन्तु स्पष्ट है कि पानी से भरी पड़ी हैं।

दोस्तो जरा संभल कर, मंगल के विरल वायुमंडल में पृथ्वी की भांति आंधियां भी आती हैं। इस ग्रह पर पृथ्वी की भांति ही ग्रीष्म एवं शीत ऋतुएं भी आती हैं, परन्तु ग्रीष्म ऋतु के समय इतनी सी गर्मी पड़ती है जितनी पृथ्वी पर बसंत ऋतु के समय में होती है। शेष सारा वर्ष तो अधिकतर समय कड़ाके की सर्दी ही पड़ती है।

दोस्तो, मंगल पर रात्रि के समय का नजारा भी देख लो। हमारी पृथ्वी पर रात्रि के समय एक चांद होता है, परन्तु मंगल के पास दो चांद रात्रि के समय में चमकते हैं... और कमाल की बात यह भी है कि दोनों चांद एक-दूसरे से विपरीत दिशा में घूमते हैं...इनके नाम 'फोबोस' (अर्थात डर) एवं 'डेईमोस' (अर्थात आतंक) हैं। इनके नामकरण के बारे में बता दें ...क्योंकि पुरातन कथाओं के अनुसार मंगल को युद्ध का देवता माना गया था तथा डर एवं आतंक इस युद्ध के देवता के दो अंगरक्षक हैं। सभी पुरातन मान्यताओं को तोड़ने में हमारी मदद की है जुलाई 1965 के 'मेरिनर-4' मिशन से लेकर जून 2008 में भेजे गए राकेट 'फिनिक्स' के टीवी कैमरों ने... तथा आज तक लगभग 20 खोजी राकेट पृथ्वी से भेजे जा चुके हैं जिनमें से 15 ने पूर्ण सफलता के साथ हमें मंगल ग्रह के बारे में जानकारी दी है।

दोस्तो 'तारा डूबने' का प्रसंग कहीं मैं भूल न जाऊं...ज्योतिषि तारा डूबने इत्यादि का जो संकल्प हमें बताते हैं, यह उन चालाक लोगों द्वारा फैलाया गया डर ही है, जोकि भोले-भाले लोगों की जेबों पर अवश्य ही प्रभाव डालता जा रहा है। मंगल से डरने की कोई आवश्यकता नहीं...यदि डरने की आवश्यकता है तो केवल... ज्योतिषियों, पाखंडियों से दूर रहो... मंगल तो हमारे सौर-परिवार में हमारा नजदीक का पड़ोसी है।

दोस्तो, आप में से कितने मंगलीक हैं???
आपको यदि नहीं पता तो ज्योतिषी के पास जाओ। क्या प्राप्त करोगे...कि आप मंगलीक हैं!! एक जंत्री की कुंडली में यदि मंगल 1, 4, 7, 8, 12 घर अर्थात राशि में हो तो मंगलीक। परन्तु एक अन्य जंत्री द्वारा तैयार कुंडली में यदि मंगल 1, 2, 4, 7, 8, 12 घर अर्थात राशि में तो मंगलीक, क्योंकि 2 नंबर घर का अन्तर है। अतः कितनी वैज्ञानिक हैं ये जंत्रियां, आप स्वयं ही निर्णय कर लेना। फिर भी कुंडलियां आपके ऊपर यह 'डर/भार' हैं, वो डर/भार है... बताती हैं!!! खासतौर पर विवाह के मामलों में ...मंगलीक केवल किसी व्यक्ति के जन्म के समय ... मंगल ग्रह की 'राशि/घर' में विशेष स्थिति होती है ... मंगलीक होना लड़के-लड़की की सफलता में रूकावट बनता बताया जाता है, परन्तु यह इस प्रकार नहीं है...मंगल की स्थिति किसी भी लड़के/लड़की पर कोई भी प्रभाव नहीं डालती। यदि प्रभाव डालता है तो वह है ज्योतिषी जी महाराज...जोकि मिथ्या भय दिखाकर किसी काबिल शिक्षित, इंजीनियरों, डाक्टरों के विवाह होने से रोक देता है...अतः डरना है तो ज्योतिषी से डरो ...रहो उससे ......

शेष पृष्ठ 18 पर....

राजस्थान विश्वविद्यालय एवं परा-मनोविज्ञान

-प्रो. अब्राहम टी. कोवूर

स्वयंभू प्रोफैसर एवं स्वयंभू डाक्टर राजस्थान विश्वविद्यालय का कथित डायरैक्टर श्री एच.एन. बैनर्जी सन् 1968 के अंतिम दिनों में श्रीलंका आया था। उसने 'दी सिलोन आब्जर्वर' में 'एक वैज्ञानिक की खोजों में से' नाम से पुनर्जन्म से संबंधित कहानियों का अपना संग्रह धारावाहिक रूप में प्रकाशित करवाया है। भारत के मैगजीन लिंक के 19-5-1968 के अंक में छपे कुछ पैराग्राफ हम यहां दोबारा धन्यवाद सहित लिख रहे हैं। इस लेख में राजस्थान विश्वविद्यालय के परा मनोविज्ञान विभाग, श्री बैनर्जी एवं उसकी खोजों के बारे में जानकारी दी गई है। जिन लोगों ने पुनर्जन्म से संबंधित श्री बैनर्जी की लिखी हुई कहानियां पढ़ी हैं, यह जानकारी उन पाठकों को उन कहानियों का सही मूल्यांकन करने में सहायता करेंगी और वे स्वयं निर्णय कर सकेंगे कि सुनी-सुनाई पुनर्जन्म से संबंधित इन कहानियों को पुनर्जन्म एवं दिमाग से बाहर की स्मृति के वैज्ञानिक प्रमाण के तौर पर विचार करने के योग्य समझा जा सकता है अथवा नहीं।

यह लेख भारत की शिक्षण संस्थाओं में कार्यरत विवेकशील पाठकों को राजस्थान विश्वविद्यालय में परा मनोविज्ञान बारे की जा रही खोजों से संबंधित जानकारी देने की कोशिश है।

कमिशन की रिपोर्ट- यूनिवर्सिटी ग्रांट कमिशन (यू.जी.सी.) की तीन सदस्यीय समिति ने राजस्थान विश्वविद्यालय के फिलास्फी (दर्शन शास्त्र) विभाग की परा मनोविज्ञान यूनिट को बंद करने की सिफारिश की है।

समिति ने अपनी रिपोर्ट में लिखा है कि अपने वर्तमान रूप में जहां यह साधनों की बर्बादी के साथ-साथ, भारत एवं विदेशों में शिक्षण भाईचारे की सहानुभूति गँवा लेगा, वहां यह परा मनोविज्ञान के वैज्ञानिक विषय होने के दावे को भी कमजोर करेगा।

यू.जी.सी. की रिपोर्ट पर राजस्थान विश्वविद्यालय सिंडीकेट की बैठक में विचार किया गया। कार्यवाहक उपकुलपति डा. आर.सी. नेहरोत्रा ने पत्रकारों को बताया कि रिपोर्ट आवश्यक कार्यवाही के लिए सिंडीकेट की कानूनी मामलों बारे कमेटी को भेजी जा रही है।

उस कमेटी में शामिल थे -श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय के मनोविज्ञान के रिटा. प्रोफैसर प्रो. एस.पार्थ सारथी, उत्कल विश्वविद्यालय भुवनेश्वर के मनोविज्ञान के प्रो. डा.आर. रथ एवं दिल्ली यूनिवर्सिटी के मनोविज्ञान के प्रो. डा.एच. सी.गांगुली।

रिपोर्ट में कहा गया है कि परा मनोविज्ञान यूनिट में दस्तावेजों द्वारा प्रमाणों का प्रस्तुतिकरण गुण एवं संख्या दोनों ही पक्षों से बुरी हालत में है। बेपरवाही एवं अटकल पच्चू ढंग से एकत्र की गई सामग्री की सत्यता को परख सकना संभव नहीं है। यूनिट हमारे सम्मुख वह आवश्यक सामग्री प्रस्तुत नहीं कर सकी, जोकि हमें उस द्वारा की गई खोजों का पुनर्निरीक्षण करने हेतु चाहिए थी। नत्थी करके रखे गए कार्डों पर जो जानकारी दर्ज थी, वह वास्तविक तथ्यों के साथ मेल नहीं खाती थी।

रिपोर्ट में आगे लिखा गया है कि ''1963 में यूनिट की स्थाप्ति से लेकर अब तक एकत्र किए गए 700 मामलों में से केवल 30 केस गहन जांच-पड़ताल हेतु लिए गए थे तथा उनमें से केवल तीन के बारे में खोज निबंध लिखे गए

थे।'' कमेटी ने यह भी अनुभव किया कि तीन केसों बारे लिखे गए खोज निबंध किसी भी प्रकार से विषय की गंभीरता को ध्यान में रखते हुए खोज निबंध नहीं कहे जा सकते।

रिपोर्ट बताती है कि परा मनोविज्ञान से संबंधित कई क्षेत्रों के अध्ययन जैसे ई.एस.पी., माध्यमपन, मानसिक प्रयोग एकत्र करना, ई.एस. पी. पर योगा की सिखलाई के प्रभाव, सर्पदंश का इलाज बिल्कुल सतही एवं आम लोगों की रूचि के स्तर हैं।

रिपोर्ट आगे बताती है कि केसों के अध्ययन के लिए यूनिट ने सारी शक्ति सुनी-सुनाई बातों एवं अखबारों में छपी कहानियों को आधार बनाने में लगा रखा है। जिन तीन केसों को यूनिट गहराई एवं विस्तार सहित अध्ययन करने का दावा करती है। वे सही वैज्ञानिक जांच-पड़ताल के सामने टिक नहीं सकेंगे।

यू.जी.सी. समिति सलाहकार समिति के कुछ सदस्यों को भी मिली। उन्होंने कहा कि परा मनोविज्ञान यूनिट सस्ती प्रसिद्धि प्राप्त करने में लगी हुई है, जिसके साथ विश्वविद्यालय का कोई मान-सम्मान नहीं बढ़ा है।

एक चकमेबाजी- नई दिल्ली से प्रकाशित होने वाले 'लिंक' मैगजीन ने परा मनोविज्ञान बारे की गई श्री बैनर्जी की कथित खोजों के बारे में एक स्वतंत्र खोज करवाई तथा परा मनोविज्ञान अथवा चकमेबाजी शीर्षक से एक लंबा लेख 19 मई 1968 के अंक में प्रकाशित किया। पाठकों के लाभ के लिए मैं उस लेख में से कुछ अंश यहां दे रहा हूं-'बैनर्जी स्वयं को डाक्टर कहता है तथा दावा करता है कि अमेरिका के शहर कैनसास की किसी संस्था से उसने डाक्टरेट की डिग्री प्राप्त की है, परन्तु उपकुलपति श्री वी.माथुर यह स्वीकार नहीं करते कि उसने यह डिग्री परिश्रम के द्वारा प्राप्त की है। वह उसे केवल 'श्री बैनर्जी' कहता है। किसी पत्रकार द्वारा कैनसास संस्था के अधिकारियों को लिखे एक पत्र के उत्तर में उन्होंने इस बात की प्रौढ़ता करने से इन्कार किया है कि किसी ऐसे नाम के व्यक्ति ने उनकी संस्था में से डाक्टरेट की डिग्री प्राप्त की है।....

''बैनर्जी ने अनुभव बाह्य सूझ अथवा ''पूर्व ज्ञान' संबंधी वैज्ञानिक खोजें करके विश्व का ध्यान अपनी ओर आकर्षित नहीं किया बल्कि उस क्षेत्र में कार्य करने का दावा करके खींचा है, जिसे वह दिमाग से बाहर की स्मृति कहता है। यह पुनर्जन्म के लिए प्रयोग किया जाने वाला नकली वैज्ञानिक शब्द है।'

'...........उसका दावा है कि उसने दिमाग से बाहर की याद्दाश्त के 700 केस एकत्र किए हैं। उसकी कल्पित धारणा है कि इन केसों वाले व्यक्तियों को अपने पिछले जन्म की बातें याद हैं. ....कथित पुनर्जन्म बारे प्रकाशित खोज निबंध पढ़ते समय महसूस होता है। जैसे हम कोई रौंगटे खड़े कर देने वाली गलप रचना पढ़ रहे हों..........।

'अब श्री बैनर्जी श्रीलंका की यात्रा करने की योजना बना रहा है। उसका दावा है कि बाटापोटिया गांव के एक डाकिए के घर रूबी नाम की एक लड़की ने जन्म लिया है, जिसे अपने पिछले जन्म की बातें याद हैं। लड़की कहती है कि पिछले जन्म में वह लड़का होती थी। वह बताती है कि कैसे वह एक दिन स्कूल जा रही थी, वह कुएं में गिर गई और मर गई। जिस लड़के के बारे में कहा जाता है कि रूबी के रूप में उसने पुनर्जन्म लिया है कई वर्ष पूर्व सन् 1956 में उसकी मृत्यु हुई थी। बीच का इतना समय वह कहां रहा, इसके बारे में कुछ नहीं बताया जा रहा।

'इससे पूर्व श्री बैनर्जी गंगानगर के एक कालेज में दर्शन शास्त्र पढ़ाया करता था। वहां से अंतःकरण में जागृत हुई कोई विशेष कार्य करने की प्रेरणा के कारण उसे परा मनोविज्ञान संबंधी कार्य करने का ख्याल आया। गंगानगर के एक धनाढ्य व्यक्ति का पुनर्जन्म में अटूट विश्वास था। उसने उसे कोई संस्था स्थापित करने के लिए धन दे दिया। उन दिनों में राजस्थान का राज्यपाल डा. सम्पूर्णानंद कुलपति के तौर पर राजस्थान विश्वविद्यालय का दौरा करने के लिए गंगानगर आया। बैनर्जी राज्यपाल को मिला। डा. सम्पूर्णानंद ने यूनिवर्सिटी अधिकारियों को मजबूर किया कि वे बैनर्जी को अपनी खोजें जारी रखने के लिए यूनिवर्सिटी में कोई स्थान प्रदान करें। बैनर्जी अपना साजो सामान लेकर यूनिवर्सिटी में पहुंच गया तथा उसने अपनी परा मनोविज्ञान यूनिट स्थापित कर ली। यूनिवर्सिटी के नाम का प्रयोग करने का अवसर उसके लिए बहुत बड़ा वरदान साबित हुआ। अपनी यूनिट को परा मनोविज्ञान विभाग का नाम देकर बैनर्जी ने उन अमेरिकनों का समर्थन प्राप्त करने के लिए एक बहुत बड़ा अभियान शुरू कर दिया, जोकि प्रत्येक प्रकार की विचित्र बातें जानने के लिए उतावले रहते थे।'

'.......उन लोगों की कभी भी वैज्ञानिक जांच-पड़ताल नहीं की गई, जिनके बारे में दावा किया गया था कि उन्हें अपने पिछले जन्म की बातें याद थी। जयपुर के पागलों के अस्पताल के सुपरिटैंडेंट एवं एस.एम.एस. मैडिकल कालेज के मनोचिकित्सा के प्रो. डा.बी.के. व्यास ने बताया कि उसने बैनर्जी को सुझाव दिया था कि पुनर्जन्म का दावा करने वाले मामलों से संबंधित व्यक्तियों को कोई नशीली दवा खिलाकर उनके मानसिक परीक्षण करने चाहिएं, जिनके द्वारा पता लग सकेगा कि उनके मन के अंदर क्या चल रहा है और सच्चाई सामने आ जाएगी, परन्तु बैनर्जी ने यह पेशकश स्वीकार नहीं की। डा. व्यास ने बताया कि उसके अध्ययन के अनुसार पुनर्जन्म वाले केस दोहरे व्यक्तित्व के उदाहरण होते हैं। इनका इलाज हो सकता है तथा सच्चाई का पता लगाया जा सकता है। प्रो. व्यास ने दो ऐसे केसों की कहानी सुनाई जो उसके पास इलाज के लिए आए थे।

'बैनर्जी पुनर्जन्म के जिन केसों को खोजने का दावा करता है, उनमें से एक केस बिल्कुल ही जाली साबित हुआ। वह दावा करता था कि जन लोक सम्पर्क विभाग में एक अधिकारी की बेटी अपने पिछले जन्म की बातें बताती थी। वह कहती थी कि पिछले जन्म में वह बीकानेर रहती थी। जब उसे बीकानेर ले जाया गया, तो वह वहां के स्थानों की पहचान करने में असफल रही। लिंक की ओर से की गई जांच-पड़ताल दर्शाती है कि बैनर्जी के घर में कार्य करने वाली नौकरानी भी उस अधिकारी के घर में काम किया करती थी, जिसकी पांच वर्षीय बेटी को पिछले जन्म की बातें याद थी। नौकरानी भी लड़के के बारे में सुनी-सुनाई बातें ही करती होगी तथा उसका बयान भी विश्वसनीय नहीं कहा जा सकता। कुछ विशेष करने का उसका उद्यम आखिर में शेख चिल्ली का सपना बनकर रह गया। परिणाम यह निकला कि बैनर्जी एवं राजस्थान विश्वविद्यालय के संबंधों में तनाव उत्पन्न हो गया। अधिकतर विद्वान उसके काम को संदेह की दृष्टि से देखते हैं। जहां तक अमेरिकनों एवं अन्य विदेशी लोगों का उसके कार्य में दिलचस्पी लेने का संबंध है, अमेरिका यात्रा करके वापिस लौटे प्रसिद्ध मनोचिकित्सक बताते हैं कि किसी भी तिकड़मबाजी के लिए उनकी सहायता प्राप्त कर लेना कोई कठिन कार्य नहीं है।

'बैनर्जी का बार-बार विदेश की यात्रा

पर जाना उसकी गतिविधियों के एक दिलचस्प पक्ष पर रोशनी डालता है। लगता है कि इस मामले में यूनिवर्सिटी का कोई दखल नहीं। यूनिवर्सिटी के अधिकारियों का तर्क यह है कि क्योंकि यूनिवर्सिटी उसकी विदेशी एवं भारत के अंदर की गई यात्राओं के लिए कोई पैसा नहीं देती, इसलिए उसे यह चिंता करने की आवश्यकता नहीं कि इन यात्राओं के लिए फंड कहां से आते हैं। यूनिवर्सिटी की चिंता तो यह है कि वह यूनिवर्सिटी के एक विभाग का अध्यक्ष होने का दावा करता है। विदेशी लोग इस तथ्य से स्पष्ट तौर पर प्रभावित होते हैं कि उनके पास जाने वाले बैनर्जी के पत्र राजस्थान यूनिवर्सिटी के लैटर पैड पर लिखे होते हैं। पिछले सप्ताह जब राष्ट्रपति डा. जाकिर हुसैन जयपुर का दौरा करने के लिए आए तो बैनर्जी उन्हें मिला। उसने राष्ट्रपति महोदय को बताया कि विश्वविद्यालय का परा मनोविज्ञान विभाग बंद किए जाने की धमकियों के अंतर्गत कार्य कर रहा है। उसने राष्ट्रपति महोदय से प्रार्थना की कि इसे बंद होने से बचाया जाए क्योंकि वह दावा करता है कि पुनर्जन्म का विषय 'वैज्ञानिक तौर पर मानने योग्य है, परन्तु वैज्ञानिक जांच-पड़ताल उसके इस दावे का समर्थन नहीं करती।'

'बैनर्जी ने चाहे पुनर्जन्म से संबंधित सैंकड़ों कहानियां एकत्र की हैं परन्तु जितनी देर तक वह वैज्ञानिक जांच-पड़ताल पर खरी नहीं उतरती, वे मनघड़ंत कहानियों के क्षेत्र में ही रहेंगी।'

न मानने योग्य- श्री बैनर्जी ने पुनर्जन्म से संबंधित जो कहानियां अपनी कलम से लिखी हैं, उन्हें तथ्यों पर आधारित न होने के कारण पूरे तौर पर सत्य नहीं माना जा सकता। श्री बैनर्जी की यह आदत है कि विरोधी तथ्यों को बढ़ा-चढ़ा कर बयान करता है ताकि अपनी मनपसंद धारणाओं एवं खब्तों को सही प्रमाणित कर सके।

21 दिसम्बर 1968 के 'दी सिलोन आब्जर्वर' में दिल्ली के गोपाल के पुनर्जन्म की कहानी का श्री बैनर्जी का वर्णन जांच-पड़ताल करने वाले अन्य वैज्ञानिकों के अनुसार सच्चाई से कोसों दूर था। अगस्त 1965 में भारतीय अखबारों में प्रकाशित कहानी का पूरा विवरण मेरे पास मौजूद है।

'हिन्दुस्तान टाईम्स' में यह कहानी पढ़कर दिल्ली के श्री नित्य चैतन्य यति ने इस केस की जांच-पड़ताल करने के लिए रविवार 22 अगस्त 1965 को विश्वविद्यालय के विशेषज्ञों की एक टीम बनाई। इस टीम में शामिल होने के लिए श्री बैनर्जी को भी बुलाया गयाथा। इस टीम के अन्य सदस्य थे, दिल्ली विश्वविद्यालय में कार्यरत मनोविज्ञान का प्रोफैसर डा. गांगुली, दिल्ली विश्वविद्यालय में मनोरोग विभाग का प्रो. डा. गुप्ता, दिल्ली विश्वविद्यालय में मनोविज्ञान के लैक्चरार डा. पी.के. इर्षी व राजस्थान विश्वविद्यालय में मनोविज्ञान का प्रो. डा. पी.के. माथुर।

यह कहानी गोपाल नाम के एक लड़के के बारे में थी जो यह दावा करता था कि पिछले जन्म में वह उत्तर प्रदेश के मथुरा शहर में सुख सम्चरक नामक एक औषधियां बनाने वाली कम्पनी एवं दुकान का मैनेजर शक्तिपाल शर्मा था। गोपाल का पिता श्री एस.डी. गुप्ता जो दिल्ली का निवासी था बताता था कि लड़के ने तीन वर्ष की आयु में मथुरा वाले अपने बच्चों एवं पत्नी के बारे में बातें करनी शुरू कर दी थी। गोपाल बताता था कि उसके छोटे

भाई ने उसे गोली मार कर मारा था।

लड़का क्योंकि अपनी पत्नी एवं बच्चों को मिलना चाहता था इसलिए उसका बाप उसे मथुरा ले गया। बाप के बताने के अनुसार लड़के ने अपना पहले वाला घर, घर की ओर जाने वाली गली, औषधियों वाली दुकान, अपनी पहले वाली पत्नी एवं बच्चे, वह स्थान जहां पर उसे गोली मारी गई थी तथा घर में रखी गई तस्वीरों वाले सभी व्यक्ति पहचान लिए थे।

सीलोन आब्जर्वर में प्रकाशित इस लेख में श्री बैनर्जी कहता है कि केस की घटनाओं की जांच-पड़ताल करने के उपरांत यह केस प्रपंच नहीं लगता क्योंकि कोई आर्थिक लाभ प्राप्त करने के लिए लड़के के मां-बाप ने इसका प्रचार नहीं किया। कोई भी प्रपंच किसी प्रयोजन द्वारा प्रेरित होता है। स्मृति का विकार कहकर भी इस केस की व्याख्या नहीं की जा सकती, क्योंकि लड़के की प्रत्येक बात की पड़ताल की गई है। लड़के द्वारा की गई अलग-अलग व्यक्तियों की ठीक पहचान एवं अलग-अलग लोगों के प्रति उसके व्यवहार की हम कैसे व्याख्या करेंगे।

इस केस के पाठकों के लाभ के लिए मैं बताना चाहता हूं कि उक्त टीम के मुखिया श्री नित्य चैतन्य यति ने इस के बारे में क्या लिखा था।

श्री यति लिखते हैं कि पुनर्जन्म वाले लड़के गोपाल की माँ ने रोते हुए हमें जो कुछ बताया, वह आश्चर्यजनक चकित कर देने वाला तथा सभी कुछ स्पष्ट करने वाला था।

यह सभी कहानियां मेरे पति द्वारा गढ़ी गई हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि उसके दिमाग में ऐसे अर्थहीन विचार भर कर वह मेरे बेटे को पागल कर देगा। मेरा विश्वास है कि अपनी इन ऊटपटांग बातों के कारण ही वह पिछली परीक्षाओं में फेल हो गया था।

वह लिखता है कि यदि वैज्ञानिक जांच-पड़ताल करने वाले लोग अपने ही विश्वासों से प्रेरणा लेंगे, तो विज्ञान के लिए यह अत्यंत बुरा समय होगा। लड़के गोपाल को अपने पिछले जन्म के बारे में बिल्कुल भी कुछ स्मरण नहीं। वह केवल वही कुछ दोहरा रहा है जो कुछ उसके बाप ने उसे सिखाया है। लड़के की स्मरण शक्ति का भी टैस्ट होना चाहिए क्योंकि वह तो वे बातें भी स्मरण नहीं कर सकता जोकि उसके बाप ने उसे बार-बार रटवाई थी। मां बुद्धिमान महिला प्रतीत होती है। बाप को इस मामले में कोई विशेष रूचि प्रतीत होती है। यह आवश्यक है कि उसके बाप के दिमाग की भी किसी मनो चिकित्सक से भलीभांति जांच-पड़ताल करवाई जाए।-*हिन्दी अनुवाद-*

बलवंत सिंह लैक्चरार

.. ब्रमांण्ड यात्रा.. .पृष्ठ 13 का शेष....

दूर.हमारा मंगल तो हमारी पृथ्वी की भांति सूर्य के गिर्द चक्कर लगाने में ही मस्त है। यदि ज्योतिष, विज्ञान होता और मंगल की स्थिति यदि पृथ्वी के लोगों को मंगलीक बनाती है तो बुध की स्थिति 'बुधनीक' एवं शुक्र की स्थिति 'शुक्रीक' क्यों नहीं बनाती...ज्योतिष चुप है...चलो हम अपनी यात्रा में क्यों बाधा डालें... बढ़ें आगे... अन्यथा मिथ्या चक्करों में फंस कर रह जाएंगे।

साथियो, मंगल से यदि पीछे मुड़ कर देखें तो पृथ्वी एक तारे की भांति नजर आती है तथा चंद्रमा तो नंगी आंखों से मंगल से दिखाई ही नहीं देता। हां, मंगल की सतह पर से एक अन्य नजारा जो देखने को मिलता है, वह है सितारों की भांति चमकती हुई एस्ट्रोआयड पट्टी। चलो अब मंगल से हम बृहस्पति ग्रह की ओर चलें तथा रास्ते में इस पट्टी में से हमें गुजरना पड़ेगा।-*हिन्दी अनुवाद-*

बलवंत सिंह लैक्चरार

चेतना का विकास क्यों नहीं हुआ ?

-पूर्ण सिंह यू.के.

कभी कोसों लंबी यह भटकना न होती,
हर एक मोड़ पर अगर न होते रहबर।
(सुरेन्द्र सिहरा)

पृथ्वी पर बसने वाले समस्त जीवन में चेतना की समानता है। अपने प्रारम्भिक रूप में चेतना परमाणुओं की हरकत में व्यक्त होती है। यह चेतना का लघु रूप (microcosmin) प्रकटावा है। प्रत्येक परमाणु अपने आप में एक लघु ब्रह्मांड (microcosm) है, यह लघु ब्रह्मांड कुछेक गतिहीन धनात्मक कणों (Protons) के इर्द-गिर्द गतिशील इलैक्ट्रोनों एवं कुछेक अकरमक अथवा उदासीन कणों (न्यूट्रोन) का बना हुआ होता है। न्यूट्रॉन न तो ऋणात्मक होते हैं और न ही धनात्मक।

इस बात को संक्षेप में इस प्रकार से कह सकते हैं कि -एक परमाणु अथवा एटम में इलैक्ट्रोनज, प्रोटोन्ज एवं न्यूट्रोन्ज नहीं होते। एटम के अंदर वाले तीन तत्वों में से केवल इलैक्ट्रोन्ज ही गतिशील होते हैं, प्रोटोन एवं न्यूट्रोन स्थाई हाते हें। यह स्थायत्व केवल एटम के अंदर वाले इलैक्ट्रोन्ज के मुकाबले में ही होता है। वैसे ब्रह्मांड में स्थिर कुछ भी नहीं। न्यूट्रोन एवं प्रोटोन उसी प्रकार से स्थिर हैं जिस प्रकार पृथ्वी एवं अन्य ग्रहों के मुकाबले में हमारा सूर्य स्थिर है। वास्तव में यह भी अपने परिवार सहित निरन्तर गतिशील है।

एटम अथवा परमाणु के केंद्रीय भाग को न्यूक्लियस कहा जाता है। न्यूक्लियस प्रोटोन्ज एवं न्यूट्रोन्ज का संग्रह होता है। एटम में इलैक्ट्रान एटम के न्यूक्लियस के गिर्द घूमते रहते हैं। इनकी गति एक सैकेंड में 1 लाख 86हजार मील है। एटमों के अंदर वाले इलैक्ट्रोनों को हम अपनी मर्जी के साथ भी किसी एक दिशा में लगातार दौड़ा सकते हैं। एक सीध में इनकी लगातार हरकत को विद्युत अथवा करंट कहा जाता है। विद्युत एक विशेष प्रकार की ऊर्जा अथवा एनर्जी को दिया गया नाम है।

एटम के न्यूक्लियस (केंद्रीय भाग) में से प्रोटोन अथवा न्यूट्रोन को निकालना तथा निकाल कर अन्य एटम के केंद्रीय भाग, न्यूक्लियस में भेजना अत्यंत कठिन कार्य है तथा खतरनाक भी। यह कार्य वैज्ञानिकों ने सीख लिया है। जब एटम के न्यूक्लियस, केंद्रीय भाग में से कोई प्रोटोन अथवा न्यूट्रोन, किसी तरीके के साथ निकाल कर किसी अन्य एटम के केंद्रीय भाग में भेजा जाए, तब अत्यधिक ऊर्जा उत्पन्न (Release) होती है। केवल इतना ही नहीं, बल्कि फिशन (Fission) अथवा चेन रिएक्शन नाम की एक क्रिया अस्तित्व में आ जाती है। इसका तात्पर्य यह है कि एक एटम के केंद्र में से निकाला हुआ प्रोटोन अथवा न्यूट्रोन दूसरे में जाता है, वहां उसके लिए कोई स्थान नहीं, वह वहां से किसी प्रोटोन अथवा न्यूट्रोन को धकेल कर आगे भेजता है तथा वह किसी अन्य को आगे धकेलता है। इस क्रिया को चेन रीएक्शन कहते

हैं। इस रीएक्शन से अत्याधिक ऊर्जा उत्पन्न होकर सारे वातावरण को अग्नि रूप बना देती है। इसे एटम बम न्यूक्लीयर बम का चलना कहा जाता है। एटम बम क्या कर सकता है? यह हम सभी को ज्ञात है।

हमें यह भी पता चला है कि किसी योजनाबद्ध ढंग से उत्पन्न हुई ऊर्जा को मानव जीवन की सेवा में भी लगाया जा सकता है तथा लगाया जाता है।

यदि तुम पदार्थ के अति सूक्ष्म परमाणु की हरकत को चेतना नहीं कहना चाहते तो कोई हर्ज नहीं, तुम हरकत ही कहे जाओ, परन्तु साथ ही साथ यह भी सोचो कि इस हरकत के रहस्य को जानने के लिए तथा जान कर अपनी सेवा एवं अपने विनाश हेतु प्रयोग करने के योग्य बनने के लिए जीवन को कितनी चेतना का विकास करना पड़ा है तथा इस विकास की क्रिया में जीवन ने कितने दुख एवं कष्ट झेले हैं। विकास के इस इतिहास से अनजान होना सूझबूझ, सहृदयता, संवेदनशीलता एवं विद्वता में अधूरापन है। परिपूर्णता हमारा उद्देश्य नहीं है, परन्तु अधूरेपन का गौरव भी हमें शोभा नहीं देता।

मैंने कालेज में साईंस नहीं पढ़ी। इसलिए संभव है अणु, परमाणु, न्यूक्लियस, इलैक्ट्रोन, प्रोटोन, फिशन एवं ऊर्जा की बात करते-करते मैं, किसी तरह से अथवा कई प्रकार से अधूरा रह गया हूंगा। अपने इस अधूरेपन का मुझे कोई गौरव नहीं, मैं इसे पूर्णता में बांटना चाहूंगा तथा प्रत्येक सहायता के लिए धन्यवादी हूंगा। मुझे विज्ञान के संबंध में और जानने की लगन है, क्योंकि मैं अपने चौगिर्दे के जीवन को विज्ञान एवं तकनीकी के साथ ओतप्रोत देखता हूं। आधुनिक मानव सुख, सुरक्षा, सहायता, स्वास्थ्य एवं सुंदरता के लिए श्वास-श्वास विज्ञान का ऋणी है। साईंस अपनी सेवाओं की एवज में 'सिजदे' नहीं मांगती, केवल सूझबूझ का विकास मांगती है, क्योंकि यह विकास की उपज भी है तथा विकास की वर्धक भी। साईंस की ओर से उदासीन होना कृत्घन होना है।

इस हरकत रूप चेतना अथवा चेतना रूप हरकत ने ही हलके एवं भारी एटमों के फिशन अथवा फ्यूशन (Fusion) के द्वारा अरबों वर्ष पूर्व, हमारे सूर्य एवं इसके समस्त परिवार का सृजन किया था। हमारे सूर्य में एवं ब्रह्मांड के अन्य सभी सूर्यों में यह फिशन एवं फ्यूशन की क्रिया अभी तक जारी है। इस क्रिया की कृपा से हमारे सूर्य का पदार्थ ऊर्जा में परिवर्तित होता रहता है तथा यह ऊर्जा रोशनी एवं गर्मी के रूप में हमारी पृथ्वी के जीवन की जननी बनी हुई है। कई करोड़ वर्षों में हमारी पृथ्वी, जो पहले सूर्य जितनी ही गर्म थी, इतनी सी ठंडी हो गई कि इस पर फिशन एवं फ्यूशन की क्रिया बंद हो गई तथा यह पवन में लपेटी एवं पानी के साथ नहाए जाने से पेड़ पौधों, कीड़े-मकौड़ों, मछलियों-कछुओं एवं पशु-पक्षियों को जन्म देने के योग्य हो गई। यह सब कुछ कैसे हुआ? यह आधुनिक वैज्ञानिकों को पूर्ण विस्तार के साथ पता है। इस विस्तार को जीवन के विकास का इतिहास कहा जाता है तथा यह पौराणिक नहीं, अपितु प्रमाणों की सहायता के साथ साक्षात की जाने वाली रासायनिक एवं भौतिक क्रिया है।

जिस जीवन की अनेकरूपता आज विस्मयकारी आकार-प्रसार धारण कर चुकी है। उसका प्रारंभ पानी में एक कोषाणु (कोशिका-cell) से आरंभ हुआ माना जाता है। इस कोषाणु रूप जीव को एलजी (algae) कहा

जाता है। एक कोशिका का बना हुआ यह जीवन पानी के ऊपर उत्पन्न होने वाला जाला अथवा समुद्री घास (Seaweed) होता है। इस जीव में भोजन पाचन, एवं प्रजनन आदि का कोई प्रबंध नहीं होता। यह सूक्ष्मदर्शी द्वारा देखे जा सकने वाले एक कोषाणु (कोशिका) से लेकर अनेकों मीटर लंबे आकार वाला होता है। इस एलजी से चौरासी लाख योनियों का प्रसार किस प्रकार हो गया? इस प्रश्न का उत्तर डार्विन एवं उसके पदचिन्हों पर चलने वाले जीव विज्ञानियों के पास है, जिसे वे पूर्ण विस्तार के साथ अच्छी तरह से दृढ़ता के साथ तुम्हारे सम्मुख रख सकते हैं। शर्त यह है कि आप क्या, क्यों और कैसे हुआ, जानने के प्रयत्न को भटक जाना न मानते हों।

एलजी में किसी ज्ञान-इंद्री अथवा कर्म-इंद्री का अस्तित्व नहीं था। इससे आगे यह विकास होना आरंभ हो जाता है। मेरा अनुमान है कि प्रथम ज्ञान-इंद्री स्पर्श होगी (?) तथा यह ज्ञान-इंद्री पहले-पहल पेड़-पौधों में विकसित हुई होगी। वायु, पानी, गर्मी, सर्दी एवं रोशनी के स्पर्श को पेड़-पौधे भली-भांति महसूस करते हैं।

इससे आगे विकासवाद अण्डज, जेरज, सेतज एवं उत्भुज के तरीकों से नाना प्रकार के जीवों का विकास करता गया। किसी जीवन-श्रेणी में एक, किसी में दो एवं किसी में तीन, चार एवं पांच ज्ञानेन्द्रियों एवं कर्म इंद्रियां विकास करती चली गई। भौगोलिक परिस्थितियों एवं जीवन का मोह मिल कर जीवन की चेतना को प्रवृतियों, संवेदनाओं, चिंतन, कल्पनाओं एवं विश्वासों का धारक बनाते गए। जीवों के आकार कम हुए, बढ़े एवं कई जीव-श्रेणियां लुप्त होती रही। कई नई उत्पन्न हुई। अंत मे मानव शरीर का विकास हुआ। कुछ पंक्तियों में कही गई यह बात कई करोड़ वर्षों के परिणामस्वरूप प्रवाण चढ़ी थी।

मानव के पास दिमाग था तथा अपने दिमाग की बौद्धिकता के अनुसार पूरी सफलता एवं सरलता के साथ प्रयोग की जा सकने वाली पांच ज्ञानेन्द्रियों एवं पाँच कर्म-इंद्रियों के साथ-साथ भाषा भी थी। मानव का आकार भी न तो अत्यधिक बड़ा एवं न ही अत्यंत छोटा था। मानव विकासवाद का बेहतरीन चुनाव था। वह प्रकृति की भूल एवं सुधार अथवा प्रयत्न एवं भूल (Trial and Error) की विधि में से विकसित हुआ सुयोग्य रूप था। इस रूप में किसी प्रकार का सुधार करने की आवश्यकता प्रकृति ने कभी कम ही कल्पना की है। अब विकासवाद की बुनियादी आवश्यकता थी। इस रूप को संवारने-श्रृंगारने की विकासवाद के इस कार्य में उस द्वारा सृजित किया हुआ मानव ही सहायक था।

करोड़ों वर्षों के भौतिक विकास में से उपजे हुए मानव की चेतना भी उसके साथ-साथ विकास करती हुई, भौतिक परिस्थितियों की सृजना होने के कारण बुनियादी तौर पर भौतिक थी तथा भौतिक होने के कारण वैज्ञानिक थी। वैज्ञानिक चेतना का स्वामी मानव अपनी बुनियादी वैज्ञानिक (अथवा भौतिक) सूझ-बूझ की अगुवाई में चलता हुआ जंगली शिकारी मानव से किसान बन गया।

किसान बने मानव में लाखों वर्षों के जंगली जीवन-अनुभव का जंगलीपन मौजूद था। इस जंगलीपन ने उसे अपने जैसे मानव समूहों के साथ, भोजन एवं उपजाऊपन भूमि के लिए लड़ना सिखाया। मानव की जिस सांसारिक अथवा

लौकिक सूझबूझ ने उसे निरोल पशु से मानव एवं मानव से किसान बनने की प्रेरणा दी थी, वह सूझ-बूझ यदि सांसारिक रहती तो उसने भौतिक भी रहना था। यदि भौतिक रहती तो उसने अपने लौकिक जीवन के लौकिक महत्व को पहचानने के योग्य बनकर इसकी समस्याओं के लौकिक हल ढूंढने का प्रयत्न करना था। वह हल लौकिक होने के कारण भौतिक एवं सामाजिक होने थे।

काश, ऐसा होता!

ऐसा न हुआ। अर्ध-सभ्य किसान ने, किसी कारण, इस दृश्यमान दुनिया से बाहर किसी अदृश्य जगत् की कल्पना कर ली। इस कल्पना की उत्पत्ति उसने प्राकृतिक शक्तियों के रहस्य से अनभिज्ञ होने के कारण की थी अथवा मृत्यु की भयंकरता ने यह कल्पना करवाई थी अथवा कुछेक चतुर लोगों ने किसानी कार्य की कठिनाई एवं मशक्कत से बचे रह कर अच्छा-खासा खाने की योजना के रूप में यह विश्वास लोगों में फैलाया था अथवा ये सभी कारण एक-दूसरे के सहायक एवं पूरक बने थे-कुछ कहा नहीं जा सकता, परन्तु यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि अर्ध-सभ्य मानव की अर्ध-सभ्य मानसिकता में, इस लोक से परे, किसी परलोक का अर्ध-सभ्य विश्वास उत्पन्न हो गया। धीरे-धीरे बादशाहियों एवं दर्शन के रचयिता बने हुए मनुष्य की समझदारी ने परलोक के अर्ध-सभ्य विश्वास को मानव समाजों के राजनैतिक व्यवस्थाओं के पक्केपन का साधन बना लिया।

इस प्रकार मानव की अपनी बुद्धि ने उसकी बुनियादी चेतना के वैज्ञानिक विकास का रास्ता रोक लिया।

शक्तिशाली सेवाओं के सहारे विशाल सल्तनतों का निर्माण होता गया। विशाल सल्तनतों के प्रबंधों की सुविधा के लिए राज्य के धर्मों एवं धर्म स्थलों का निर्माण होता गया। यह धर्म सर्वव्यापक, सर्वज्ञ एवं सर्वशक्तिमान, एक ईश्वर के भेजे हुए थे। इन्हें भेजने वाला एवं इन्हें यहां लाने वाले अज्ञेय थे। अकल से परे के थे। कोई बुद्धिमता इन तक पहुंच नहीं थी सकती, किसी लोक भाषा की इन तक पहुंच नहीं थी। प्रत्येक बुद्धि एवं बुद्धि से उत्पन्न हुई बुद्धिमता कुफर करार दी जाने लगी। कूड़ दुनिया में सत्य के लिए कोई स्थान न रहा। वह परलोक सिधार गया तथा वहां से अंतर दृष्टि के वायुयान के द्वारा, कभी-कभी पृथ्वी पर आकर, पृथ्वी के जीवन में पड़े हुए परम सत्य पर आधारित बंटवारों में, एक नए परम सत्य पर आधारित एक और नया बंटवारा पाकर पुनः परलोक में अपने ठिकाने पर जाकर विराजता रहा।

जीवन सांसारिक है, दुनियावी है, भौतिक खेल है। इसकी समस्याएं सांसारिक हैं। सामाजिक हैं, दुनियावी हैं, भौतिक हैं। इन समस्याओं का हल पृथ्वी से परे किसी पारलौकिक परमात्मा के पास नहीं, मनुष्य के पास है। मनुष्य की सूझ एवं समझदारी के पास है। पदार्थ के रहस्यों को जानकर इसमें छिपी हुई ऊर्जा को अपने जीवन के लिए सुख, सुविधाएं एवं सुंदरताएं उत्पन्न करने के कार्य में लगाने में है।

यदि पारलौकिक परम सत्य ने कूड़ दूनिया की कूड़ समस्याओं का हल सुदर्शन चक्र के परम सत्य में स्थित न किया होता, किसी भगवती-भवानी के वरदान पर आधारित न बताया होता तो संभव है कि मानव युद्धों, धर्म युद्धों, जिहादों के 'शुभ कर्मों' में न उलझता। यदि उलझता तो शायद एक-दो-तीन -चार बार अपनी भूल दोहरा कर इसकी

असफलता को जान जाता। परन्तु यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानि भवति', तब-तब ही दुष्टों का सर्वनाश करने के लिए 'संभवानि युगे युगे' के वायदे के द्वारा दृढ़ करवाए गए पारलौकिक परम सत्य ने मनुष्य के मन के अंदर की बारम्बरता की आयु लंबी किए जाने का कमाल जारी रखा है तथा पदार्थ के रहस्यों का जानकार मनुष्य सुंदरताओं का सृजन करने का सामर्थ्य रखने वाली परमाणु शक्ति को जीवन का विनाश करने वाली परमाणु बमों की शक्ति में परिवर्तित करने के लिए मजबूर हुआ है।

किसान बने हुए जंगली शिकारी मानव के जंगलीपन को मनुष्य ने अपने अनुभव की रोशनी में देख-जांच कर अपने सांसारिक जीवन की जरूरतों की मजबूरी के अनुसार सुधार कर लिया था। समस्त विकासवाद भूल एवं सुधार (Trial and error) की सीध में चलता आया था। यदि मानव का सामाजिक विकास भी इसी सीध में चलता रहता, तो यूनानी परमाणु वादियों (लुसिपस, भीमाक्रीटस एवं एपिक्यूरिस इत्यादि, जोकि प्लेटो के समकालीन थे) के प्रभाव के कारण कैप्लर, कॉपरनिक्स, गैलीलियो, न्यूटन एवं डार्विन जैसे लगभग चार हजार वर्ष पूर्व पैदा हो सकते थे। यदि ऐसा हो गया होता तो 'कभी कोसों लंबा यह भटकाव' न होता।

-हिन्दी अनुवाद-
बलवंत सिंह, लैक्चरार

'' मूर्खों को उन जंजीरों से आजाद करवाना मुश्किल है जिनकी वे पूजा करते हों।''
-वाल्टेयर (1694-1778)

ब्रिटेन में मानववादी बहुसंख्यक

पहली नजर में यह बात आश्चर्यजनक, यहां तक कि अविश्वसनीय भी लग सकती है, पर यह सत्य है कि हाल ही में किए गए ब्रिटिश सोशल एटीट्यूट्स सर्वे के परिणाम मे पाया गया है कि 2014 में ब्रिटेन की कुल आबादी के 50.6 प्रतिशत ने अपने-आपको अधार्मिक और 41.7 प्रतिशत ने ईसाई बताया है। शेष 7.7 प्रतिशत अन्य धर्मों में विश्वास करते हैं। यह ठीक है कि सभी धर्महीन लोग मानववादी नहीं होते पर वे आमतौर पर धर्म निरपेक्ष तो कहे ही जा सकते हैं और उनमेंसे अधिकांश विवेकवादी, स्वतंत्र विचारक, मानववादी और नास्तिक भी होते ही हैं। यह संसार में और खासतौर से यूरोप में बढ़ते हुए बुद्धिवाद और निरंतर विकसित होती हुई वैज्ञानिक दृष्टि का ही परिणाम है कि ब्रिटेन में सदियों से फूलता-फलता ईसाई धर्म ही अल्पमत में आ गया है। प्रबोधन इसी गति से बढ़ता रहा और उसके मार्ग में कोई बड़ी बाधा नहीं आई। परमाणु हथियारों और पर्यावरण विनाश ने उसे इस बीच समाप्त नहीं कर दिया तो अगले 50 साल में यह संसार सभी रंगों, नस्लों और देशों के लोगों के लिए समता, स्वतंत्रता और भाईचारे में भरा एक सचमुच मानवीय संसार बन जाएगा, इसमें कोई संदेह नहीं है।

-डा0 रणजीत-

वेदों का सैंकड़ों बार किया गया जाप भी अग्नि को ठण्डा नहीं कर सकता''
शंकर (8वीं शलाब्दी)
(एक भरतीय दार्शनिक

विशेष रिपोर्ट

आक्सफोर्ड में विश्व मानववादी सम्मेलन

इस वर्ष अगस्त 8 से 10 के मध्य ब्रिटेन के ऐतिहासिक विद्यालय नगर आक्सफोर्ड में ब्रिटिश मानववादी संघ के आमंत्रण पर एक विश्व मानववादी सम्मेलन सम्पन्न हुआ। सम्मेलन के मुख्य सत्र 1668 में निर्मित इस विश्वविद्यालय के विशाल सभा स्थल सेल्टोनियन थिएटर में आयोजित किए गए सम्मेलन में संसार के 50 देशों के लगभग एक हजार मानववादी, विवेकवादी, मुक्त विचारक तथा नास्तिक एकत्र हुए और उन्होंने संसार में बढ़ते हुए धार्मिक आतंकवाद, अतिवाद, बुनियादि परस्ती, वैचारिक कट्टरता, मुक्त चिंतन के अमानुषिक दमन आदि समस्याओं पर गंभीर विचार-विमर्श किया। विचार और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता सम्मेलन का मुख्य विषय था। अंधविश्वास, जादू, टोने, तंत्र-मंत्र, लिंग-विषमता, धार्मिक-तानाशाही आदि के खिलाफ संघर्षरत संसारभर के संगठन और व्यक्तियों तथा हाशिये पर रहने वाले दलितों, आदिवासियों और लैंगिक अल्पसंख्यकों को (एलजीबीटी) के प्रतिनिधियों ने भी अपनी समस्याओं पर विचार-विमर्श किया। भारत के भी अनेक मानववादी संगठनों ने इस सम्मेलन में शिरकत की। विजयवाड़ा के नास्तिक केन्द्र के डा. विजयम और विकास गोरा ने विमर्श में सक्रिय भूमिका अदा की।

सम्मेलन के पूर्ण सत्र को ब्रिटिश मानववादी संघ (बीएनए) के उपाध्यक्ष ए.सी. ग्रेलिंग ने संबोधित किया। उन्होंने स्वतंत्रता और विशेष रूप से अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर विचार करते हुए कहा कि नागरिक स्वाधीनता में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता एक बुनियादी भूमिका अदा करती है, क्योंकि इसके बिना उन्हें स्थापित और रक्षित नहीं किया जा सकता। फिर भी यह कोई निर्बाध स्वतंत्रता नहीं है, इसलिए कब और कहां इसे न्यायोचित ढंग से सीमित किया जा सकता है और ये सीमाएं क्या हैं आदि सवाल गंभीर और कठिन हैं।

सम्मेलन में विभिन्न विषयों पर अनेक समानान्तर सत्र आयोजित किए गए। ''शोरगुलः इस मूर्खता के प्रति सहनशीलता कैसे हमारे विमर्श को सड़ाती है, पर पी.जैड माईयर्स, डेविड सिल्वर मैन और सारा पासमोर ने अपने विचार व्यक्त किए। इसी तरह धर्म के बारे में मुक्त भाव से सोचना और बोलना पर फ्रांसेस्का स्टावरकोपाउलू टॉम होलेण्ड और जो विलियम्स ने *'विज्ञान और दर्शनः जांच-पड़ताल के लिए कौन सा प्रारूप ज्यादा अच्छा है,'* पर पटर एटक्सि, स्टीवेन लॉ और पवन धालीवाल ने, ''घृणा की घोषणाएं'' पर अनाही अयाला लकूकी, जेकब मचन्गामा और मटचेरी ने तथा' 21वीं सदी का प्रबोधनः मानववादी बिरादरी की रचना' पर ग्रेग एप्सटियन इसाबेल रूसो, रॉय स्पेक्खट और एलिस फुल्लर ने अपने सुचिन्तित विचार प्रस्तुत किए।

दूसरे पूर्ण सत्र में विचारणीय विषय था *'21वीं सदी का प्रबोधनः खतरे और वादे'* और वक्ता थे हैनर बिलेफेल्ड, जो ग्लानविले, फ्रांसेस्का स्टावर को पाउलू, आन्द्रे कॉप्शन और समीरा अहमद। इन विद्वानों ने इस बात पर गंभीर विचार-विमर्श किया कि आज की युग चेतना को उदार रूझानों और नीतियों के पक्ष में कैसे प्रभावित किया जाए। 21वीं सदी के प्रबोधन के स्वरूप और

18वीं सदी के प्रबोधन से अलग इसकी विशेषताओं पर चिंतन हुआ।

9 अगस्त के संयुक्त सत्र का विषय था : विरोधी परिस्थितियों के विरुद्ध। इस सत्र में गुलुलाई इस्माईल, आसिफ मोहिउद्दीन, एग्नेस ओजेरा और निकरोस ने पाकिस्तान, बांग्लादेश और अफ्रीका में अपने उन संघर्षों की कहानियां सुनाईं, जो उन्हें विपरीत और कठिन परिस्थितियों में उदार मानववादी मूल्यों की रक्षा के लिए करने पड़े। एग्नेस ओजेरा युगांडा में एक मानववादी प्रोजैक्ट चला रहे हैं, आसिफ मोहिऊद्दीन बांग्लादेश में एक धर्म निरपेक्षतावादी ब्लॉग लिखते रहे, जब तक उसे प्रतिबंधित कर उन्हें गिरफ्तार नहीं कर लिया गया। गुलुलाइ इस्माईल उत्तर-पश्चिमी पाकिस्तान में धार्मिक उग्रतावाद के विरुद्ध लड़कियों की शिक्षा और जागरूकता के लिए लड़ते रहे हैं।

9 अगस्त के समानान्तर सत्रों में 'धमकाए गए, पर चुप नहीं करवाये जा सके' पर बाबू गोगिनेनी, लियोइग्वे, वेलेन्तिन एब्गोट्सपोन, बाब चर्चिल और समीरा अहमद, चलो सैक्स पर बात करें, पर माईलेज जॅकमैन जोए मार्गोलिस, लौरी पेनी और मार्टिन राउसन, धर्म और विश्वास की स्वाधीनता पर हमले पर हाइनर बाइएलेफेल्ट, मलेइहा मलिक और रॉय ब्राउन ने अपने विचार व्यक्त किए तथा सिमोन सिंह, सोनाली राउट्रे और एलिजा गोरोया ने अपनी-अपनी केस स्टडीज प्रस्तुत की बाबू गोगिनेनी ने नेतृत्व प्रशिक्षण पर एक कार्यशाला आयोजित की और बांग्लादेश की निर्वासित लेखिका तस्लीमा नसरीन अपने संघर्षों के बारे में बोली।

10 अगस्त के समानान्तर सत्रों में अनाही अमाला, जेकब मचनगामा और मटचेरी 'घृणा की घोषणाओं' पर, मेगी अडिएटी, टाम कोप्ले ए.एम. केरी मेकार्थी एम.पी., जूली पर्नेट और नोमी फिलिप, 'राजनीति में मानववाद' पर, हिसाम अल्मीरात, अनाही अयाला लकूकी और रिचर्ड बर्टल, 'डिजिटल युग में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता' के अवसर पर जनेट रैडक्लिफ और रिचर्ड नार्मन, प्रबोध का चिंतन और धर्म की विरासत पर तथा मटचेरी, एलिजाबेथ ओकेसी, पिगरे अनीउड और डेविड पोलोक, 'अंतराष्ट्रीय राजनीति में मानववादी' विषय पर बोले। नोबेल पुरस्कार विजेता बोल सोमिन्का सम्मेलन में आ नहीं सके। पर उनका ध्वनि संदेश सम्मेलन में सुना गया। समापन सत्र में अंतर्राष्ट्रीय मानववादी नैतिक संघ (आइएचईयू) की अध्यक्षा सोन्या एगेरिक्स ने धन्यवाद देते हुए कहा कि यहां कुछ बहुत ही खतरनाक स्थितियों में बहादुर मानववादियों द्वारा किए गए संघर्षों की प्रेरक कहानियां सुन कर मैं रोमांचित हो उठी हूं। इस सम्मेलन के माध्यम से संघ दुनिया के अनेक युवा मानववादी संघों के साथ सबंधों को प्रगाढ़ कर सका है।

2014 के इस विश्व मानववादी सम्मेलन ने एक घोषणा सर्वसम्मति से पारित की, जिसमें अन्य बातों के अलावा कहा गया कि यह एक सार्वभौम और सार्वकालिक सत्य है कि विचार और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता मानव जाति की सांस्कृतिक समृद्धि, उसके पुष्पन-पल्लवन के लिए अत्यंत आवश्यक परिस्थिति है। विचार और विश्वास की स्वतंत्रता का अधिकार एक और सबके लिए समान अधिकार है। संयुक्त राष्ट्र द्वारा उद्घोषित सार्वभौम मानवाधिकारों की 18वीं धारा में अंकित मानवाधिकार एकाश्म और अविभाज्य है, संसार के सभी मनुष्यों पर समान रूप से लागू होता है और उनके सभी प्रकार के वैयक्तिक विश्वासों की, वे धार्मिक हों या धर्म विरोधी, रक्षा करता है। उसी घोषणा पत्र की धारा 7 के अनुसार कानून के सामने सब बराबर हैं और सबको बिना किसी भेदभाव के

कानून का संरक्षण हास्लि है इसलिए किसी भी व्यक्ति को कभी भी किसी विश्वास में या उससे बाहर धकेला नहीं जा सकता। विचार की स्वतंत्रता में अपने विश्वास को बनाए रखने, विकसित करने, अभिव्यक्त करने और यहां तक कि छोड़ देने का भी अधिकार निहित है और इसमे ंकिसी की जोर-जबरदस्ती मान्य नहीं है। किसी भी राज्य या धर्म की विचारधारा के अनुकूल चलने का दबाव उस राज्य या धर्म की तानाशाही है और यह अवैध और अमान्य है। ऐसे सभी कानून जो किसी विश्वास के अनुकूल चलने का आदेश देते हैं या उसे जुर्म ठहराते हैं-समाप्त किए जाने चाहिएं। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का अधिकार एक वैश्विक अधिकार है। मानव अधिकारों के सार्वभौम घोषणा पत्र की धारा 19 कहती है कि इन अधिकारों में सभी संचार माध्यमों से सूचना और विचार तलाशने, पाने और देने का असीम अधिकार शामिल है। किसी संकुचित राष्ट्रीयता या राज्य की सुरक्षा के नाम पर वैश्विक मानवीय समाज को हमारी नवप्राप्त संचार तकनीकों, हमारे मास मीडिया, सोशल मीडिया और ट्रांसनेशनल नेटवर्को के लाभों से वंचित नहीं किया जा सकता। इसके विपरीत राष्ट्र राज्यों को चाहिए कि वे अपने लोगों को इस भूमंडलीय संवाद में शामिल होने की सुविधाएं देने के लिए समूचित संसाधन जुटाएं।

किसी को नाराज होने से बचने का अधिकार नहीं है और न अपनी राय के खिलाफ किसी को बोलने से रोकने का ही अधिकार है। हरेक को अपने विश्वास रखने की स्वतंत्रता है, का मतलब यह नहीं है कि दूसरों का कर्त्तव्य है कि उसके विश्वास का सममान करें। किसी के मतवाद के विरोध की अभिव्यक्ति चाहे वह व्यंग्य, उपहास या भर्त्सना के रूप में हो, किसी विचार-विमर्श के लिए अत्यंत आवश्यक है। इस पर किसी भी प्रकार की रोक मानवाधिकारों की घोषणा की धारा 29 के अनुरूप ही लगाई जा सकती है अर्थात अन्य लोगों के अधिकारों की रक्षा करने के संदर्भ में ही।

हमें आपत्तिजनक लगने वाली किसी की अभिव्यक्ति का सही जवाब यही है कि हम उसका उत्तर दें, आलोचना करें, निंदा करें न कि उसके खिलाफ हिंसा पर उतर आएं, उसे प्रतिबंधित करें। ये प्रतिक्रियाएं अवैध हैं। ईश निंदा के नाम पर भाषिक अभिव्यक्तियों का अपराधीकरण करने वाले सारे कानून रद्द किए जाने चाहिएं। किसी के विश्वासों या भावनाओं को आघात पहुंचाने के नाम पर अभिव्यक्ति की मानवीय स्वतंत्रता के अधिकार पर रोक नहीं लगाई जा सकती।

-संकलन, अनुवाद और प्रस्तुति : रणजीत

जकड़बंदी

-कंवल भारती

हमारे अपमान और विनाश की संस्कृति रचने के बाद
जब उसे समझने और बोलने की
हमारी बारी आई,
तो तुमनपे धाराएँ बना दीं 153ए और 295ए
कि हम प्रतिरोध भी न कर सकें।
तुम्हें मालूम था कि
जहालत का जो जाल तुमने हमारे इर्द-गिर्द बुना था
हम उसे एक दिन तोड़ेंगे,
तो तुमने हमें जेल में डालने का पूरा इंतजाम कर लिया।
कर लो, अभी तुम्हारे ही दिन हैं,
अपनी सफलता पर रीझो
कि हमारे नायक भी तुम्हारे चरणों में बैठे हुए हैं।
उन्हें बड़ी सी कोठी चाहिए, बड़ी सी कार
बड़ा सा संरक्षण....और भी बहुत कुछ बड़ा-बड़ा सा।

बाबाओं के काले कारनामे

पी में एक और बाबा दुष्कर्म के आरोप में गिरफ्तार

सीहोर-मध्य प्रदेश के सीहोर जिले में एक स्वयंभू साधू द्वरा एक विवाहित महिला को बंधक बनाकर उसके बलात्कार करने का सनसनीखेज मामला सामने आया है। पुलिस ने 65 वर्षीय स्वयंभू साधू महेंद्र गिरि उर्फ टुन्नू बाबा को एक 24 वर्षीय विवाहित महिला को चार माह से ज्यादा समय तक बंधक बना कर उसके साथ बलात्कार करने के मामले में गिरफ्तार किया है।
पुलिस की टीम ने मंगलवार को टुन्नू बाबा के नीलखंड गांव स्थित आश्रम पर छापा मारकर पीड़ित महिला को मुक्त कराया और आरोपी बाबा को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस ने बताया कि महिला का पति और सास भी आश्रम में ही रहते थे और दोनों बलात्कार के मामले में बाबा को सहयोग कर रहे थे।

उन्होंने बताया कि महिला की इसी साल मई में विश्राम बंजारा से शादी हुई थी। शादी के कुछ दिनों बाद से ही आरोपी बाबा महिला का शारीरिक शोषण कर रहा था। उन्होंने बताया कि आरोपी टुन्नू बाबा को गिरफ्तार कर उसके खिलाफ बलात्कार, अवैध तरीके से बंधक बनाने और अपराधिक धमकी देने का मामा दर्ज किया है।

-एजेंसी

झाड़फूंक के बहाने वृद्धा से गहने ठगे

कुरुक्षेत्र-झाड़फूंक से पत्थरी का उपचार क रने का झांसा देकर अस्पताल आई वृद्धा से एक युवक गहने लेकर फरार हो गया। शोरगुल मचाने के बाद लोगों को बुजुर्ग महिला ने घटनाकी जानकारी दी। समाचार लिखे जाने तक पुलिस को इस बारे में सूचित किया गया था। बारना निवासी सरबती पत्नी रामकिशन ने बतया कि उसे पथरी की दिक्कत है।

वह उपचार के लिए एलएनजेपी अस्पताल आई थी। यहां उसे एक युवक मिला। उसने बताया कि वह झाड़फूंक कर पथरी का इलाज कर देगा। यह बुजुर्ग महिला उसकी बातों में आ गई और उसने उपचार के लिए कहा।

इस पर युवक ने पहले महिला को आभूषण निकालने को कहा। महिला ने कानों से टॉप्स, अंगूठी व गले में पहनी तबीती निकाल कर युवक को दे दी। गहने लेने के बाद महिला को युवक ने आंखें बंद करने को कहा और फिर वहां से फरार हो गया। इसके बाद जब महिला ने शोर मचाया और लोगों की भीड़ एकत्रित हो गई। महिला ने आपबीती बताई। वहीं दूसरी ओर ज्योतिसर से आई बिमला पत्नी रामनाथ गुर्जर के अस्पताल से 300 रुपए चोरी हो गए। मामले में पुलिस को सूचना दिए जाने की खबर नहीं आई थी। ***अमर उजाला 1-8-2014***

★★

धोखे से गहने हड़पे, केस दर्ज

कुरुक्षेत्र– गहने हड़पने के मामले में पुलिस ने दो लोगों पर केस दर्ज किया है। पुलिस को दी शिकायत में पटेल नगर निवासी शकुंतला देवी पत्नी रिषी कुमार ने बताया कि वह 30 जुलाई को सनातन धर्म मंदिर में पूजा करने के लिए जा रही थी कि रास्ते में एक अन्जान व्यक्ति ने महिला से व्यास का सत्संग होने की बात पूछी और उसने मना कर दिया। थोड़ी देर बाद एक अनजान महिला आई और कहने लगी कि यह व्यक्ति बहुत बुद्धिमान है और किसी से नहीं बोलता, आप से कैसे बोल रहा था। महिला धोखे से शकुंतला को पटेल नगर में पार्क के पास ले गई। उसी समय वह व्यक्ति भी वहां आ जाता है। अनजान महिला ने अपने गहने उतार कर उस वक्ति को दे दिए और कहने लगी कि हमारा कल्याण करो। उसी समय शकुंतला ने भी गहने उतार दिए। थोड़ी देर बाद गहने एक अखबार में व रूमाल में बांध कर दे दिण और कहा कि घर जाकर रात के समय खोलना। थोड़ी दूर जाकर जब शकुंतला ने गहने खोल कर देखे तो गहने नकली निकले। जिला पुलिस ने दोनों आरोपियों के खिलाफ मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी ह

–अमर उजाला 1–8–2014

तांत्रिक के घर में बंधक मिला युवक

जयपुर पुलिस ने छापामारी कर युवक को छुड़ाया

घरौंडा। यमुना के साथ सटे गाव में तांत्रिक के घर में बुधवार सुबह राजस्थान पुलिस ने छापामारी कर एक युवक को तांत्रिक के कब्जे से छुड़ाया। युवक करीब डेढ़ साल से तांत्रिक के कब्जे में था। राजस्थान पुलिस युवक को लेकर राजस्थान रवाना हो गई है। इस मामले में घरौंड़ा पुलिस तांत्रिक से पूछताछ कर रही है। बुधवार सुबह करीब 8.30 बजे राजस्थान के जिले जयपुर की थाना परागपुरा पुलिस ने घरौंडा के गांव गढ़ीभरल में घरौंडा पुलिस के साथ दबिश दी। परागपुरा थाने के हेड कांस्टेबल रतनसिंह के अनुसार परागपुरा थाने के तहत आने वाले गांव दांतिल निवासी कैलाश ने अपने बेटे राजकुमार के लापता होने के रिपोर्ट दर्ज करवाई थी। मामले की जांच करने पर पता चला कि राजकुमार घरौंडा इलाके के एक गांव में तांत्रिक के कब्जे में है। इसके बाद हरियाणा पुलिस के सहयोग से गांव में छापामारी की और युवक को तांत्रिक के घर से बरामद कर लिया। युवक से पूछताछ की जा रही है कि वह तांत्रिक के पास कैसे पहुंचा।

संदिग्ध हालात में लापताः–राजकुमार के पिता कैलाश ने बताया कि उन्होंने अपने बेटे को उच्च शिक्षा दिलाई है। पढ़ाई के बाद गांव में ही स्कूल खुलवाया ताकि वह आसपास के गांव के बच्चों को शिक्षित कर सके। करीब डेढ़ साल पहले राजकुमार संदिग्ध हालात में लापता हो गया। उन्होंने बताया कि राजकुमार की मां का रो–रोकर बुरा हाल है।

तंत्र विद्या का झांसा देकर बनाया बंधकः– आरोप है कि तांत्रिक ने राजकुमार को तंत्र विद्या सिखाने का झांसा देकर अपने पास रख लिया। तांत्रिक राजकुमार से घर काम और खेती करवाता था। युवक को कहीं भी आने–जाने की अनुमति नहीं दी जाती थी। राजकुमार कि पिता ने बताया कि कुछ दिन पहले जब उन्हें पता चला कि उनका बेटा तांत्रिक के पास है तो वे उसे लेने आए लेकिन तांत्रिक ने धमकाकर वापस भेज दिया।

अमर उजाला 2.5.2013

बच्चों का कोना

पानी में भी कागज भीगता नहीं

जरूरी सामान :

पानी से भरी बाल्टी, कांच का ग्लास और कागज

इस तरह से करें :

कागज को गुचुड़-मुचुड़ करके ग्लास के तले में ठूंस दें।

सोचिए, अगर ग्लास का मुंह नीचे की ओर रखते हुए उसे पानी में डुबोया जाए तो क्या कागज गीला होगा।

अब उल्टा ग्लास पानी में डुबो कर बाहर निकाल लें। इस बात का ध्यान रखना है कि डुबोते या बाहर निकालते समय ग्लास तिरछा न होने पाए।

कागज को ग्लास से बाहर निका लें। क्या वह गीला हुआ? क्यों नहीं?

एक बार फिर उल्टा ग्लास पानी में डुबो कर थोड़ा तिरछा कर दें। ग्लास में से हवा के बुलबुले निकलते हैं और पानी भीतर जाने लगता है।

क्या ढक्कन नीचे जाएगा?

इस गतिविधि में यह बात फिर उभरती है कि हवा जगह घेरती है।

जरूरी सामान :

कांच का ग्लास, पारदर्शी प्लास्टिक बाल्टी और बोतल का ढक्कन।

इस तरह से करें :

बाल्टी में तीन-चौथाई ऊंचाई तक पानी भर लें और उस पर ढक्कन तैरा दें।

जरा सोचिए, यदि तैरते हुए ढक्कन के ऊपर, ग्लास को उल्टा पकड़ कर पानी में दबाया जाए तो क्या ढक्कन नीचे जाएगा यास वहीं तैरता रहेगा?

ग्लास का मुंह ढक्कन के ठीक ऊपर रखें और उसे पानीमें दबाएं। ढक्कन भी नीचे जाता है। पानी को ग्लास में जाने से कौन रोक रहा है?

अब एक पायदान आगे बढ़ते हैं। एक प्लास्टिक के ग्लास के तले में छेद बनाकर यही गतिविधि दोहराएं। इस बार ग्लास में पानी क्यों जाता है?

तर्कशील सोसायटी, हरियाणा की द्विमासिक बैठक सम्पन्न

तर्कशील सोसायअी हरियाणा की द्विमासिक बैठक व विज्ञान जागरूकता सैमीनार सैं धर्मशाला पूंडरी में आयोजित हुआ, जिसमें स्थनीय निवासियों के अतिरिक्त राज्य इकाईयों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। कार्यक्रम के प्रारंभ में कामरेड सतीश बहादुर ने जीव विकास की डार्विन द्वारा प्रस्तुत थ्योरी को आम भाषा में उपस्थित लोगों को बतलाया एवं सृष्टि की उत्पत्ति एवं जीवन विकास की थ्योरी को क्रम में रखते हुए सोसायटी की कार्य प्रणाली एवं इसकी ऐतिहासिक भूमिका को प्रस्तुत किया। डा. परमानंद ने मौसमी बिमारियों से बचने के लिए सलाहपूर्ण वक्तव्य रखा। उन्होंने बताया कि प्राकृतिक नियमों की जानकारी एवं उनके सिद्धांतों को जान कर ही वैज्ञानिक तरीके से चिकित्सा के महत्व को समझना चाहिए। उन्होंने बैक्टीरिया जनित रोग एवं उनके निदान को भी रेखांकित किया। राज्य कार्यकारिणी सदस्य बलजीत भारती ने तर्कशीलता को समझने के लिए अध्ययन को प्रमुख मानते हुए कहा कि देश-दुनिया के विज्ञान को समझना एवं मानवता हित में इस्तेमाल करना सच्ची तर्कशीलता है। साथी गोरा सिंह ने तर्कशीलता एवं अंधविश्वास को रेखांकित करे हुए कहा कि सफल जीवन का राज अंधविश्वास से मुक्त होने से ही संभव है।

तर्कशील पथ पत्रिका के सह सम्पादक बलवंत सिंह ने महान वैज्ञानिकों गेलीलियो, कापरनिक्स, बरूनो को याद करते हुए कहा कि महान वैज्ञानिकों की खोजों से ही आज हम सुख महसूस करते हैं। इसी प्रकार चिकित्सा विज्ञान में उन वैज्ञानिकों को स्मरण किया, जिन्होंने पोलियो, चेचक, हैजा जैसी बीमारियों से मुक्ति की दवाइयां खोजी। उन्होंने लोगों को धर्म प्रचारकों की बजाए वैज्ञानिकों के जीवन संघर्ष को समझना ज्यादा आवश्यक बताया। लव जिहाद जैसी खोखली बातों को खंडित करते हुए कहा कि यह एक भ्रामक शब्द है, वास्तविकता में समाज में सामाजिक ताने-बाने में सभी लोगों के बीच प्यार व शादी देखने को मिलती है।

प्रदेशाध्यक्ष राजाराम ने तर्कशीलता के सफर को एवं इस बीच कट्टरपंथियों से संघर्ष को रेखांकित किया एवं विपरीत परिस्थितियों में तर्कशील के झंडे को ऊंचा रखना सभी साथियों की मेहनत का परिणाम है। इस सभा के आयोजन में पूंडरी इकाई के सदस्यों कृष्ण, मान सिंह आदि ने सहयोग दिया।

स. भगत सिंह के जन्म दिवस के उपलक्ष्य में तर्कशील कार्यक्रम

दिनांक 29 सितम्बर 2014 को जिला पानीपत के शहर समालखा में युवा क्रांतिकारी संगठन के सहयोग से स. भगत सिंह के जन्म दिन के उपलक्ष्य में एक तर्कशील कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। इस कार्यक्रम में तर्कशील

पथ पत्रिका के सम्पादक बलवंत सिंह एवं गुड़गांव इकाई के प्रधान ईश्वर सिंह नास्तिक द्वारा जादू के विभिन्न ट्रिक दिखाए तथा बाद में उनकी वैज्ञानिक व्याख्या करके उनके रहस्यों के बारे में समझाया गया। कार्यक्रम पेश करते हुए बलवंत सिंह प्राध्यापक ने दुनियाभर के बाबाओं, संत-महंतों, तांत्रिक-मांत्रिकों, मुल्ला-मौलवियों इत्यादि जो स्वयं में दैवी शक्तियों का दावा करते हैं, के सम्मुख सोसायटी की 23 शर्तों की चुनौती का खुला ऐलान किया। उन्होंने स्पष्ट किया कि जब तक स. भगत सिंह की सोच पर आधारित भारत के समाज का निर्माण नहीं हो जाता, तब तक अंधविश्वासों का पूर्णतः खात्मा नहीं हो सकता, क्योंकि पूंजीवादियों द्वारा पोषित वर्तमान मीडिया अंधविश्वास का प्रचार-प्रसार करने का जी तोड़ प्रयत्न कर रहा है। देश का पूंजीपति शासक वर्ग आज जनता को अपने हकों के प्रति जागरूक न होने देने के लिए मिथ्या धारणाओं में उलझा कर रखना चाहता है। आज का शासक वर्ग आम जनता को मिथ्या प्रचार के बल पर या तो अंधविश्वासों

★★

महान् विचार

नास्तिकता व्यक्ति को ज्ञान, दर्शन, प्राकृतिक पवित्रता, कानून एवं सम्मान की ओर ले कर जाती है, ये सभी चीजें उसकी बाहर दिखाई देती नैतिक अच्दाईयों की संकेतक हो सकती हैं, यद्यपि धर्म इस में सम्मिलित नहीं होता.......परन्तु अन्धविश्वास इन सभी चीजों को उतार कर व्यक्ति के मस्तिष्क पर पूरी तरह से काबिज हो जाता है'

-सर फ्रांसिस बेकन

पशुओं के नेपाल निर्यात पर नोटिस

सुप्रीम कोर्ट ने पड़ौसी देश में गढ़ीमाई पर्व पर बलि के लिए पशुओं के नेपाल निर्यात पर रोक लगाने के लिए दायर याचिका पर आज केंद्र और बिहार, उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश और पश्चिम बंगाल सरकार को नोटिस जारी किए। न्यायमूर्ति जेएस खेहड की अध्यक्षता वाली खंड पीठ ने देहरादून निवासी गौरी मौलेखी की जनहित याचिका पर सरकार से जवाब मांगा है। याचिका में आरोप लगाया गया है कि नेपाल में हर पांच साल बाद होने वाले गढ़ीमाई पर्व के लिए बड़ी संख्या में पशुओं का गैर कानूनी तरीके से निर्यात किया जाता है। याचिका के अनुसार इस वर्ष 28 और 29 नवम्र को यह कार्यक्रम होना है। जनहित याचिका में आरोप लगाया गया है कि गढ़ीमाई पर्व पर दो दिन में पांचलाख पशुओं की बलि दी जाती है और इस अवसर पर बलि चढ़ाए जाने वाले पशुओं में 70 फीसदी से अधिक पशु बिहार, उत्तर प्रदेश और पश्चिम बंगाल से भारत-नेपाल सीमा से गैर कानूनी तरीके से लाए जाते हैं। याचिका में और भी मसले उठाए गए है

-दैनिक ट्रिब्यून, मार्च 14, 2014

''धर्म बहुत सी शरारतों को संदेहास्पद होने से छुपा लेता है।''

-क्रिस्टोफर मार्लो
(1564-1593)

केस रिपोर्ट

घर में हवन करवाया, मुसीबत को गले लगाया

-बलवंत सिंह, लैक्चरार

दःुख और सुख मानव जीवन का यथार्थ है। प्रायः सभी लोगों को सुख एवं दःुख के दौर में से गुजरना ही पड़ता है। सुख के समय के व्यतीत होने का तो पता ही नहीं चलता, परंतु दःुख का समय व्यतीत करना पहाड़ चढ़ने के समान कठिनाई से व्यतीत होता है। आस्थावान लोग प्रायः थोड़ी सी मुसीबत आने पर अपने-अपने इष्ट देवताओं, पीर पैगम्बरों, गुरुओं के आगे नतमस्तक होने लग जाते हैं। अपने देवी-देवताओं से मन्नतें मांगना शुरु कर देते हैं। संयोगवश किसी आस्थावान व्यक्ति का कोई कार्य सिद्ध हो जाए तो ऐसे लोग उस सफलता का श्रेय अपने देवी-देवताओं इत्यादि को देना शुरू कर देते हैं तथा अपने द्वारा मानी गई मन्नत को पहल के आधार पर पूर्ण करने का प्रयास करते हैं। चाहे उन्हें उस मन्नत को पूर्ण करने के लिए कर्ज भी लेना पड़े तो वे कर्ज लेने से भी नहीं हिचकिचाते।

अंधविश्वासी मानसिकता के कारण मन्नत पूर्ण करने के लिए कई लोग तीर्थ स्थानों की यात्राओं पर निकल पड़ते हैं। कई लोग पूजा पाठ करवाते हैं। कई लोग हवन एवं जागरण करवाते हैं। कई लोग अखंड पाठ अथवा अन्य किसी प्रकार का धार्मिक अनुष्ठान करवा देते हैं। ऐसे लोगों को इस प्रकार के धार्मिक आयोजन करवाने से कृत्रिम मानसिक तसल्ली मिल जाती है तथा उनके मन से एक प्रकार का बोझ उतर जाता है। पुजारी वर्ग द्वारा फैलाए गए भ्रम जाल के कारण साधारण लोग सदियों से ऐसी आडम्बर पूर्ण क्रियाएं करते आ रहे हैं। चाहे ऐसा करने से उन्हें अनेकों बार अत्यधिक नुक्सान भी उठाना पड़ जाता है।

ऐसा ही एक वाक्या सुरेन्द्र के परिवार के साथ भी हुआ, जहां पर मन्नत पूरी करने हेतु करवाए गए एक धार्मिक अनुष्ठान के कारण एक निर्धन परिवार के ऊपर मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ा। सुरेन्द्र का परिवार एक निर्धन परिवार है। गरीबी के बावजूद वे पति-पत्नी अपने दो वर्ष के पुत्र के साथ हंसी-खुशी से जीवन व्यतीत कर रहे थे। सुरेन्द्र रंग-रोगन का काम करता था।प्रायः वह अपने सहयोगियों के साथ शहर में कोठियों में रंग रोगन करने का ठेका ले लेता तथा उस मेहनत-मजदूरी से उनके घर का खर्चा आसानी से चला जा रहा था। कोठियों में रंग-रोगन करते हुए कई बार घर आने में उसे देरी भी हो जाया करती थी।

एक बार उन्हें किसी गांव में एक काफी बड़ी कोठी में रंग रोगन करने का ठेका मिल गया। उस कोठी का रंग रोगन करने पर उन्हें काफी-अच्छी बचत का अनुमान था। अतः उन्होंने खुशी से वह ठेका स्वीकार कर लिया। जिस गांव में उन्होंने अपने काम का ठेका लिया था, वहां पर सुरेन्द के मोबाईल की रेंज नहीं थी, परन्तु सुरेन्द्र ने यह सोच कर कि यदि उसे कोई जरूरत पड़ी तो उसके दूसरे सहयोगी के मोबाईल की रेंज वहां पर होने के कारण उसका वह प्रयोग कर सकता

था। पहले कुछ दिन तो उसे ऐसी कोई जरूरत नहीं पड़ी।

एक दिन अचानक सुरेन्द्र के पुत्र को चोट लग गई। उसकी पत्नी अनीता उसे लगातार फोन मिलाने का प्रयास करती रही, परन्तु रेंज में न होने के कारण उसका फोन नहीं मिल सका। अनीता के पास सुरेन्द्र के सहयोगी का फोन नंबर नहीं था। अतः वह परेशान होकर इधर-उधर भाग दौड़ करती रही। आस-पड़ौस में भी जब कोई सहायता करने वाला नहीं मिला तो वह भागती हुई मंदिर में चली गई तथा अपने पुत्र की सलामती के लिए मन्नतें मानने लगी। बच्चे को अधिक चोट नहीं लगी थी, परन्तु मां की ममता के कारण अनीता अपने बच्चे के सिर से निकला थोड़ा सा खून देख अत्यधिक परेशान हो गई थी। जब उसके पति का फोन नहीं मिला तो वह और अधिक परेशान हो गई और कोई सहारा न देख कर वह मंदिर में चली गई थी। उसका रोना-चिल्लाना सुन कर गली की कई महिलाएं वहां एकत्र हो गई। बच्चे की चोट को देखकर गली की एक महिला अपने घर से मरहम-पट्टी का सामान ले आई और उसे बच्चे के घाव को साफ करके उस पर पट्टी बांध थी। बच्चा रोते-रोते सो गया। शाम को जब सुरेन्द्र घर वापिस आया तो वह बच्चे की चोट के बारे में सुन कर उसे शहर के अस्पताल में ले गया। डाक्टर ने बच्चे को इंजैक्शन दे दिया और उसकी फिर से पट्टी कर दी। दवाई इत्यादि लेकर वे वापिस घर आ गए। दो-चार बार और पट्टी करवाने से बच्चे का जख्म ठीक हो गया। वे अपने नित्यप्रति के काम में व्यस्त हो गए।

उस घटना के काफी समय के बाद अचानक उनका पुत्र बीमार पड़ गया। वे शहर के अस्पताल से उसकी दवाई ले आए, परन्तु कई दिनों के बाद भी उसका बुखार पूरी तरह से ठीक नहीं हुआ। वास्तव में बच्चे को टाईफाईड हो गया था, जोकि पूरी तरह से ठीक होने में काफी लंबा समय ले लेता है और यदि ऐसे में इलाज में कोताही बरती जाए तो ऐसा बुखार पूर्णतः ठीक होने में कई महीने भी ले लेता है।

जब कई दिनों तक उनके बच्चे का बुखार ठीक नहीं हुआ तो अंधविश्वासी मानसिकता के कारण दवा-दारू के साथ बाबाओं की शरण में भी जाने लग गए। ऐसे में किसी बाबा ने पुच्छा के समय बता दिया कि उन्होंने किसी देवी-देवता की भूल वश कोई मन्नत पूरी नहीं की है। इसीलिए उन देवी-देवताओं के कोप का भाजन उनके बच्चे को होना पड़ा है। यह सुन कर अनीता को बच्चे के साथ हुई पुरानी दुर्घटना याद आ गई। उसे आत्मग्लानि होने लगी कि उन्होंने बच्चे को चोट लगने के समय मंदिर में मानी गई मन्नत अभी तक पूरी क्यों नहीं की? उन्होंने उक्त बाबा को यथायोग्य दान-दक्षिणा दी और उसका धन्यवाद करने लगे।

घर आकर वे बालक को लेकर मंदिर में गए और देवी-देवता की मूर्ति के आगे नतमस्तक होकर प्रायश्चित करने लगे। वहां उन्होंने प्रण किया कि अगले महीने वे अपनी मानी गई मन्नत के अनुसार अपने घर में हवन अवश्य करवाएंगे। बच्चे की दवा दारू नियमित तौर पर चल ही रही थी। अतः समय पाकर बच्चे का बुखार ठीक हो गया। यह सब उन्होंने अपने द्वारा की गई भूल के प्रायश्चित् का परिणाम समझा। अतः उन्होंने अगले महीने अपने घर में हवन करवाने की पूरी

तैयारी कर ली। उन्होंने एक पुजारी से मिल कर अपने घर में हवन करवाने की तरीख निश्चित कर ली।

पुजारी ने उनके घर में हवन करने के लिए जो-जो सामग्री उन्हें लिखवाई थी, उन सब का उन्होंने पूरा इन्तजाम कर लिया। निश्चित दिन पर वह पुजारी आया और उनके घर में हवन करने लगा। हवन के दौरान पुजारी ने उन्हें बताया कि उनके घर में एक बहुत भयंकर ओपरी-पराई चीज है, जोकि उनके किसी दुश्मन द्वारा काफी बड़ा खर्च करके किसी पहुंचे हुए मौलवी द्वारा उनके घर पर छुड़वाई हुई है। यह सुन कर पति-पत्नी दोनों ही बहुत डर गए।

अब पति-पत्नी दोनों को ही बहुत अधिक गुस्सा आने लग गया। उन्हें सपने में आदमी-औरतें डराने लग गए। अनीता को सोते समय दबाव पड़ने लग गया। उसके सारे शरीर में कभी कहीं तो कभी कहीं पर दर्द होने लग गई। जब वे दर्द वगैरा की दवाई लेती तो उसका दर्द और बढ़ने लग जाता। उसे हर समय ऐसा महसूस होता कि कोई व्यक्ति उसका पीछा कर रहा है। ऐसी हालत में सुरेन्द्र का काम भी लगभग छूटता चला गया। उनकी आर्थिक दशा भी खराब होती चली गई। जो थोड़ी बहुत जमा पूंजी थी, वह बाबाओं की चौकियों में हाजरी भरने तथा दान-दक्षिणा में समाप्त हो गई। आर्थिक दशा खराब होने से उनका गुस्सा एक-दूसरे पर अत्यधिक भड़कने लग गया और ऐसे ही गुस्से में सुरेन्द्र अपनी पत्नी पर हाथ भी उठाने लग गया।

जब बात ज्यादा बिगड़ गई और उनकी हालत अत्यधिक दयनीय हो गई तो उनके रिश्तेदारों को बीच-बचाव एवं सहायता के लिए सामने आना पड़ा। बाबाओं, तांत्रिकों, मुल्ला-मौलवियों, संत-महंतों व ओझाओं की शरण में जा-जाकर वे थक चुके थे। ऐसे में उनके एक रिश्तेदार ने जोकि तर्कशीलों द्वारा जनहित में किए जाने वाले कार्यों से परिचित था, उन्हें मनोरोग परामर्श केंद्र में मेरे पास भेज दिया।

मैंने उनसे उनकी सारी व्यथा सुनी तथा मैं इस नतीजे पर पहुंचा कि अंधविश्वासी मानसिकता के चलते उनके द्वारा अपने घर में करवाए गए हवन के समय उस धूर्त पुजारी द्वारा उन्हें डरा कर मोटी दान-दक्षिणा वसूलने के इरादे से कही गई बात कि उनके घर में बहुत बड़ी ओपरी-पराई चीज छुड़वाई गई है ही उनके लिए भयंकर मुसीबत का कारण बन गई है। पहले तो मैंने काऊंसलिंग द्वारा उनका मनोबल बढ़ाया और फिर उनकी कमजोर मानसिकता को देखते हुए बारी-बारी से सम्मोहन विधि द्वारा उन दोनों के मन में बैठे हुए कथित भूत-प्रेतों के डर को दूर किया। साथ ही उन्हें समझाया कि टाईफाईड बुखार ठीक होने में कई बार काफी लंबा समय ले लेता है। उनके बच्चे के साथ भी ऐसा ही हो रहा था। यदि वे घबरा कर बाबाओं के पास न जाते और न ही उन द्वारा डराने पर घर में हवन करवाते तथा यदि हवन करते समय वह पुजारी उन्हें कथित ओपरी-पराई चीजों का डर न दिखाता तो उनके गले में ऐसी मुसीबत कभी न पड़ती। उनका बच्चा तो उचित दवा-दारू के प्रभाव से निश्चित समय पर ठीक हो ही जाना था।

तब से लगभग एक वर्ष बीत चुका है। अब वे प्रसन्नतापूर्वक अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

★★

हड्डियों की सेहत आपके हाथ

हमारी हड्डियां कैल्शियम, फॉस्फोरस, विटामिन और मिनरल्स से बनी होती हैं। इनमें से किसी भी पदार्थ की कमी हड्डियों के लिए खतरनाक साबित हो सकती है। इसके अलावा आजकल की जीवनशैली भी हड्डियों की सेहत के लिए किसी खतरे से कम नहीं है। ऐसे में यदि आपकी हड्डियां दर्द या सूजन के जरिए आपको संकेत दे रही हैं तो उसे सामान्य मानकर नजरअंदाज करने की बजाए समय रहते डाक्टर से सलाह लें।

दर्द में छिपा है बीमारी का राज–हड्डियों में होने वाला दर्ज, सूजन या दर्द वाले स्थन के गर्म या ठंडा होने जैसे लक्षण गंभीर बीमारी की तरफ संकेत करते हैं। जानकारों की मानें तो अक्सर रात में हड्डियों में होने वाला दर्द बोन ट्यूमर हो सकता है। ट्यूमर बढ़ने के साथ-साथ दर्द भी बढ़ता रहता है। टीबी भी आज के समय में एक आम, लेकिन खतरनाक बीमारी बन गई है। यदि टीबी ग्रस्त व्यक्ति को हड्डी में दर्द हो रहा है या सूजन है, तो यह बोन संबंधी टीबी हो सकता है। संक्रमण के कारण स्वस्थ व्यक्ति भी इस बीमारी की चपेट में आ सकता है। इसे सैकेंड्री इन्फैक्शन भी कहा जाता है। शहरों में रहने वाले लोगों की दिनचर्या भी शारीरिक श्रम न के बराबर होता है। ऐसी स्थिति में आस्टियोपोरोसिस होने का खतरा रहता है, जिससे हड्डियां कमजोर होने के साथ-साथ असहनीय दर्द भी होता है। ऐसे में जरा सी चोट लगने से हड्डियां डैमेज हो जाती हैं। आजकल का आफिस कल्चर भी हड्डियों के गंभीर रोगों को दावत देता है। लगातार काम करना, तनाव, कुर्सी पर बैठे रहने से सरवाइकल, बैक पेन, जोड़ों में दर्द जैसी समस्याएं बेहद कम उम्र में ही सामने आने लगी हैं। शुरूआत में कम महसूस होने वाले ये दर्द यदि बढ़ जाएं या इन पर ध्यान न दिया जाए तो व्यक्ति पैरालाईज्ड भी हो सकता है। पैरों में होने वाला दर्द थकान से भी हो सकता है या फिर उसके पीछे कोई दूसरा कारण भी हो सकता है यदि व्यक्ति धुम्रपान करता है, तो इस दर्द को गंभीरता से लेना चाहिए। धुम्रपान से भी हड्डियों की नसों में खून की सप्लाई रुक जाती है और दर्द होने लगता है, इसे बर्जर डिसीज कहते हैं। उपचार न होने पर हड्डियां कमजोर हो सकती हैं।

बोन डिसीज के कारण–अनुवांशिक, संक्रमण, खानपान सही न होना, शारीरिक श्रम का अभाव, जयादा समय तक घर में रहना, व्यायाम न करना, विटामिन-डी की कमी, कम्पयूटर पर लगातार काम, एक्सीडेंट या चोट, धुम्रपान।

डा.परवेज अहमद प्रोफैसर आर्थोपैडिक्स डिपार्टमैंट एलएल आर मैडिकल कालेज मेरठ का कहना है कि हड्डियां शरीर के ढांचे को मजबूत रखती हैं इसलिए इनका ध्यान रखना जरूरी होता है। यदि शरीर के किसी भी हिस्से में दर्द या सूचन है तो उसे नजरअंदाज न करें। खुद ही डाक्टर न बनें। लगातार दर्द हैं तो तुरंत चिकित्सक से सलाह लें। रोजाना व्यायाम को अपनी दिनचर्या में शामिल करें। संतुलित भोजन जिसमें आयोडीन और मिनरलस की प्रचूर मात्रा भी हो, उसे डेली डाईट में शामिल करें। दर्द को अनदेखा करने से हय बड़ी बीमारी बन सकता है।

इलाज–शुरूआती स्तर पर यदि बोन ट्यूमर की पहचान हो जाए, तो इसे दवाइयों से नियंत्रित किया जा सकता है, लेकिन ज्यादातर मामलों में सर्जरी ही

विकल्प होता है। बोन संबंधी टीबी में 99 प्रतिशत रोग दवाओं से सही हो जाते हैं। यदि बीमारी की पहचान देर से हुई है तो सर्जरी करनी होगी है। बच्चों में रिकेट्स रोग हाने पर दवाओं और विटामिन की खुराक से उपचार संभव है, लेकिन यदि हाथ पैर टैढ़े-मेढ़े हो जाते हैं तो उस स्थिति में सर्जरी ही विकल्प है। बर्जर डिसीज में खून को पतला करने की दवाई दी जाती है और धुम्रपान पूरी तरह से छोड़ना ही इसके लिए प्रभावी उपचार भी हो सकता है। सरवाइकल या बैक पेन की स्थिति में व्यायाम और फिजियोथेरेपी जैसे उपायों से दूर किया जा सकता है।

संस्मरण

गाय को रोटी

हमारे एक मित्र और उनकी पत्नी गाय के कुछ ज्यादा ही भक्त थे। वे हर रोज़ गाय को रोटी खिलाया करते थे। गाय हर रोज़ रोटी की इंतज़ार में नियमित रूप से उनके द्वार पर आकर खड़ी हो जाया करती थी ।

एक दिन हमारे उन मित्र को कहीं बाहर जाना पड़ा और उन्हें वापिस आने में देर हो गई। जब वे घर लौटे तो देखा कि गाय रोज की भांति उनके घर के गेट के बाहर खड़ी है। मित्र महोदय गेट का ताला खोलने लगे तो गाय, जो शायद उस दिन उनसे नाराज़ थी, ने पीछे से उन्हें ज़ोर से सींगों से धक्का मारा। धक्के से वे संभल न पाये और औंधे मुँह ऐसे गिरे कि उनके मुँह, बाहों व टॉगों पर काफी चोटें आई । उनकी एक बॉह की हड्डी टूट गई और उन्हें तुरन्त अस्पताल ले जाना पड़ा जहां उनकी बॉह पर पलस्तर चढ़ाया गया।

-बलदेव सिंह महरोक

★★

पृष्ठ 10 का शेष

आस्था मूलक........

इहलोक में ही उसके समक्ष मौजूद शत्रु से उसका ध्यान हटाता है। पूरे समाज में में शासक वर्गों का वर्चस्व कायम रहे, इसलिए विज्ञान, संस्कृति कल, इतिहास आदि ज्ञान के सभी क्षेत्रों में अतार्किक अनैतिहासक और शासक वर्ग की से सेवा करने वाले विचारों को घुसाया और स्थापित किया जाता है। यही कारण है कि विज्ञान की अस्वायत गति और उसके द्वारा होने वाली खोजें हमेशा द्वन्द्वात्मक भौतिकवादी जीवनदृष्टि को पुष्ट करती है, लेकिन शासक वर्ग के दर्शन इसे हमेशा विकृत करने, इसे तोड़ने-मरोड़ने और अपने हितों और सिद्धांतों के अनुरूप व्याख्यायित करने का प्रयास करते रहते हैं। यही कारण है कि आज विज्ञान का विकास कदम-कदम पर शासक वर्गों की साजिशों और षड़यन्त्रों का शिकार होन के कारण अवरूद्ध हो रहा है । आज विज्ञान एक संकट से गुजर रहा है। इस संकट से उसे मुक्ति तभी मिल सकती है जब उसके विकास के पैरों में पड़ी बेड़ियों को तोड़ फैंका जाये। विज्ञान और आस्था के बीच के टकराव में विज्ञान आज तक विजयी रहा है और उसने आस्था के प्रभाव-क्षेत्र को संकुचित करने का काम किया है। मौजूदा अवैज्ञानिक पूंजीवादी व्यवस्था कूपमण्डूकता और अतार्किकता फैलाने के अपने प्रयासों के ज़रिये नये सिरे से मूर्खतापूर्ण आस्थाओं को जन्म दे रही हैं विज्ञान को इन नयी कूपमण्डूकताओं पर विजय पानी होगी और इसके लिए सिर्फ कुछ वैज्ञानिक प्रतिभाओं की आवश्यकता नहीं है, बल्कि सामाजिक-आर्थिक बदलाव की भी आवश्यकता है।

हमें इतना गुस्सा क्यों आता है?

डा. हरीश मल्होत्रा
बरमिंघम मो. 00447763013424

गुस्से के कारण पेचीदा हैं। वैज्ञानिक भी मानते हैं कि क्रोध के कारणों के बारे में उन्हें इतना ज्ञान नहीं परंतु मनोरोग विशेषज्ञ सहमत हैं कि हम सभी का किसी न किसी बात पर क्रोध भड़क उठता है।

कुछ बातें ऐसी चिंगारियां होती हैं जो किसी इन्सान को लाल-पीला कर देती हैं। ये चिंगारियां प्रायः अन्याय के कारण उत्पन्न होती हैं। ये चिंगारियां तब भड़क सकती हैं जब हमें लगता है कि किसी ने हमारा अपमान किया है। हमारे क्रोध की अग्नि तब भी भड़क सकती है जब हमें आभास होता है कि कोई हमारे अधिकारों को छीन रहा है अथवा हमारी नेकनामी को खतरे में डाल रहा है।

प्रत्येक व्यक्ति में ये चिंगारियां अलग-अलग कारणों से भड़कती हैं। अलग-अलग आयु एवं संस्कृति के पुरुष एवं महिलाओं को अलग-अलग कारणों से क्रोध आता है। इसके साथ-साथ यह भी सत्य है कि कुछ व्यक्ति कम क्रोध करते हैं एवं कुछ अधिक। कुछ व्यक्तियों को कभी-कभी क्रोध आता है तथा वे हर बात का इतना बुरा नही मनाते, जबकि अन्यों को एकदम क्रोध आ जाता है तथा वे शायद कई दिनों, महीनों अथवा अधिक समय के लिए क्रोध की अग्नि में जलते रहते हैं1

हम ऐसे वातावरण में रहते हैं जहां क्रोध करने वाली अनेकों बातें हो सकती हैं। इसके साथ-साथ इन बातों के कारण लगता है कि लोगों का पारा और भी चढ़ रहा है, परन्तु क्यो? एक कारण यह भी है कि वर्तमान युग में हर जगह लोग इतने स्वार्थी हो गए हैं कि उन्हें दूसरों की कोई परवाह नहीं है। वे धन के प्रेमी, शेखी खोरे अहंकारी, जिद्दी एवं अनेकों गलत फहमियों के शिकार होते हैं।

जब इन स्वार्थी व्यक्तियों की जिद पूरी नहीं होती तो प्रायः उन्हें क्रोध आ जाता है। इसके अतिरिक्त कई अन्य कारण भी हैं जिनसे क्रोध की समस्या बढ़ती जा रही है जैसे किः

अभिभाविकों की मिसाल ः

बचपन एवं युवावस्था में किसी व्यक्ति के स्वभाव पर मां-बाप का गहरा प्रभाव पडता है । मनोवैज्ञानिक हैरी एल मिल्ज कहता है ः ''अत्यन्त अल्प आयु से लोग अपने आस-पास के गुस्साखोर लोगों की देखादेखी क्रोध को प्रकटाना सीखते हैं।''

यदि किसी बच्चे की परवरिश ऐसे बुरे वातावरण में होती है जहां पर छोटी-छोटी बातों के कारण क्रोध भड़क उठता है, तो कहा जा सकता है कि बच्चे के जीवन की समस्याओं के साथ क्रोध के साथ निपटने की सिखलाई मिल रही है। आप बच्चे की स्थिति की तुलना उस पौधे के साथ कर सकते हैं जिस को ज़हरीला पानी दिया गया है। पौधे शायद उत्पन्न हो जाऐं परन्तु उसका विकास रुक सकता है तथा उसे हमेशा के लिए हानि पहुंच सकती है। गुस्सा ज़हरीले पानी की भांति है तथा जो बच्चे गुस्से वाले माहौल में पलते-बढ़ते है, उन्हें बड़े होकर अपने क्रोध को नियन्त्रित करने में मुश्किल होने की संभावना अधिक है।

भीड़-भाड़ वाले शहर : वर्ष 1800 में विश्व की तीन प्रतिशत् जनसंख्या शहरों में निवास करती थी। सन् 2008 में यह संख्या बढ़ कर 50 प्रतिशत् हो गई तथा अनुमान लगाया जा रहा है कि सन् 2050 तक यह संख्या बढ़ कर 70प्रतिशत् हो जाएगी। जैसे-जैसे और अधिक लोग इन गहन आबादी वाले नगरों में जा रहे है, वैसे-वैसे लोगों का गुस्सा एवं खीझ बढ़ती जाएगी। एक उदाहरण हैः मैक्सिको सिटी का, जो विश्व का सर्वाधिक बड़ा एवं सर्वाधिक भीड़-भड़क्के वाला शहर है। सबसे टैंशन लोगों को ट्रैफिक जाम के कारण होती है।

मैक्सिको सिटी में एक करोड़ 80 लाख लोग रहते हैं एवं 80 लाख कारें हैं। एक पत्रकार के अनुसार यह शहर ''विश्व की सर्वार्धिक तनाव-पूर्ण राजधानी हो सकता है। अत्याधिक ट्रैफिक होने से लोगों का पारा सातवें आसमान पर चढ़ जाता है।''

भीड़-भाड़ वाले शहरों में तनाव के और भी कारण हैं, जिनमें वायु एवं शोर प्रदूषण; घरों की कमी; अलग संस्कृति के कारण से मतभेद एवं अत्याधिक अपराध शामिल हैं। जैसे-जैसे तनाव बढ़ता जाता है, वैसे-वैसे लागों में चिढ़चिढ़ापन एवं क्रोध बढ़ता जाता है तथा वे असन्तुष्ट होते जा रहे हैं।

आर्थिक मंदी : दुनिया भर में आर्थिक मंदी के कारण लोगों में तनाव एवं चिंता उत्पन्न हो गई है। सन् 2010 में अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष एवं संयुक्त राष्ट्रसंघ अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोश एवं संयुक्त राष्ट्रसंघ अन्तर्राष्ट्रीय श्रमिक संगठन (आई.एल.ओ.) की साझा रिपोर्ट से अधिक लोग बेरोजगार है।'' अफसोस की बात है कि जिन्हें नौकरी से जवाब दे दिया गया, उनमें से अधिकतर लोगों के पास जमा किया गया कोई पैसा नहीं है अथवा सरकार द्वारा उन्हें कोई सहायता नहीं मिलती। नौकरी करने वालों की भी हालत इतनी अच्छी नहीं है। आई.एल.ओ. के अनुसार काम के साथ होता तनाव ''विश्व भर में फैली महामारी है।'' आंटेरियो, कनाडा का मैनेजमेंट सलाहकार लरोन नरिस्ट कहता है कि, ''लोग अपनी नौकरियां गंवाने से डरते हैं तथा शीघ्र ही बुरा निष्कर्ष निकाल लेते हैं।'' परिणाम स्वरूप ''वे चिढ़चिढ़े हो जाते हैं तथा अपने सुपरवाईजर अथवा अपने सहकर्मियों के साथ लड़ने के लिए तैयार हो जाते हैं।''

पक्षपात एवं अन्याय : मान लो कि आप दौड़ में शामिल हो, परन्तु आपको पता चलता है कि केवल आपको ही अपने पॉव जंजीरों के साथ बांधकर दौड़ना पड़ेगा । आप कैसा महसूस करोगे? इसी प्रकार लाखों ही लोग महसूस करते हैं जब वे नस्लीय जाति-पाति, श्रेणी विभाजन, रंग, विकलांगता एवं लिंग भेद इत्यादि के कारण पक्षपात का सामना करते हैं। लोगों को क्रोध चढ़ जाता है जब पक्षपात के कारण उन्हें नौकरियां, शिक्षा, घर एवं अन्य आवश्यक सुविधाएं नहीं मिलती।

इसी प्रकार अन्याय के कारण हमारी भावानाओं को कुचला जा सकता है तथा हमें अत्यन्त दुःख पहुँच सकता है। अफसोस की बात है कि हम सभी के साथ कभी न कभी अन्याय हुआ है। जब चारों ओर अन्याय होता हो तथा धैर्य बंधाने वाला कोई न हो, तो किसी के भी दिल में क्रोध की अग्नि भड़क सकती है।

मनोरंजन उद्योग : हज़ार से अधिक अध्ययन यह देखने के लिए किये गए हैं कि टी.वी. पर एवं अन्य तरीकों से दिखाई जाने वाली मारधाड़ का बच्चों पर कैसा प्रभाव पड़ता है। कामनसैंस मीडिया का संस्थापक जेम्ज़ पी स्टायल का कथन है, ''जो पीढ़ी लगातार

ऐसी घोर हिंसा देखती है, जो देखने में वास्तविक लगती है, उसे बड़ा होकर गुस्सा करने में कोई हर्ज नहीं होता, वह क्रूरता सहन कर लेती है तथा इतनी हमदर्दी नहीं रखती।''

यह सत्य है जो नवयुवक लगातार टी.वी. पर मार-धाड़ देखते हैं, इसका अर्थ यह नहीं कि वे बड़े होकर खतरनाक अपराधी बनेंगे। परन्तु मनोरंजन उद्योग अक्सर दिखाता है कि मुश्किलों का सामना करने के लिए क्रोध में भड़क उठना जायज़ हैं तथा एक नई पीढ़ी उठ खड़ी है जो मार-धाड़ देखने की इतनी आदि हो गई है कि उनकी ज़मीर सुन्न हो चुकी है।

क्रोध के स्वयं पर हावी न होने दो : जब हम सभी समस्याओं, दबावों एवं चिंताओं पर गौर करते हैं तो हम समझते हैं कि लोग अपने नित्यप्रति के कार्य करते हुए इतने चिड़चिढ़े क्यों हो जाते हैं। शायद हमें लगे कि गुस्सा करने एवं अपने मन की भड़ास निकालने से हम स्वयं को रोक नहीं सकते परन्तु यूनानी दार्शनिक अरस्तु ने 2000 वर्ष पूर्व कहा था कि कोई दुखांत नाटक देखने से हृदय में उत्पन्न हुई भावनाओं को ज़ाहिर करने के पश्चात् जो सुकून मिलता है वह ''कथारसिस'' है। उसका विचार था कि अपनी भावनाएं प्रकट करने पश्चात् मन हल्का हो जाता है।

पिछली शताब्दी के प्रारम्भ में आस्ट्रिया के न्यूरोलोजिस्ट जिंगकुंट फ्रायड ने भी इस विचार को फैलाया था । उसने दावा किया कि यदि लोग क्रोध को दबा कर दखेंगे तो आगे चलकर उन्हें मानसिक रोग हो सकता है जैसे कि हिस्टीरिया । इस लिए फ्रायड का दावा था कि क्रोध को अन्दर ही अन्दर रखने की बजाए इसे प्रकट करवा चाहिए।

जिन खोजकारों ने 1970 एवं 1980 के दशकों के दौरान 'कथार्सिस' थ्योरी को परखा था, उन्हें हाल ही के वर्षों में इस थ्योरी के सही होने का अत्यन्त कम अथवा बिल्कुल भी प्रमाण नहीं मिला । इन खोजों के कारण मनो विज्ञानी कैरल टैवरस ने लिखा : ''अब हमें कथार्सिस की थ्योरी को गोली मार देनी चाहिए। खोजों ने इस विश्वास का कभी समर्थन नहीं किया कि हिंसा देखने से (अथवा क्रोध निकालने से) आपको बैर की भावनाओं से छुटकारा मिलता है।''

एक अन्य मनोविज्ञानी गैर हिनकिन्ज़ ने कहा हैः ''खोजों से पता चलता है कि अपने समस्त गुस्से का कथार्सिस करने आपका गुस्सा कम होने की बजाए और बढ़ेगा।'' यह सत्य है कि मनोरोग विशेषज्ञ कभी भी कथार्सिस की थ्योरी के बारे में सहमत नहीं होंगे।

हमने विद्वानों से यह भी सुना हैः क्रोध को छोड़ो तथा इसे त्याग दो, कुढ़ो मत इससे बुराई ही निकलती है। आपको शायद कुछ कहने अथवा करने के पश्चात् पछताना पड़े। इसलिए पछताने से बचने के लिए अच्छा होगा कि हम पहले से ही न कुढ़ें। परन्तु इस प्रकार कहना आसान है पर करना कठिन। फिर भी इस प्रकार किया जा सकता है। यह जानने से पूर्व आइये हम एक अल्प दृष्टि आंकड़ों पर डाल लें।

लंदन, इंग्लैंड की मैंटल फाऊंडेशन ने एक रिपोर्ट प्रकाशित की जिसका विषय थाः 'क्रोध का 'उबाल एक समस्या एवं इस बाबत हम क्या कर सकते हैं।'

इस रिपोर्ट में बताई गई विशेष बातों में निम्न आंकड़े भी सम्मिलित हैं :

84 प्रतिशत लोग काम पर पिछले पांच वर्षो से अधिक तनाव महसूस करते हैं।

65 प्रतिशत लोगों को दफ्तर में क्रोध आया है अथवा उन्होंने दूसरों को क्रोंध में आते देखा है।

45 प्रतिशत लोगों का काम पर बाकायदा गुस्सा भड़क उठता है। 60 प्रतिशत लोग तनाव के कारण कार्यस्थल से अनुपस्थित रहते हैं।

60 प्रतिशत लोग तनाव के कारण कार्यस्थल से अनुपस्थित रहते हैं।

33 प्रतिशत ब्रिटेन के लोग अपने पड़ोसियों के साथ गुस्सा होने के कारण उनसे बात नहीं करते।

64 प्रतिशत लोग 'सहमत' अथवा 'पूरी तरह से सहमत' हैं कि लोग पहले से अधिक क्रोधित होते हैं।

32 प्रतिशत लोग कहते हैं कि उनका ऐसा करीबी मित्र अथवा परिवार का सदस्य है जिसे अपने क्रोध को नियन्त्रित करना कठिन लगता है। आओ देखें कि क्रोध को हम किस प्रकार वश में करें :

क्रोध को ठण्डा करो :

गुस्से को ठण्डा करने के लिए थोड़ा सा रुको एवं शान्त हो जाओ। वह बात न करो जो आपके मन में पहले आती है। यदि आपका पारा चढ़ा रहता है तथा तुम्हें लगता है कि तुम्हारा गुस्सा भड़कने वाला है तो इस बात को याद रखो 'झगड़े का आरम्भ पानी के बहाव पैसा है, अतः झगड़ा शुरू होने से पहले ही उसे छोड़ दो।'

इस सलाह पर अमल करते हुए जैन नाम का व्यक्ति अपने क्रोध को वश में कर सकता है। जैन का पिता शराबी हो कर समय-समय पर क्रोध से भड़क उठता था। जैन ने भी किशोर अवस्था में ऐसा ही हिंसक स्वभाव पैदा कर लिया। वह कहता है किः ''जब मुझे गुस्सा चढ़ जाता था, तो मुझे ऐसा लगता था जैसे कि मेरे अन्दर आग जल रही हो तथा मैं गालियां निकालने एवं मार-कुटाई करने लग जाता था।''

जैन बताता है कि जब उसके साथ काम करने वाले ने गुस्से में उसे गालियां दी तो मेरे अन्दर क्रोध की अग्नि भड़कने से मेरा शरीर कांपने लगा। मेरा मन चाहता था कि मैं उसको पकड़ कर जमीन पर पटक दूं। परन्तु मैंने अपने गुस्से पर काबू रखा एवं शांत रहा। मुझे ऐसा करने से शान्ति महसूस हुई और मैं वहां से चल पड़ा। मैंने यह भी महसूस किया कि जहां पर ईंधन न हो वहां अग्नि बुझ जाती हैं। समय बीतने पर मैंने अपने गुस्से को पूरी तरह से नियंत्रित कर लिया तथा अब यह मेरे स्वभाव का अभिन्न अंग बन गया है।

शान्त-चित रहना :

शान्त-चित रहने से हम मानसिक एवं शारीरिक तौर पर स्वस्थ रहते हैं। हमें वे आसान ढंग सीखने चाहिएं जिनकी सहायता से क्रोध कम हो सके, निम्न नुस्खे तनाव के कारण आने वाले क्रोध को काबू करने में प्रभावशाली प्रमाणित हुए हैं :-

1. लम्बे सांस लेना सबसे बढ़िया एवं जल्दी कार्य करने वाला तरीका है जिसके साथ हमारा गुस्सा कम हो सकता है। लम्बे सांस लेते समय कोई ऐसा शब्द अथवा वाक्य दोहराओ जो आपको शान्त करता हो, जैसे 'शान्त रह', 'चिन्ता मत कर' अथवा 'चिन्ता छोड़ कर देख' । यह एक प्रकार की आत्म सुझाव वाली क्रिया है जिसे आत्म सम्मोहन भी कहा जा सकता है।

2. उन कार्यो में व्यस्त हो जाओ जिन से तुम्हें खुशी मिलती है जैसेः संगीत सुनना, बागवानी अथवा कोई

अन्य कार्य करना, ' अच्छी पुस्तक पढ़ना इत्यादि, जिससे हमें शान्ति मिलती हो। कोई अन्य कार्य करना, कोई अच्छी पुस्तक पढ़ना इत्यादि, जिससे हमें शान्ति मिलती हो।

3. बाकायदा कसरत करना एवं पौष्टिक भोजन करना।

ऊँची उम्मीदें मत रखो :- हम उन लोगों अथवा बातों से दूर नहीं रह सकते जिनके कारण हमारा गुस्सा भड़कता हैं परन्तु हम अपने गुस्से को नियन्त्रित करना सीख सकते हैं। ऐसा करने के लिए हमें अपने सोचने के ढंग को बदलने की आवश्यकता है।

जो लोग ऊँची उम्मीदें रखते हैं, उन्हें क्रोध पर नियन्त्रण करना अधिक मुश्किल लगता है। क्यों? क्योंकि, जब कोई चीज अथवा कोई व्यक्ति उनकी ऊँची उम्मीदों के अनुसार खरा नहीं उतरता, तो वह शीघ्र ही निराश एवं क्रोधित हो जाते हैं। यह सोचने के अपेक्षा कि सभी कुछ बिल्कुल ही ठीक हो, अच्छा होगा कि हम यह बात याद रखें कि प्रत्येक व्यक्ति में गुण भी एवं अवगुण भी होते हैं। इस कतारबन्दी में हम स्वयं भी शामिल है। इस लिए हमारे हाथ निराशा ही लगेगी यदि हम सोचें कि हम अथवा को अन्य बिल्कुल सम्पूर्ण हो सकता है।

यह अक्लमंदी की बात होगी कि हम स्वयं से अथवा दूसरों से ऊँची उम्मीदें न रखें। हम सभी जानते हैं कि हम कई बार गल्तियां करते हैं। यदि कोई बोलने में गल्ती नहीं करता तो वह मुकम्मल इन्सान हो सकता है, परन्तु ऐसे कितने हैं जिनके साथ हमारा हर रोज़ वास्ता पड़ता है। इसलिए यदि हम मुकम्मल होने का ढोंग करेंगे तो हम जीवन में हमेशा मायूस एवं क्रोध ही करेंगे।

ना-मुकम्मल होने के कारण हम सभी को कभी न कभी क्रोध आ जाता है। परन्तु यह हम पर निर्भर है कि हमने अपना क्रोध किस प्रकार प्रकट करना है। यह बात स्मरण योग्य है कि जब हमें क्रोध आए तो सूर्यास्त से पूर्व अपने क्रोध को थूक दें । अतः अपने गुस्से को काबू में रख कर हम अपनी भावनाओं को ऐसे तरीके से प्रकट कर सकते हैं जिस से सभी को लाभ हो ।

हिन्दी अनुवादः **बलवन्त सिंह, लैक्चरारे**।

गीत

रामेश्वर दास 'गुप्त'

दिन वो बहुत ही महान होगा
आदमी जब बस इन्सान होगा

बंटवारा न होगा जब जातों में अपना
चढ़े ना नाम धर्म के खातों में अपना
दीन-धर्म की ऐसी मेहरबानी न हो,
सौदा हो जाए बातों-बातों में अपना,
तरक्की का फिर यहीं सोपान होगा

राम और खुदा में ना होगी लड;ाई
इंसां धर्म होगा, हों सब भाई-भाई,
आग जलाए न जब सपने हमारे
धर्म में जगह न हो अपनी -पराई
तभी तो अपना भी उत्थान होगा

धर्म के कारण न जब दुकानें चलेंगी
चालाकों की साजिश न फूलें-फलेंगी,
राम और रहीम गले मिलते रहे तो
घरों में फौलादी ना शमशीरें ढलेंगी,
जीना आदमी का तभी आसान होगा

क्या खेल-खेलें ये मुल्ला-पुजारी
आ जाएगा जब समझ में हमारी
समझने लगेंगे 'रामेश्वर' की बातें
तब जनता रहेगी ना इतनी बेचारी
तू लुट कर ना इतना परेशान होगा।

स्मृति शेष

आम आदमी की पीड़ा को स्वर देने वाली कलम खामोश हो गई

गत 18 अगस्त 2014 को मास्टर रामेश्वर दास गुप्त जी का 63 वर्ष की आयु में निधन हो गया। वे लगभग डेढ़ वर्ष से गले के कैंसर से पीड़ित थे।

गुप्त जी को लिखने का जुनून था। उनकी सात पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं, तीन प्रकाशन की प्रक्रिया में हैं एवं कई पांडुलिपियां तैयार पड़ी हैं। दंगे पागल होते हैं, त्रिवेणी, डंगवारा, च्यौंद कसूती, अब चुप्पी तोड़ो, मुश्किल दौर से, हाशिए से बाहर इत्यादि पुस्तकें छप चुकी हैं। धर्मान्धिता, अंधविश्वास एसं पाखंड का पर्दाफाश करती हुई रागनियां एवं गजलें तर्कज्योति, विज्ञान ज्योति, तर्कशील पथ एवं अध्यापक समाज व अध्यापक लहर नियमित रूप से छपती रही हैं। अन्य कई पत्र-पत्रिकाओं में भी अनेकों बार प्रकाशित हुई हैं।

रामेश्वर दास गुप्त को आम आदमी की समस्याओं ने बहुत गहराई तक उद्धेलित किया। यह पीड़ा ही शब्द बन कर उनकी कलम के द्वारा उनकी रचनाओं में उतर आई और इस प्रकार घुलमिल गई कि पहचान ही नहीं हो पाती कि यह पीड़ा लेखक की है अथवा आमजन की। नशे की शिकार जवानी, दाने-दाने को मोहताज कमेरा, कर्ज के कारण किसान द्वारा आत्महत्या, छीजता भाईचारा, चरम पर भ्रष्टाचार, देश से बाहर एवं देश में काला धन, नेताओं, अधिकारियों का बेशर्म गठजोड़, संवेदनहीनता, जाति धर्म के नाम पर टूटता भाईचारा, अंधविश्वास, कमरतोड़ महंगाई, कन्या भ्रूण हत्या, दहेज, महिलाओं एवं दलितों पर बढ़ता अत्याचार, अनपढ़ता एवं बेरोजगारी प्रत्येक विषय को धारदार आवाज में उठाती इस कलम का नाम ही रामेश्वर था।

रामेश्वर दास गुप्त का बात कहने का अंदाज बेबाक एवं वैज्ञानिक चिंतन पर आधारित था। वे अपनी रचनाओं के द्वारा समाज की आंखें खोल देते थे और आईने में समाज का सच्चा रूप दिखाने का सफल प्रयास करते थे। धार्मिक, पाखंड की आड़ में आम जनता से करोड़ों का चढ़ावा लेकर ऐश करने वाले धर्म गुरुओं पर गुप्त जी ने कबीर के समान गहरी चोट की है।

रामेश्वर दास गुप्त जी ने एक अध्यापक होने के कारण अपना अध्यापन कार्य करने की जिम्मेदारी पूर्ण निपुणता से निभाने के साथ-साथ हरियाणा राजकीय अध्यापक संघ, सर्व कर्मचारी संघ तथा साक्षरता अभियाान में भी काम किया। इसी दौरान वे जनवादी लेखक संघ एवं तर्कशील सोसायटी हरियाणा से भी जुड़े रहे। इसी जुड़ाव से वे वैचारिक शक्ति ग्रहण करते चले गए, जिससे उनके लेखन की धार और तेज होती चली गई और उनकी रचनाओं का जन संघर्षों एवं अंधविश्वास विरोधी कार्यक्रमों में सदुपयोग होता रहा, जोकि गुप्त जी का सबसे बड़ा ईनाम था। जब तक इन संघर्षों की जरूरत बनी रहेगी, उनके गीत-गजल, रागनियों की सार्थकता बनी रहेगी और उनका नाम पुरस्कृत होता रहेगा। गुप्त जी की कलम का इतनी जल्दी खामोश हो जाना जनक्षीय शक्तियों एवं तर्कशील आंदोलन के लिए एक गहरा आघात है, परन्तु उनके द्वारा अपने लेखन द्वारा दिए गए विचार आने वाली पीढ़ियों का हमेशा मार्गदर्शन करते रहेंगे।

-बलवंत सिंह

अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर हमला

वैंडी डोनिगर की पुस्तक के बहाने

-समर जैन

शासक वर्गों ने सदा अपने खिलाफ उठ रहे विचारों को दबाने की कोशिश की है। ये कोशिशें कभी विचारकों के कत्लेआम के रूप में हुई तो कभी उनकी पुस्तकों को जलाने और नष्ट करने के रूप में हुई।

कुछ हजार साल पहले चार्वाक नाम के दार्शनिक को उसकी तमाम पुस्तकों समेत आग के हवाले कर दिया गया था। उसका कसूर मात्र यह था कि उसने उस वक्त के शासकीय विचारों की खिलाफत की थी और जनता के विचारों को दार्शनिक रूप देने का प्रयास किया था। भारत में शैव और वैष्णवों के मध्य जो संघर्ष हुए, उसके परिणामस्वरूप अखाड़ों का जन्म हुआ था और उन्होंने न केवल अपने विरोधियों का कत्लेआम किया था, बल्कि उन्हें सांस्कृतिक तौर पर भी खत्म करने की कोशिश की थी। यूरोप के मध्य युग का इतिहास उन लोगों को आग के हवाले करने के सैंकड़ों-हजारों उदाहरणों से भरा पड़ा है। जिन लोगों ने अपने ऐसे नए सिद्धांत दिए, जो चर्च की शिक्षाओं के खिलाफ थे। चर्च के आदेश से उस वक्त न केवल ईशनिंदा के आरोप में ऐसे लोगों को शहर के चौराहे पर खड़ा करके आग के हवाले कर दिया जाता था, बल्कि उनकी लिखी पुस्तकों को भी नष्ट कर दिया जाता था। न्यूटन जैसे प्रसिद्ध वैज्ञानिक की पुस्तक दशकों तक केवल इसलिए दिन की रोशनी नहीं देख पाई क्योंकि चर्च को लगता था कि न्यूटन के विचार ईशनिंदा हैं। बेकन नाम के प्रसिद्ध दार्शनिक को जिंदा जला दिया गया था। ये सब करके चर्च को लगता था कि वह सच्चाई पर पर्दा डाल देगा और विचारों को फैलने से रोक देगा।

वर्तमान समय में भी ऐसे उदाहरणों की कमी नहीं है। एमएफ हुसैन की पेंटिंग्स के खिलाफ भारत में शिव सेना और आरएसएस से जुड़े लोगों ने खूब शोर मचाया, हुसैन की पेंटिंग्स को जला दिया गया। उसकी प्रदर्शनियों में तोड़-फोड की गई। प्रदर्शनियों के प्रायोजकों को डराया-धमकाया गया। ईरान में कट्टरपंथी सरकार ने सलमान रश्दी की पुस्तक शैतान की आयतें के खिलाफ फतवा जारी कर सलमान रश्दी के सिर पर इनाम घोषित कर दिया था, जिसके परिणामस्वरूप सलमान रश्दी पिछले कई दशकों से छुप कर रहने को मजबूर हैं। कुछ ऐसा ही बंगलादेश में तस्लीमा नसरीन के साथ हुआ, जब उसने कट्टरपंथियों के खिलाफ लिखा। तस्लीमा का कसूर तो कट्टरपंथियों की निगाह में दोगुना हो गया था। एक तो वह महिला थीं और फिर महिला होकर न केवल कट्टरपंथियों के खिलाफ बल्कि पुरुषवादी मानसिकता के खिलाफ भी लिख रही थीं।

भारत का मामला तो और भी अजीब है। ईरान में सलमान रश्दी के खिलाफ फतवा जारी किया गया तो उसके तुरंत बाद भारत में भी शैतान की आयतें पुस्तक पर प्रतिबंध लगा दिया गया। हालांकि उस वक्त तक भारत में इस पुस्तक का कोई खास विरोध नहीं हुआ था। तस्लीमा नसरीन के लिए जब बंगलादेश में रहना मुश्किल हो गया तो वे कोलकाता में रहने लगी,

लेकिन भारत में कट्टरपंथियों को उसका रहना पसंद नहीं आया तो बंगाल सरकार ने उन कट्टरपंथियों के सामने झुकते हुए तस्लीमा को कोलकाता से निकाल दिया। इसमें और भी शर्मनाक बात यह है कि यह काम तथाकथित कम्युनिस्ट सरकार के समय में हुआ था। गुलाम अली के मुंबई में कार्यक्रम को भी शिव सेना के विरोध की वजह से रद्द करना पड़ा। इसके अलावा प्रसिद्ध विचारक रामानुजम के लेख को दिल्ली यूनिवर्सिटी के पाठ्यक्रम से बाहर करवाना, रोहिंटन मिस्त्री के उपन्यास सच ए लोंग जरनी को मुंबई विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम से बाहर करवाना, महाराष्ट्र में छत्रपति शिवाजी पर जेम्स लेन की पुस्तक के खिलाफ पहले तो शिव सैनिकों का उत्पात और फिर पुस्तक के खिलाफ अदालती कार्रवाई, ये कुछ अन्य उदाहरण हैं।

नवीनतम उदाहरण वैंडी डोनिगर की पुस्तक द हिन्दू-एन आलटरनेटिव हिस्ट्री का है। इस पुस्तक के खिलाफ शिक्षा बचाओ आंदोलन समिति ने अदालत में केस किया हुआ था कि इस पुस्तक से हिन्दुओं की धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचती है। इसलिए इस पुस्तक को प्रतिबंधित किया जाए। पेंगुइन प्रकाशन ने शायद अपने व्यवसायिक हितों को ध्यान में रखते हुए इस समिति के साथ कोर्ट के बाहर एक समझौता कर लिया और इस पुस्तक की अनबिकी प्रतियों को वापिस लेने का निर्णय ले लिया। भारत में भावनाओं को ठेस लगाना एक बहुत बड़ा राजनीतिक हथियार है, जिसका इस्तेमाल राजनीतिक दल अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए करते हैं। कभी उनकी धार्मिक भावनाएं आहत हो जाती हैं, तो कभी क्षेत्रीय अस्मिता का सवाल खड़ा हो जाता है। कभी जातीय दंभ का मामला खड़ा हो जाता है तो कभी पूर्वजों के नाम पर भावनाएं उभार दी जाती हैं, लेकिन खास बात यह है कि भावनाओं को ठेस केवल तभी लगती है जब प्रभुत्वशील वर्ग की भावनाएं आहत होती हैं। दलितों, महिलाओं और दमितों की भावनाएं तो शायद होती ही नहीं। इसलिए उनके आहत होने का सवाल ही पैदा नहीं होता। यही वजह है कि आज तक देश के अनेक दलित और आदिवासी समूहों को अपराधिक समूहों के रूप में चिन्हित किया जाता रहा है, लेकिन कभी उनके संदर्भ में भावनाओं की बात नहीं आती। लेकिन किसी उच्च जाति के खिलाफ टीका-टिप्पणी मात्र से ही तुरंत उच्च जातीय भावनाएं आहत हो जाती हैं और जातीय शोषण का विरोध करने वालों को अपराधी के रूप में खड़ा कर दिया जाता है। लगभग हर रोज कवि गोष्ठियों, लेखों, कहानियां और इलैक्ट्रोनिक मीडिया में महिलाओं के विरुद्ध खूब टीका-टिप्पणी होती है, लेकिन कभी भी यह मामला नहीं आया कि इससे महिलाओं की भावनाएं आहत होती हैं।

भावनाओं को ठेस लगने के बहाने किसी भी प्रगतिशील या नए विचार को दबा दिया जाता है। पुस्तकें प्रतिबंधित कर दी जाती हैं, प्रकाशकों के दफतरों पर हमले कर दिए जाते हैं। पुलिस अपराधियों को पकड़ने की बजाए विचारकों और प्रकाशकों के खिलाफ ही भावनाएं भड़काने का आरोप लगाते हुए कानूनी कार्रवाईयां करने लगती है। चूंकि प्रगतिशील या नए विचार आम तौर पर शासक वर्गों के हितों की खिलाफत कर रहे होते हैं। इसलिए शासक वर्गों की रूचि भी इसी बात में होती है कि ऐसे लोगों को चुप करवा दिया जाए। इसलिए ऐसे लोग राजकीय दमन का शिकार बन जाते हैं। कानून इसमें पूरी तरह गलत लोगों का साथ देता दिखाई पड़ता है।

सोचने वाला विषय है कि जब गुरु नानक देव ने मक्का में जाकर वहां मौलवी को कहा था कि जिस दिशा में अल्लाह न रहता हो उधर मेरे पैर कर दो तो क्या यह मुसलमानों की धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाने वाली बात नहीं थी। इसी प्रकार जब उन्होंने हरिद्वार में जाकर अपने खेतों की दिशा में पानी दिया था तो क्या ऐसा करके उन्होंने हिन्दुओं के धार्मिक कर्मकांडों की खिल्ली नहीं उड़ाई थी? इसी प्रकार संत कबीर की वाणी में हिन्दुओं और मुसलमानों दोनों के अंधविश्वासों और कर्मकांडों को अनेकों प्रकार से गलत ठहराया गया है। इनसे भी 1500 साल पहले जब महात्मा बुद्ध ने बौद्ध धर्म का प्रचार किया था तो उनकी शिक्षाएं वैदिक धर्म के खिलाफ थी। उन्होंने वैदिक कर्मकांडों का विरोध किया था। ऐसा करके उन्होंने वैदिक धर्म को मानने वालों धार्मिक भावनाओं को अवश्य ही आहत किया होगा। अगर उस वक्त भी कानून की धारा 295ए होती और उस धारा के तहत किसी की धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाने का केस दर्ज हो सकता होता तो निश्चित तौर पर सिख गुरु, कबीर, महात्मा बुद्ध और अनेक दूसरे सुधारवादी धारा के संत कानून की निगाह में अपराधी हो गए होते। अगर उस वक्त का शासक वर्ग इनकी आवाज को दबा देने में कामयाब हो गया होता तो आज हम महात्मा बुद्ध, कबीर और नानक की वाणी से वंचित रह गए होते। इससे हम यह ही अंदाजा लगा सकते हैं कि अगर नए विचारों को दबाया नहीं गया होता तो आज हमारे पास न जाने कितने और महान विचारकों के विचार और सिद्धांत होते। विज्ञान कितना पहले ही कितना आगे बढ़ गया होता।

सच्चाई तो यह है कि कोई भी चीज स्थायी नहीं होती। जो आज के समय में सही है, प्रगतिशील है, वही एक समय के बाद गलत हो जाता है, प्रगति के रास्ते में रुकावट बन जाता है। दुनिया में अलग-अलग समय में विभिन्न धर्मों और विचारधाराओं ने जन्म लिया है। इन धर्मों और विचारधाराओं को चुनौती दी और उनका विरोध किया। इसी संघर्ष के परिणामस्वरूप वैचारिक तौर पर समाज आगे बढ़ जाता है। नए विचारों के उदय के साथ-साथ समाज ने भी विकास में आगे की ओर छलांग लगाई।

दुनिया में धर्मों का इतिहास इसी बात का गवाह है। कभी समय था जब ईसाई धर्म को मानने वालों को भयंकर राजकीय दमन का सामना करना पड़ता था, क्योंकि उनके विचार तत्कालीन रोमन शासक वर्गों को रास नहीं आ रहे थे और फिर वह समय भी आया जब चर्च ने नए विचारकों पर जुल्म ढाने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ीं यही बात मुस्लिम धर्म के संदर्भ में कही जा सकती है। हिन्दू धर्म के बारे में अखाड़े कैसे अस्तित्व में आए, इस पर हम पहले ही बात कर चुके हैं।

वर्तमान समय में उनसे कोई अलग नहीं है। चाहे हम लोकतंत्र की बात कितनी ही दुहाई क्यों न दें, लेकिन सच्चाई तो यही है कि हम एक वर्गीय समाज में रह रहे हैं। जहां मौजूदा शासक वर्ग अपने हितों की पूर्ति के लिए किसी भी हद तक जाने के लिए तैयार रहता है। विचारों पर प्रतिबंध लगाने को भी हमें इसी से देखना होगा।

वैंडी डोनिगर की पुस्तक की प्रस्तावना में क्या लिखा है, जरा देखते हैं-यह पुस्तक उन लोगों की कहानी बताती है, जिन्हें उच्च जातीय हिन्दू पुरुष समाज ने सदा अन्य समझा, चाहे वह धर्म के आधार पर हो, संस्कृति के आधार पर हो या फिर जाति, लिंग और प्रजाति के आधार पर हो। इस वैकल्पिक इतिहास को लिखने के पीछे मेरा एकमात्र उद्देश्य यह बताना है कि इन अन्य

लोगों (उत्पीड़ित जातियां, अछूत और महिलाएं), जिन्हें हमेशा उत्पीड़ित किया गया और चुप करवा दिया गया और जिनके बारे में आमतौर पर यह समझा जाता है कि उन्होंने परम्पराओं के विकास में कोई योगदान नहीं दिया, वास्तव में हिन्दूवाद के विकास में कितना योगदान दिया है।

वैंडी डोनिगर के विचारों से जरूरी नहीं कि सभी सहमत हों, लेकिन विचारों के खिलाफ संघर्ष विचार देने वालों पर दमन करके या विचारों को प्रतिबंधित करने के द्वारा नहीं लड़ा जाना चाहिए। विचारों के क्षेत्र में संघर्ष वैचारिक तौर पर ही होना चाहिए। जो लोग वैंडी डोनिगर के विचारों से सहमत नहीं हैं, वे वैंडी की पुस्तक के खिलाफ पुस्तक लिख सकते हैं, उसकी पुस्तक पर चर्चाएं करते हुए उसकी वैचारिक तौर पर भर्त्सना कर सकते हैं, लेकिन शासक वर्गों को इस लोकतांत्रिक पद्धति पर चलना पसंद नहीं है। नए विचारों पर प्रतिबंध लगाने के इस प्रकार के कदम असल में समाज के अलोकतांत्रिक होने, असहिष्णु होने और उसके फासीवादी होने की दिशा में कदम हैं

पिछले दो दशकों से खासतौर पर हमारे देश में विचारों को दबाने की जिस प्रकार कोशिश की जाती रही है, वह बेहद चिंतनीय विषय है। एमएफ हुसैन की पेंटिंग्स और अनेक लेखकों की पुस्तकों के खिलाफ जिस प्रकार मुहिम चलाई गई उस पर हम चर्चा पहले ही कर चुके हैं। उदाहरण मात्र किताबों तक सीमित नहीं है, बल्कि अनेक फिल्मकारों को भी इस प्रकार के गैर संवैधानिक और गैर कानूनी तौर तरीकों से उत्पीड़ित होना पड़ा है। फिल्म फायर के खिलाफ प्रदर्शन फिर फिल्म वाटर के सेट पर तोड़-फोड़ इसी प्रकार के उदाहरण हैं चंद लोग खुद को व्यापक हिन्दू समाज के ठेकेदार के तौर पर पेश करते हैं। अपनी इच्छाओं को थोपने की कोशिश करते हैं। असल में यह संस्कृति के क्षेत्र में बढ़ती असहनशीलता है जो अपने विरोधियों को जरा सा भी सहन नहीं कर पाती। यह इन लोगों के भीतर की असुरक्षा की भावनाको भी अभिव्यक्त करती है, क्योंकि अंदर से डरा हुआ आदमी और संगठन जब अपने विरोधियों का मुकाबला विचारों से नहीं कर पाते, तो वे इस प्रकार भावनाओं को ठेस पहुंचाने जैसे जुमलों का सहारा लेते हैं और देश में मौजूद अंधविश्वासी और धर्मभीरू जनता और साथ ही साथ राजनीतिक और सामाजिक तौर पर उदासीन समाज के चलते जोर जबरदस्ती करते हैं और दमनकारी राजसत्ता की प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष मदद के साथ उन्हें इस प्रकार के कामों में सफलता हासिल हो जाती है।

वैडी डोनिगर की पुस्तक को हालांकि प्रतिबंधित नहीं किया गया है, लेकिन जिस प्रकार पेंगुइन प्रकाशन ने कट्टरपंथियों के साथ अदालत के बाहर समझौता किया है, वह निश्चित तौर पर निंदनीय है। कट्टरपंथियों की यह सफलता असल में देश के फासीवाद और घोर दक्षिण पंथ की बढ़ने का एक लक्षण है, जिसकी सभी प्रगतिशील ताकतों द्वारा निंदा की जानी चाहिए। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता एक मौलिक अधिकार है और इस अधिकार की रक्षा हर हालत में होनी चाहिए। साथ ही उन तमाम ताकतों का पुरजोर विरोध किया जाना चाहिए, जो अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के खिलाफ खड़ी हैं।

'अभियान' से साभार

अंधेरे में रोशनी

डा. रणजीत की तीन किताबें

-कश्मीर उप्पल

यह एक सुखद आश्चर्य है कि देश के समय और परिस्थिति के अनुकूल एक साथ तीन पुस्तकें देश के सम्मुख आई हैं। वास्तव में इन तीनों पुस्तकों में देश के वर्तमान को देश का संबोधन है। यह संबोधन इतना सामयिक है कि मानो देश के इतिहास पुरुष देश को उसका सही मार्गदर्शन के लिए एक साथ उठ खड़े हुए हों।

धर्म और बर्बरता, साम्प्रदायिकता का जहर, जाति का जंजाल- इन तीनों पुस्तकों के सम्पादक डा. रणजीत हैं। इन तीनों पुस्तकों को मानवीय समाज प्रकाशन की ओर से लोक भारती, इलाहाबाद द्वारा वितरित एवं प्रकाशित किया गया है।

धर्म और बर्बरता पुस्तक में 16 लेखकों के कालजयी विचारों को सम्मिलित किया गया है। राधामोहन गोकुल का लेख है जो चंद्रशेखर आजाद और भगत सिंह जैसे क्रांतिकारियों के सैद्धांतिक गुरु तथा भारत में साम्यवादी दल की स्थापना करने वाले क्रांतिकारियों में से एक थे। वे कई ऐतिहासिक और शास्त्रीय उदाहरण देकर तर्कसंगत तरीके से अपनी बात सांझा करते हैं।

हिन्दी के प्रतिष्ठित साहित्यकार आचार्य चतुरसेन शास्त्री की प्रसिद्ध पुस्तक 'धर्म के नाम पर' का एक अध्याय 'धर्म और व्यभिचार' शीर्षक से एक उल्लेखनीय लेख के रूप में प्रस्तुत है। आचार्य चतुरसेन शास्त्री विश्व की अनेक सभ्यताओं में धर्म के नाम पर होने वाले भोग के काले इतिहास से हमें अवगत कराते हैं।

इसी तरह पंडित राहुल सांस्कृत्यायन, भगत सिंह, पंकज बिष्ट, तसलीमा नसरीन, मैत्रेयी पुष्पा, कात्यायनी आदि के लेख अपने समय से मुठभेंट करते हैं। जन आंदोलनों के राष्ट्रीय समन्वय के देश बचाओ, देश बनाओ नामक प्रकाशित पुस्तिका का संशोधित रूप उल्लेखनीय है।

दूसरी पुस्तक **जाति का जंजाल** में 27 महत्वपूर्ण लेखकों के आलेख हैं अनेक महत्वपूर्ण लेख अंग्रेजी से भी अनुवादित कर पुस्तक में सम्मिलित किए गए हैं। इनमें हमारे देश के ऐतिहासिक दस्तावेज के रूप माने गए कई महत्वपूर्ण उद्बोधन भी सम्मिलित हैं।

इस पुस्तक में एक साथ अम्बेडकर, राम मनोहर लोहिया, सच्चिदानंद सिन्हा, संत राम, डी.आर. नागराज, योगेन्द्र यादव, रजनी कोठारी, धीरूभाई सेठ, रामशरण जोशी और विनोद शाही आदि अनेक महत्वपूर्ण विचारकों को पढ़ना अभूतपूर्व संयोग और अनुभव है।

लाहौर में 1936 में आयोजित जाति-पाति तोड़क मंडल के अधिवेशन की अध्यक्षता के लिए डा. भीमराव अम्बेडकर को आमंत्रित किया गया था। उन्होंने अपना अध्यक्षीय भाषण पहले ही भेजा था, जिसकी कुछ बातों पर आयोजकों को आपत्ति हुई और डा. अम्बेडकर को बुलाना रद्द हो गया। लेकिन यह अनपढ़ा भाषण जाति का उन्मूलन डा. अम्बेडकर की बुनियादी अवधारणा को स्पष्ट करता हुआ ऐतिहासिक लेख बन गया। इसे शामिल करने से यह पुस्तक महत्वपूर्ण बन गई है। इसकी चिंता

का विषय कोई जाति नहीं वरन् सम्पूर्ण मानवता है। डा. अम्बेडकर समाज-विज्ञान को उस पृष्ठभूमि का उल्लेख करते हैं जिसमें कोई एक जाति विशेष नहीं, सम्पूर्ण समाज के सुधार की आवश्यकता है। डा. अम्बेडकर समाज सुधार को भी दो अर्थ में व्यक्त करते हैं। एक पारिवारिक सुधार और दूसरा समाज का पुनर्गठन। डा. भीमराव अम्बेडकर क्यों भीमराव अम्बेडकर हैं? उनका यह उद्‌बोधन पढ़कर समझ में आता है।

डा. अम्बेडकर अपने भाषण में कहते हैं कि धर्म, सामाजिक स्थिति और सम्पति ये तीनों प्रभुता के स्त्रोत हैं। आज के यूरोपीय समाज में सम्पति की प्रमुखता है, किन्तु भारत में धर्म और सामाजिक व्यवस्था का सुधार किए बिना आप आर्थिक सुधार नहीं कर सकते।

सच्चिदानंद सिन्हा स्पष्ट कहते हैं कि जाति विभाजन, धार्मिक विभाजन और वर्ग विभाजन से कहीं गहरा होता है। विडंबना यह है कि वर्गीय अनुभूति, जो ठोस आर्थिक आधार पर खड़ी होती है और इस वजह से आदमी की वर्गीय स्थिति सतत् परिवर्तनशील रहती है।

डा. रणजीत के सम्पादन में प्रकाशित तीसरी पुस्तक **साम्प्रदायिकता का जहर** है। एक तरह से यह पुस्तक हमारे देश में साम्प्रदायिकता के इतिहास पर केंद्रित है। इस पुस्तक में अंग्रेजों के आने के बाद साम्प्रदायिकता की राजनीति का खुलासा होता है। 1857 में हिन्दुओं और मुसलमानों ने मिलकर अंग्रेजी सत्ता का विरोध किया था। इसके बाद अंग्रेजों की रणनीति हिन्दुओं और मुसलमानों की सभ्यता और संस्कृति को कई आधारों पर अलग दिखाने की रही है। भारत का 1947 का विभाजन साम्प्रदायिक राजनीति की परिणति था, जिसकी शुरूआत बंगभंग से हुई थी।

इस पुस्तक में महात्मा गांधी, जवाहर लाल नेहरू, मौलाना अबुल कलाम आजाद, आचार्य नरेन्द्र देव, जय प्रकाश नारायण, डा.भीम राव अंबेडकर, डा. राममनोहर लोहिया, किशन पटनायक, प्रेम चंद, गणेश शंकर विद्यार्थी, कमलेश्वर, पुरुषोतम अग्रवाल, मधु किश्वर, डा. राम पुनियानी आदि के लेख हैं। इस सूची से ही स्पष्ट हो जाता है कि पुस्तक में सांप्रदायिकता की दोनों स्थितियों -1947 के पूर्व एवं पश्चात् की जांच-पड़ताल की गई है।

इस पुस्तक में महात्मा गांधी कहते हैं कि जैसे मुसलमान मूर्ति का खंडन करने वाले हैं, वैसे हिन्दुओं में भी मूर्ति का खंडन करने वाला एक वर्ग देखने में आता है। गांधी जी के तर्कसंगत चिंतन की आज के नए संदर्भो में समझने की जरूरत पहले से कहीं अधिक है।

मौलाना अबुल कलाम आजाद की सोच आज भी सामयिक है। अबुल कलाम आजाद कहते हैं कि यदि हममें से कोई ऐसा हिन्दू है जो हजार वर्ष और उससे पहले की हिन्दू जीवन पद्धति को वापिस लाना चाहता है तो वह केवल स्वप्न लोक में विचरण कर रहा है। इसी प्रकार यदि हममें से कोई मुसलमान अपनी उस अतीतकालीन सभ्यता और संस्कृति का पुनरूत्थान करना चाहता है जिसे मुसलमान एक हजार वर्ष पूर्व ईरान और मध्य एशिया से लाए थे तो वह भी स्वप्नलोक में विचरण करता है और जितनी जल्दी वह जाग जाए उतना ही अच्छा है।

साम्प्रदायिकता का जहर पुस्तक कई चिंतकों के ऐसे विचारों से भरी पड़ी हैं जिन पर से चिंतन मनन नहीं हुआ है। इतिहास की राख

के ढेर में आज भी वे प्रश्न ज्वलंत रूप से ढके पड़े हुए हैं जो आज भी हमसे हमारा उत्तर पाने को खड़े हुए हैं।

आचार्य नरेन्द्र देव ने उसी समय देख लिया था कि धर्म के नाम पर खड़ी संस्थाएं सामंतों, राजाओं, जमींदारों और शहर के कुछ अनुदार मध्यम श्रेणी के लोगों की संस्थाएं रही हैं। ये संस्थाएं धर्म के नाम पर अपने वर्ग का स्वार्थ साधन करने, सरकारी नौकरियों और असेंबली में सीटें आदि प्राप्त करने के काम में लाई जाती रही हैं।

इस तरह डा. रणजीत द्वारा सम्पादित ये तीनों पुस्तकें हमारे वर्तमान को हमारे अतीत के आइने में देखने का एक प्रयास है। ये प्रश्न ही नहीं उठाती हैं वरन् आगे बढ़कर हमारा पथ प्रदर्शन भी करती हैं। आगामी चुनावों और एक नई राजनीति के विस्फोटक परिणामों के पूर्व ये पुस्तकें आंखों पर बंधी पट्टियों को खोलती हैं, ताकि अंधेरे समय में छलांग लगाने के पूर्व हम एक रोशनी से साक्षात्कार कर सकें।

हमारा यह दुर्भाग्य है कि जो सांप्रदायिक दंगे पहले शहरों तक सीमित थे, वे अब गांवों में होने लगे हैं। उत्तर प्रदेश से उठ रहे सवालों के अंधेरे समय में इन पुस्तकों की रोशनी एक नया मार्ग दिखाती है। इन विचारों को जन-जन तक पहुंचाना भी सांप्रदायिकता के विरुद्ध लड़ाई में शामिल होना है।

पुस्तकें प्राप्ति स्थलः

लोक भारत पुस्तक विक्रेता तथा वितरकः
15-ए, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहबाद-1
डॉ. रणजीत, फ्लेट नं. 201, मल्टी सफायर अपार्टमेंट, पहली मेनरोड, सुद्दागुंटे माल्या, बैंगलूर-560029 मो0 9341556673

★★

गज़ल

अंधों को मिल जाते हैं
यहां हजारों अंधे,
जिंदे को एक कंधा नहीं,
मुर्दे को चारकंधे।

हवाएं खो गई है आसमान में यारो,
उड़े तो कैसे उड़ें बताओ मासूम परिन्दे।

उजड़ा हुआ शहर और खंडहर हवेलियां,
भूतों का हुआ डेरा प्रेत यहां वाशिन्दे।

शोच जाना हुआ मश्किल बेटियों का,
पेड़ों पर टांग देते आबरू हवशी दरिन्दे

सेठों की रखैल हुई राजनीति, सत्ता,
छन गए रोजगार उद्योग धंधे।

रौशनी से गुलजार कब्रें यहां 'अमर'
मयस्र नहीं एक चिराग मेरे घर बन्दे।

-डा. अमर सिंह
09359717890

''जहां ज्ञान का प्रारम्भ होता है, वहां धर्म का अन्त होता है।''

- उल्ग बेग (1393-1449 ई0)

आईना

एक था दूरदर्शन

–बलजीत भारती

नई पीढ़ी ने तो शायद यह शब्द सुना भी न होगा। लेकिन एक समय था जब इस शब्द में इतनी कशिश थी कि क्या कहूं? मैं दूरर्शन की बात कर रहा हूं। उस जमाने में दूरर्शन टी.वी. पर प्रसारित होने वाला एकमात्र चैनल था। उन दिनों में जब टी.वी. ब्लैक एण्ड व्हाइट हा था और नया-नया आया था तो उसे देखने की इतनी लालसा होती थी कि लोगों के हुजूम इकट्ठे हो जाते थे । दूरदर्शन पर पहले-पहल समाचार व खेती-बाड़ी से संबंधित कार्यक्रम ही दिखाए जाते थे। इसके बाद रविवार की शाम को फिल्म दिखाई जाने लगी और बुधवार व शुक्रवार को फिल्मी गीतों पार आधारित 'चित्रहार' दिखाया जाने लगा। शहरों में भी उस वक्त टी.वी. सैटों की संख्या काफी कम थी। गॉवों में यह संख्या न के बराबर थी। हरियाणा के ज्यादातर लोगों ने टी.वी. सैट पहली बार तब देखा जब सरकार ने पंचायत के माध्यम से टी.वी. सैट गांवों में भेजे। मुझे याद है कि किस तरह लोग चित्रहार वह फिल्म देखने के लिए उमड़े पड़ते थे। पूरो का पूरा मोहल्ला औरतों व बच्चों सहित वहां मौजूद होता था। भाइचारे की क्या शानदार मिसाल थी। इन्हीं दिनों दूरदर्शन पर 'हम लोग', 'बुनियाद' 'मालगुड़ी डेज़' व 'तमस' जैसे धारावाहिक दिखसए गए। ये धारावाहिक आज भी दूरदर्शन के इतिहास में मील के पत्थर हैं।

फिर रामानन्द सागर और बी.आर. चौपड़ा क्रमशः 'रामायाण' और 'महाभारत' लेकर आए। अब तक टी.वी. रंगीन हो चुका था। 'रामायाण' और 'महाभारत' देखने का लोगों ने इतना जुनून था कि इनके प्रसारण के दौरान सड़कों व बाज़ारों में मानो कर्फ्यू सा लग जाता था । जितने टी.वी.सैट उस दौरान बिके उतने टी.वी. सैट उसके बार से आज तक शायद नहीं बिके होंगे।

फिर महिलाओं को ध्यान में रखकर दोपहर में धारावाहिकों के प्रसारण की शुरुआत हुई। इस कड़ी में सबसे पहले आया 'शांति'- आपको याद होगा। धीरे-धीरे केबल टी.वी. की शरुआत हुई । आज लोगों को केवल टी.वी. के माध्यम से अपने घरों में सैंकड़ों चैनल उपलब्ध हैं। विभिन्न चैनलों द्वारा विभिन्न प्रकार के कार्याक्रम परोसे जा रहे हैं । लेकिन दूरदर्शन का वह जायका कहां है? फूहड़ता का स्तर दिनों-दिन बढ़ रहा है। दर्जनों चैनल अंधविश्वास और पाखंड परोस रहे है। सास-बहू की साजिशों से परिपूण 'धारावाहिकों की भरमार है। इन सभी चैनलों पर प्रसारित तमाम धारावाहिकों को मिलाकर भी एक 'बुनियाद' नहीं बनाया जा सकता । आज के तमाम तरह के फिल्मी कार्यक्रमों से अकेला 'चित्रहार् कहीं बेहतर होता था।

सचमुच, इस भीड़-भाड़ और धक्का-मुक्की के जमाने में शांत, सुशील और मधुर दूरदर्शन की बहुत याद आती है।

★★

हरियाणवी रागिनी

हाथ घुमा भभूत काढ़ दें

हाथ घुमा भभूत काढ़ दें खुद भगवान बणे बैठे
मानवता के ठेकेदार अड़े, अब शैतान बणे बैठे।

अनपढ़ता का फैदा ठा रे, भय के भूत बणा रखे,
सीख टोटके साईस के कुछ, जादू नाम धरा रखे,
उल्टी–सीधी, सीख बाड़ कै, बौले लोग भका रखे,
देई कमेरे की अक्ल मार यें, ऐसे जाल बिछा रखे,
हाथ जोड़ हम थर–थर काम्बैं, मूढ़ इन्सान बणे बैठे।

बाबे खूबे ऐश करैं सें, कोठी, बंगले, कारों म्हं,
टी.वी., ए.एसी. कूलर लगे, मठ और ठाकुरद्वारों म्हं,
कुछ मौनी का ढौंग रचाते, लूटते हमें इशारों म्हं,
बिन समझ हम तो टोट्टे के, निगाहबान बणे बैठे।

मंत्र, झाड़ा दें तबीज ये, सब काट धरैं बीमारी,
मंत्र, जिन्न, चुड़ैल भगा रे, फीसां न्यारी–न्यारी,
कई दुकानें खोल बैठ गे, ले स्याणे टीका धारी,
इन आर्यां म्हं सींग तुड़ा, तनै सारी उम्र गुजारी,
तू कंगाल, खस्ता हाल तेरा, वो धनवान बणे बैठे।

पाप–पुण्य, लाख चौरासी, तैयार नया एक जाल कर्या
अगले जन्म की सोच तनै, खुद का माड़ा हाल कर्या,
कपड़े लीरम–लीर तेरे तनै, नहीं कदे भी ख्याल करया,
तेरी नासमझी नै 'रामेश्वर', तू लूट कै कंगाल कर्या,
कूड़ा भर लिया माथे के म्हं, हम कूड़ेदान बणे बैठे।

रामेश्वर दास 'गुप्त', 94162-20513

सलाम रेहाना ...

अंतरराष्ट्रीय प्रयत्नों को दर किनार करते हुए आखिर ईरान ने 26 वर्षीय रेहाना जैंबारी को फांसी पर लटका दिया। इस महिला का कसुर था कि इसने अपने साथ बलात्कार का प्रयास करने वाले एक खुफिया अधिकारी पर आत्म रक्षा में चाकु से वार कर दिया जिस से उस की मौत हो गई। सात साल की जेल के उपरांत 25 अक्टुबर को 2014 को उन्हें फांसी पर लटका दिया, इस बहादुर महिला के अपनी मां को लिखे आखरी खत के कुछ अंश :-

"मेरी प्यारी मां, मैं अपनी मौत से पहले कुछ कहना चाहती हूँ, मौत जीवन का अंत नहीं हैं, मैं मिट्टी के अन्दर गलना नहीं चाहती, मैं अपनी जवान आंखें और दिल मिट्टी नहीं बनने देना चाहती, इस लिए मैं बेनती करती हूँ कि फांसी के बाद मेरे दिल, गुर्दे, आंखे और वो सारा कुछ जो ट्रांसपलांट हो सकता उसे जरूरतमंदों को दे दिया जाए। मैं चाहती हूँ कि जिन्हें मेरे अंग लगाए जांए उन्हें मेरा नाम न बताया जाए।"

लेखकों/पाठकों के लिए:–

1. रचना की मूल प्रति ही भेजें, फोटो प्रति स्वीकार्य नहीं होगी।
2. रचना बार्यी तरफ हाशिया छोड़कर अशुद्धियों रहित साफ–साफ लिखी या टाईप होनी चाहिए ।
3. रचना सोसायटी के उद्देश्यों के अनुरूप होनी चाहिए।
4. लेख, कहानी, कविता, अपनी राय e-mail : tarksheeleditor@gmail.com आदि पर भेजी जा सकती है। ई–मेल भेजते समय SG-4 हिन्दी टाईप का ही उपयोग करें।
5. अनुवादित रचना के साथ मूल लेखक का अनापत्ति पत्र भी संलग्न करें।

सूचना

तर्कशील सोसायटी हरियाणा की आगामी द्विमासिक बैठक कुरुक्षेत्र जाट धर्मशाला में दिनांक 11 जनवरी 2015, दिन रविवार को प्रात: 10 बजे से 2 बजे तक होगी।

नोट: तिथि, स्थान व समय के बारे में सभी साथी फोन संपर्क करके सुनिश्चित कर लें, क्योंकि परिस्थिति वश इसमें बदलाव हो सकता है।

संपर्क सूत्र : बलवंत सिंह (प्रा)–9416324802, बलजीत सिंह: 8295051400

Reg. No. HARHIN05683/07/1/2013-TC वर्ष 1, अंक 6 नवम्बर 2014

त्योहारों के कर्मकांडों की बजाए नई राहें

चंडीगढ़ जोन के खरड कस्बे में तर्कशील साहित्य प्रदर्शनी

फाजिल्का जोन के मुक्तसर कस्बे में तर्कशील साहित्य प्रदर्शनी

तर्कशील साहित्य वैन का सफर

जालन्धर जोन के विभिन्न स्थानों पर तर्कशील कार्यक्रमों की झलक

If undelivered please return to :

Tarksheel
Tarksheel Bhawan, Tarksheel Chowk,
Sanghera Bye Pass, BARNALA-148101
Post Box No. 55
Ph. 01679-241466, Cell. 98769 53561
Web : www.tarksheel.org
e-mail : tarkshiloffice@gmail.com

BOOK POST
(Printed Matter)

To ....

....

....

आर. पी. गांधी प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी, संपादक मकान न. 50, लक्ष्मी नगर, जिला यमुना नगर - 135001 (हरियाणा) द्वारा रमणीक प्रिंटरज, नजदीक लक्ष्मी सिनेमा, जिला यमुनानगर -135001 (हरियाणा) से मुद्रित करके तर्कशील सोसायटी पंजाब व हरियाणा के माध्यम से वितरण हेतु जारी किया।